आज से लगभग पचास वर्ष पहले प्रख्यात चेक लेखक कार्ल चैपेक ने अपने प्रसिद्ध नाटक 'आर० यू० आर०' मे जिस मशीनी दुनिया को अपनी कल्पना की निगाह से देखा था वह सच बनकर हमारे सामने आ रही है। आज मशीनी कम्प्यूटर की मदद से मानव चाद पर कदम रख रहा है। यन्त्र मानव रोबो अनुवाद कर सकते हैं और कविता भी। इन मशीनो मे और इसानी दिमाग मे बहुत कम अन्तर रह गया है। 'दूसरा पुरुष दूसरी नारी' उपन्यास कार्ल चैपेक के मशहूर नाटक पर आधारित है और सौ वर्ष बाद आने वाले जीवन की कल्पना करता है।

(उपन्यास की भूमिका से)

# दूसरा पुरुष दूसरी नारी

कृश्न चन्दर

# दूसरा पुरुष दूसरी नारी

पहला संस्करण 1970, © कृश्न चन्दर

रूपाभ प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली, में मुद्रित

DOOSARA PURUSH DOOSARI NARI (Novel) by Krishan Chandar

## दो शब्द

आज से लगभग पचास वर्ष पहले प्रख्यात चेक लेखक काल चैपेक ने अपने प्रसिद्ध ड्रामे 'आर०यू०आर०' में जिस मशीनी दुनिया को अपनी कल्पना की निगाह से देखा था वो आज सच बनकर हमारे सामने आ रही है। आज मास्को के बाज़ारों में मशीनी सिपाही पहरा देते हैं। मशीनी कम्प्यूटर की मदद से मानव चाँद पर कदम रख रहा है। ऐसे 'रोबो' बनाए जा चुके हैं जो अनुवाद कर सकते हैं और कविता भी। अब इन मशीनों में और इन्सानी दिमाग में बहुत कम अन्तर रह गया है। 'दूसरा पुरुष दूसरी नारी' उपन्यास काल चपेक के मशहूर ड्रामे पर आधारित है और सौ वर्ष बाद आने वाले जीवन की कल्पना करता है।

— कृश्न चन्दर

# दूसरा पुरुष दूसरी नारी

सन् १९९५ तक चाद पर इसान ने बहुत-सी बस्तिया बना डाली थी। यह बस्तियां उन ज्वालामुखी पवता की चोटियो के गडढा मे तैयार की गई थी जिनमे अब लावा निकलना बद हो चुका था। हर चोटी के ऊपर, चद्रमा पर होनेवाले उल्कापात से बचने के लिए न टूटनेवाले काच या प्लास्टिक का गुबज खडा किया गया था। इस गुबज की लबाई, चौडाई और ऊचाई ज्वालामुखी पवत की चोटी के अनुपात से तैयार की जाती थी। क्रेटर इरमास का व्यास छह मील का था, और इस गुबज के अदर छह हजार इसान रहते थे। इस गुबज के अदर भीतरी चट्टाना को दबाकर उनसे जल प्राप्त किया गया था, तथा कृत्रिम वायुमडल तयार किया गया था, जिसमे इसान सास ले सकते थे। गदी हवा बाहर निकालने का भी इतजाम था। इस गुबज के नीचे बिल्डिगें थी और पेड जिनके पत्तो पर प्लास्टिक के गिलाफ चढा दिए गए थे। पाक, सिनेमा, स्कूल, कालेज बना दिए गए थे और खानें खोद ली गई थी। खाना से बेशुमार सोना-चादी और हीरे-जवाहरात और दूसरी धातुए निकालकर धरती को भेजी जाती थी। इन गुबजा से बाहर निकलना अब भी खतरे से खाली न था, क्योकि चद्रतल

के चारो ओर धरती के समान वायुमडल बनाने के सारे प्रयत्न विफल हो चुके थे।

फिर भी चद्रमा पर मनुष्यो की आबादी तेजी से बढ रही थी, क्योंकि चाद के अदर चट्टानो के नीचे बेशुमार बहुमूल्य धातुओ की खानें खोज निकाली गई थी जिन्हें बडे बड राकेटो द्वारा पृथ्वी तक पहुचाया जाता था। कभी-कभी कोई दुघटना भी हो जाती थी। कोई राकेट किसी गिरती हुई उल्का से टकराकर चर चर हो जाता। किंतु ऐसी दुघटनाए कम ही होती थी।

फ्रेटरो पर जो प्लास्टिक के गुबज बनाए गए थे, वह इस कदर मजबूत थे, कि चद्रतल पर रात दिन होनेवाले सामान्य उल्कापात से उस प्लास्टिक को कोई क्षति नही पहुचती थी और अगर कभी कोई बडा उल्कापात होता और मजबूत प्लास्टिक को तोडने म सफल हो जाता, तो फौरन इसके नीचे का तहदार प्लास्टिक का टुकडा स्वचालित यत्रो द्वारा फैलता हुआ क्षण-भर मे इस दरार को ढक देता। इसानी आबादी की सुरक्षा के लिए हर गुबज सात पर्तों का तैयार किया जाता था, ताकि अगर एक पत टूटे तो दूसरी पत फौरन उसकी जगह ले ले और इसलिए भी कि गुबज के भीतर का वायुमडल शून्य म बिखरकर इसानी बस्ती के लिए खतरा न पदा कर दे।

लेकिन सन् २२४० म १६ अगस्त के दिन अचानक मरखन नामक पुच्छल तारे से इतनी बडी बडी उल्काए टूट टूटकर चद्रतल पर गिरी कि जिन्होने न केवल फ्रेटर डरमास के गुबज को तोड डाला बल्कि दूसरे सैकडो गुबजो को तहस-नहस कर डाला। अचानक एक दिन म एक ही दुघटना मे चद्रमा पर गुबजो के नीचे कृत्रिम वायुमडल मे रहने वाली दो तिहाई इसानी आबादी नष्ट हो गई। केवल कुछ हजार लोग बचे, जो खानो के अदर आक्सीजन के नकाब पहने हुए काम कर रहे थे। बडी मुश्किल से उन्हे हवाई राकेटो द्वारा चद्रमा की सतह से बचाकर वापस धरती पर

लाया गया। फिर अगले बीस वर्ष तक किसी इंसान की चंद्रमा पर जाने की हिम्मत न हुई।

मगर चंद्रमा के भीतर बहुमूल्य धातुओं की खानों की लालच बार-बार मानवी आकांक्षा को उकसाता था। सन् २२६२ में तीन वैज्ञानिक प्रोफेसर जावेद मलिक आदि नकली इंसान बनाने में सफल हो गए। इससे पहले विभिन्न धातुओं की सहायता से तरह तरह के कम्प्यूटर और रोबो बनाए जा चुके थे, जो मनुष्य के बहुत से काम कर सकते थे, लेकिन इन मशीनों की निर्माण-क्षमता बहुत कम थी, इनका आकार भी बहुत बड़ा था और इनकी तैयारी में लाखों रुपये खर्च होते थे।

प्रोफेसर घोष, प्रोफेसर पाटिल तथा प्रोफेसर जावेद मलिक ने एक ऐसा नकली इंसान तैयार किया जिसपर केवल बीस हजार रुपये लागत आती थी। इनके आविष्कार की धूम सारी दुनिया में मच गई। इस वक्त तक धरती पर एक संघीय सरकार कायम हो चुकी थी, जो विभिन्न देशों और राष्ट्रों को एक नई व्यवस्था में बांधती थी। इस सरकार की राजधानी तेहरान में थी, इस सरकार का अध्यक्ष कीनिया का प्रसिद्ध वैज्ञानिक और रसायन विद्या पर असाधारण अधिकार रखनेवाला जारेत बनियान वोडामा था। वोडामा के हुक्म से अमरीका के प्रख्यात प्रोफेसर जेक यगसाइड और नार्वे से प्रोफेसर हायडिन और इंडोचाइना के प्रोफेसर ओपी माह को प्रोफेसर घोष, पाटिल और जावेद मलिक के साथ नकली इंसान पर काम करने की अनुमति दे दी गई। भारत सरकार के आदेश से, अंडमान द्वीप पर, धरती के नीचे मीलों तक अंदर फैले हुए एक विशाल तहखाने में नकली इंसानों की फैक्टरी बनाने का इंतजाम किया गया। इन वैज्ञानिकों की कोशिशों से न सिर्फ बेहतर किस्म के नकली इंसान तैयार होने लगे बल्कि इनकी लागत में भी कमी हुई। अब केवल सात हजार रुपये में एक ऐसा नकली इंसान तैयार कर लिया गया था जो बीस वर्ष तक एक कारखाने

मे बिना खाए पिए और किसी तरह का वेतन लिए काम कर सकता था।

नकली मनुष्य के आविष्कार से कुछ वर्षों मे सारे विश्व मे एक नई औद्योगिक क्रांति आ गई, जिसने कम्प्यूटर, गेवा और असली इसानी मजदूरा के महत्त्व को बडे बडे कारखानो के लिए बहुत कम कर दिया था। बडे-बडे कारखाने वाला ने असली इसानो को, जो ट्रेड यूनियन बनाते थे और हडतालें करत थे और दगा फसाद करते थे, नौकर न रखकर इनकी जगह अडमान की फैक्टरी को नकली इसान बना कर देने के आडर देने शुरू कर दिए, जिससे नाफ फैक्टरी (नकली इसान फैक्टरी) के लाभ में हर साल दस अरब का मुनाफा होने लगा और दुनिया के चारा कोनो से लोग दूर दूर से इस फैक्टरी को देखने के लिए आने लगे। मगर फैक्टरी के दरवाज़े हर ऐरे-गैर के लिए नही खुलते थे। बहुत ही सम्मानित लोगा को, और वह भी विश्व सरकार के अध्यक्ष और भारत सरकार के विशेष सिफारिश से फैक्टरी के कुछ विभाग दिखाए जाते थे। मगर फैक्टरी का वह भाग जहा नकली इमान तयार होते थे, किसी को न दिखाया जाता था और नकली इसान बनाने का फार्मूला भी बिल्कुल सबसे अलग छिपाकर एक बडे सेफ म रख दिया गया था, जिसका ताला प्रोफेसर अजयकुमार घोष के सिवा और कोई न खोल सकता था।

अब चद्रमा पर भी असली इसाना की जगह नकली इसा भेजे जाने लगे। और सही अर्थों में अब चाद धरती के रहनेवाला का उपनिवेश बन गया। हजारा नई खानें खोज निकाली गइ, जिनमे नकली इमान काम करने लगे। दिन प्रतिदिन चाद पर इसानी आबादी बढने लगी और सन् २२६० मे चाद पर नकली इसाना की आबादी बढत बढते सत्रह लाख तक जा पहुची। इन नकली इसाना को न भोजन की आवश्यकता थी, न किसी वायुमडल की, न आक्सीजन की, न किसी आकाक्षा की। यद्यपि यह नकली व्यक्ति दिन मे बारह घण्टे काम करने के पश्चात् बेकार हो जात थे और

उन्हे कुछ घण्टे आराम करने दिया जाता था, ताकि उनके अदर की मशीनरी जो लगातार बारह घण्टे काम करने से गम हो जाती थी फिर से ठडी हो जाए। चाद पर ही नकली इसानो की मरम्मत करने की फैक्टरिया और गैरेज खोल दिए गए थे, और खयाल था, कि चाद की तह मे जाकर चाद का कोई ऐसा कोना न बचेगा, जहा नकली इसान काम करते हुए न मिलेंगे।

सन् २२६६ ई० मे इक्कीस अप्रैल के दिन धरती के माननीय अध्यक्ष वोडामा की लडकी सीमा सोलह वष की हो गई, और इस शुभ अवसर पर इसके पिता ने अपनी लडकी से पूछा, कि वह इस दिन के लिए कौन-सा उपहार पसद करेगी।

सीमा ने जवाब दिया, "मैं नकली इसानो की फैक्टरी को देखना चाहती हू।"

वोडामा ने उसी वक्त एक बटन दबाकर अपन निजी सटेलाइट द्वारा भारत सरकार से बात की। भारत सरकार ने प्रोफेसर अजयकुमार घोप से सिफारिश की, कुछ मिनटो मे सीमा के लिए फैक्टरी देखने की स्वीकृति आ गई और उसी दिन माननीय अध्यक्ष वोडामा के निजी राकेट पर बैठकर सीमा तीसरे पहर अडमान द्वीप मे फैक्टरी देखने के लिए पहुच गई।

तहखाने के दरवाज़े पर गाड ने सीमा का प्रवेश पत्र चेक किया। फिर अदर टेलीफोन किया। टेलीफोन से स्वीकृति का जवाब आन पर सीमा के लिए तहखाने की फैक्टरी के दरवाज़े खोल दिए गए और सीमा एक लबे बरामदे मे दाखिल हो गई।

## २

बरामदे से निकलकर सीमा एक विशाल पाक मे पहुच गई। ऊची स्फटिक छत से दजनो झाड लटक रहे थे। यह पाक एक प्रकार का काच घर था, जिसके अदर एक बडा वाग लगाया गया था और धरती की सतह के ऊपर जो फल-फूल, पेड और सब्जिया उगती हैं, वह यहा पर कृत्रिम जल वायु से उगाई जाती थी।

पाक के लौह द्वार पर गाड न सलामी देते हुए सीमा को एक नौजवान के सुपुर्द किया, *वह रूप रग से अत्यत सुदर और चेहरे से बडा प्रभावशाली* मालूम होता था।

उसने सीमा की तरफ हाथ वढाके उससे हाथ मिलाते हुए एक जग-मगाती हुई मुस्कराहट से कहा, "मेरा नाम नरेंद्र घोष है। मैं प्रोफेसर अजयकुमार का बेटा हू और इस फैक्टरी मे एक वैज्ञानिक हू। मैं नाफ फैक्टरी' की ओर से माननीय अध्यक्ष की लडकी मिस सीमा वोडामा के स्वागत के लिए भेजा गया हू। आपका हार्दिक स्वागत है।"

"थैंक यू।" मिस सीमा ने उस रूपवान नौजवान से हाथ मिलाते हुए उसे सिर से पाव तक देखते हुए कहा, "आप बहुत स्वस्थ तथा चाक चौबद मालूम होते हैं।"

'मैं आज तक कभी बीमार नही हुआ। फैक्टरी के भीतर विज्ञान की सहायता से जो वायुमडल पैदा किया गया है उसमे किसी प्रकार के बीमार करने वाले कीटाणु नही पाए जाते, इसलिए इस फैक्टरी के अदर काम करने वाले कभी बीमार नही होते।"

"तो इसका मतलब यह है" सीमा ने आश्चयचकित होकर पूछा, "इस फैक्टरी के लोग कभी अपने तहखाने से बाहर नही जाते, क्योकि अगर वह बाहर जाएगे, तो उन्हे बाहर के वायुमडल म सास लेना पडेगा,

जिसमे हर प्रकार के रोग के कीटाणु पाए जाते है।"

नरेंद्र घोष ने मुस्कराकर कहा, "मिस सीमा, आप रूपवती ही नही बुद्धिमती भी हैं।"

सीमा इस बात पर शरमा-सी गई।

नरेंद्र घोष ने अपनी बात जारी रखी, "आप ठीक कहती है। इस फैक्टरी मे काम करने वाले कभी इस तहखाने से बाहर नही जाते। उन्हे इसकी अनुमति नही है, और आवश्यकता भी नही है। इस मीलो तक फैले हुए तहखाने के भीतर बेहतर से बेहतर जिंदगी के सुख-चैन के लिए जरूरी सब सामान उपलब्ध है। यह सुदर पार्क जो आप देखती हैं, यह फैक्टरी के चारो तरफ फैला हुआ है।"

"इस फैक्टरी मे कितने आदमी काम करते हैं?" सीमा ने नरेंद्र के साथ-साथ चलते हुए पूछा, "मेरा मतलब नकली इसानो से नही है।"

नरेंद्र हसा। अब वह दोनो एक फव्वारे के निकट से गुजर रहे थे, जिसके चारो ओर एक सुदर चबूतरा बना हुआ था। उस चबूतरे पर पाव रखकर नरेंद्र बोला, "इस फैक्टरी मे कुल दस आदमी काम करते है।"

'कुल दस आदमी?" सीमा ने विस्मित होकर पूछा।

"हा, कुल दस आदमी।"

"और दस आदमी साल मे कितने नकली इसान तैयार करते है?'

"साठ लाख।"

"साठ लाख नकली इसान? असभव।" सीमा आश्चय और सदेह से इकार मे सिर हिलाते हुए बोली।

"हमारी फैक्टरी पूरी तरह से ऑटोमेटिक है यानी सत्तानबे प्रतिशत ऑटोमेटिक केवल तीन प्रतिशत काम ऐसा है जो यह दस आदमी करते है। बाकी काम कम्प्यूटर मशीनें करती हैं।"

"इन दस आदमियो मे से छह तो पुराने प्रोफेसर हैं, जिनके नाम सारी

दुनिया मे मशहूर हैं," सीमा ने कहा, "बाकी चार कौन हैं ?"

"एक तो मैं हू। मैं नक्ली इसानों की जिल्द बनाने का माहिर हू, मगर अपनी सारी महारत के बावजूद मैं यह कह सकता हू, कि मैं ऐसी स्वच्छ जिल्द तैयार नही कर सकता जैसी आपके चेहरे की है। आपकी सूरत ऐतिहासिक मलिका शेबा से कुछ-कुछ मिलती है।"

सीमा ने किसी कदर लज्जा से झिझकते हुए पूछा, "आपने अपना नाम क्या बताया ?"

"मेरा नाम तो नरेंद्र घोष है, पर यहा सब लोग प्यार से मुझे बादल कहते हैं।"

"बादल, वाकई प्यारा नाम है," सीमा बोली, "मगर ताज्जुब होता है कि बादल नाम रखने वाले नौजवान ने आज तक सचमुच के बादल नही देखे सूरज को चमकते नही देखा, चद्रमा को छिटकते नही देखा, साध्य-गगन की लालिमा नही देखी, उस गहरे सन्नाटे को महसूस नही किया, जो गहरी होती हुई शाम के सायो मे किसी समुद्री तट के किनारे बैठकर महसूस होता है।"

"मुमकिन है, यह मेरी बदकिस्मती हो, मगर जो चीजें मैंने देखी नही जिनका मुझे एहसास नही, उनकी इच्छा भी नही। हा, इतना मैं सोच सकता हू आपको देखकर, कि अगर आपको कभी देखा न होता, तो प्रकृति की एक कलाकृति के दर्शन से वचित रह जाता।"

सीमा के गालो पर लाज की एक लालिमा दौड गई। फिर इन लाल कपोलो पर घनी लबी पलको की रात छा गई। कुछ क्षणो के पश्चात जब सीमा ने पलकें उठाकर बादल की ओर देखा, तो बादल को ऐसा लगा, जैसे उसके दिल के कोने-कोने में रोशनी के फव्वारे से उबलने लगे। इस तरह उसने कभी महसूस नही किया था, और उसकी समझ म नही आ रहा था कि एकाएक यह क्या हो गया।

सीमा ने बात का रुख पलटते हुए कहा, "आपकी इस फैक्टरी मे कितनी औरतें काम करती हैं ?"

"एक भी नही।"

"एक भी नही ?" सीमा ने हैरत से पूछा।

"हा, एक भी नही। इन दस वैज्ञानिको मे, जो यहा काम करते हैं और जिनमे अब मेरा नाम भी शामिल कर सकती हैं, एक भी वैज्ञानिक औरत नहीं है।"

"यह क्यो ?"

"मेरे पिता प्रोफेसर घोष और उनके साथी ज़रा पुराने खयाल के आदमी हैं। उनका खयाल है कि औरत बहुत देर तक रहस्य छिपा नही सकती।"

सीमा ज़ोर-ज़ोर से हसने लगी। बोली, "आपके फैक्टरी के वैज्ञानिक बेहद दकियानूसी मालूम होते हैं। उन्हे क्या मालूम की आजकल की लडकियो के सीने मे इतने रहस्य सुरक्षित रहते हैं। जितनी अक्ल मर्दों के दिमाग मे नहीं होती।"

"मैं आपकी बात का यकीन कर सकता हू।" बादल बोला, "हालाकि मुझे औरत की अनुभूतियो और उसके मनोविज्ञान का कुछ इल्म नही है। मगर आइए, पहले मैं आपको फैक्टरी के भीतर ले चलू।"

"क्या आप मुझे पूरी फैक्टरी दिखाएगे ?" सीमा ने पूछा

'यह सवाल आपने क्यो पूछा ?" बादल ने जवाब मे सवाल किया।

'क्योकि इस फैक्टरी मे औरत के विरुद्ध इस कदर पूर्वाग्रह और अध धारणा पाई जाती है।"

'यह ठीक है कि पहले टूरिस्ट औरता को फैक्टरी दिखाई नही जाती थी। लेकिन कुछ वर्षों मे औरतो के लगातार विरोध करने पर फैक्टरी के

कुछ विभाग उन्हें दिखाए जाते हैं। लेकिन फिर भी फैक्टरी के कुछ भाग ऐसे हैं जो औरत तो क्या कोई मर्द टूरिस्ट भी नहीं देख सकता, लेकिन    "यहां तक पहुंचकर बादल रुक गया, और मुस्कराकर सीमा की तरफ गहरी निगाहों से देखते हुए बोला, "आप माननीय अध्यक्ष की  बेटी हैं। आप फैक्टरी के हर हिस्से को देख सकेंगी, सिवाय  उस सेक्शन के जिसमें नकली इंसान का *दिमाग तैयार किया जाता है।  इस सेक्शन का काम इस कदर गोपनीयता* से होता है कि मुझे भी वहां जाने की अनुमति नहीं है।  केवल  तीन वैज्ञानिक—दस में केवल तीन वैज्ञानिक—उस  सेक्शन में  जा सकते हैं।  एक मेरे पिता डाक्टर  घोष  दूसरे  प्रोफेसर  जावेद मलिक  जो  इलेक्ट्रॉनिक्स विशेषज्ञ समझे जाते हैं और तीसरे प्रोफेसर पाटिल। इनके अलावा दिमागी सेक्शन में किसीको जाने की अनुमति  नहीं है।  मुझे उम्मीद है  आप इस सेक्शन को देखने की ज़िद नहीं करेंगी।"

*"ठीक है, आपकी फैक्टरी के नियमों का आदर करना मेरे लिए ज़रूरी* है। चलिए  "

फव्वारे से दो  कदम  चलकर  सीमा  ने  सहसा 'अरे'  कहा और रुक गई। फिर अपना एक पांव उसी  चबूतरे  पर  रखकर कहने लगी,  'मेरी सैंडिल का बकल खुल गया है।"

वह अपने पांव की ओर झुकने लगी थी कि  बादल ने  फौरन  झुककर उसके सैंडिल का  बकल  अच्छी  तरह  से  कस दिया।  बकल कसते समय *उसकी नज़र सीमा के सुंदर टखनों पर पड़ी  जिनपर सोने की एक हल्की* सी झांझ पड़ी थी। उस समय उसने महसूस किया कि  सहारा लेने के लिए कुछ क्षणों के लिए सीमा ने अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया है।

फिर जब वह बकल ठीक करके सीधा  हुआ तो  सीमा ने अपना हाथ हटा लिया और धीरे से कहा *'थैंक यू !'"*

वह बादल के साथ-साथ चलने  लगी,  और  चलते चलते उसके पांव

की सुनहरी भाषा का सगीत एक मधुर मनमोहक लय की तरह बादल के दिल म गूजन लगा।

## २

बादल उसे सबसे पहले एकाउण्ट विभाग म ल गया। यहा तीन दीवारो से लगे लग तीन भयकर और दत्याकार कम्प्यूटर काम कर रह थे। दुनिया भर से नकली इसानो की जो बढती हुई माग आती थी और जितने नकली इसान इस फैक्टरी से भेजे जाने थे और उनसे सम्बधित जितनीर सौदे आनी थी, जितनी शिकायतें आती थी, जितना रुपया आता था, लागत पर जितना खच होता था, सबका हिसाब किताब यही पर होता था।

तीन कम्प्यूटरा पर तीन आदमी काम कर रहे थे। और दुनिया भर म जितनी नकली इसाना की सप्लाई होती थी, वह इही कम्प्यूटरा के द्वारा की जाती थी और अरबा-खरबा रुपये का हिसाब किताब कुछ मिनटो म इन कम्प्यूटरा के द्वारा हो जाता था।

बादल न सीमा को इन तीन आदमिया से मिलाया, "यह विलियम जेगर है जमनी के मशहूर कम्प्यूटर वैज्ञानिक।"

विलियम जेगर साठ साल का ब्राउन रग की दाढी वाला काला चश्मा पहने हुए आग बढा, और उसके मजबूत हाथो के स्पश को सीमा ने अनुभव किया। इस स्पश म गणित की सी अटलता थी।

दूसरा मनुष्य एक मिस्री वैज्ञानिक था। गोल मटोल और हर समय मुस्कराता हुआ, चालीस वप के लगभग उसकी आयु होगी। बिना फ्रेम का

चश्मा पहने हुए वह आगे बढा और उसने भी बडे तपाक से हाथ मिलाते हुए कहा, "मैं शेख मक्सूद हू ।"

तीसरा आदमी खाकी पतलून पहने और खुले कालर वाली खाकी कमीज पहने, जिसके ऊपर का एक बटन टूटा हुआ था, और जो अधिक से अधिक पैंतीस वर्ष का होगा, बहुत कसरती शरीरवाला मालूम होता था। उसके बाजुओ पर कलाई तक घने बाल थे और दाढी गालो से चिपकी हुई थी। जब वह चलता था तो उस पर चीते की चाल का गुमान होता था। उसने सलेटी रग की एक पगडी पहन रखी थी।

बादल बोला, "इनसे मिलिए, यह बलवत सिंह है, कम्प्यूटरो के माहिर समझे जाते हैं। वैसे दूसरे काम भी करते है। चद्रमा पर जितने कम्प्यूटर जाते हैं उनका हिसाब किताब यही रखते हैं।"

कम्प्यूटरो की रोशनिया कभी बुझती थी, जागती थी, कापती थी, कभी घर घर घर की आवाज आती थी। कभी अदर ही अदर मशीनी खटका होता, और कम्प्यूटरो के एक सिर से कागज का टाइप किया हुआ फीता निकलने लगता।

सीमा ने पूछा, "क्या मैं इस फीते को देख सकती हू ?"

"जरूर जरूर, क्यो नही ?" विलियम जेगर ने मुस्कराकर कहा।

सीमा ने फीता हाथ मे लिया, जो उसके हाथ मे लबा होता जा रहा था और एक फीडर मशीन मे धीरे धीरे घुसता चला जा रहा था।

सीमा ने पढा 'ग्रेटर काजी के लिए चद्रमा पर दो हजार नकली इसान तीन नबर वाले दरकार हैं, जल्द भेजो। माल की सप्लाई एक सप्ताह के अदर हो जानी चाहिए। फ्राटर रॉकेट नबर इक्यावन सप्लाई लेकर जाएगा।

डलास (अमरीका) के सबसे बडे 'हिल्टन ग्लोरिया होटल' के लिए पाच हजार वेटर टाइप नकली इसान भेजे गए थे। विकास जेट नबर

३४१ से दस नक्ली इसान वेटर टाइप की जगह मैनेजर टाइप के निकले। समझ म नहीं आता, यह गलती कैसे हुई? चेक! लुपट नीसा जेट फक्टरी पिटजबग के लिए पाच सौ इजीनियर टाइप नकली इसान, और दस हजार नबर चार टाइप नक्ली इसानो की आवश्यकता है। माल समुद्री जहाज गारिला फिटजीगर पर लदवा दिया जाए। डिप्टी मैनेजर फ्रिट्ज राइजान।

डबल काली टेक्सटाइल मिल के लिए तीन हजार नक्ली इसान नबर सात, मालगाडी नबर दो सौ। मान की कीमत अभी वसूल नही हुई चेक।

"क्या आप तरह-तरह के इसान बनाते हैं?"

"इसान नहीं, नकली इसान!" विलियम जेगर न कहा।

"सॉरी, मैं यही पूछना चाहती थी।"

"जी हा," जेगर न जवाब दिया, 'वैसे इन बाता के सम्बध म सही वनानिक जानकारी ता हमारी फैक्टरी के जनरल मैनेजर मिस्टर घोष ही बता सकेंग। परतु आपका प्रश्न साधारण ढग का है इसलिए इसका जवाब देने के लिए मुझे कोई ऐतराज नही है। नि सदेह हमे यहा विभिन्न उद्यागा के लिए विभिन्न प्रकार के मजदूरो की आवश्यक्ता पडती है। जो मजदूर टेलीविजन फैक्टरी म काम करता है, उसका काम और उसकी बुद्धि और उसकी अगुलियो की बनावट तक उस मजदूर से अलग होगी, जिसे टेक्सटाइल फैक्टरी म या मिट्टी ढान के काम पर लगाया जाएगा। फिर एक साधारण मजदूर नक्ली इसान और एक इजीनियर किस्म के नक्ली इसान की दिमागी हालत म अतर हाता है, यद्यपि हम बहुत अधिक बुद्धिमान किस्म के नक्ली इसान नही बनात। अधिकतर माग नबर चार, नबर पाच, नबर छह और सबसे आखिर मे तथा सबसे अधिक माग नबर सात किस्म के मजदूर टाइप के नक्ली इसान की है, जिसमें एक

आम इसान की सी सूझ बूझ हाती है, मगर जिसके हाथ पाव म साधारण इसान से दुगुनी ताक्त हाती है और यह नक्ली इसान कुछ खाए-पीए बिना तीस वप तक एक फैक्टरी म बिना किसी वेतन के काम कर सक्ता है।"

'मुझे हैरत है कसे यह नकली इसान जो असली इसान के इस कदर अनुरूप ह और इस क्दर उससे भिन ह थाप लोगा न तैयार कर लिया।"

इसका फामूला मिस्टर घोप के सफ म सुरक्षित है," शेग्न मक्सूद न क्हा।

"और पूरा फामूला सिफ दो आदमी जानते हैं ' बलवत सिह बोला, "एक मिस्टर घोप, दूमर प्राफेसर पाटिल। हम लोग तो यहा केवल हिसाब किताब रखन ह और हिसाब किताब रखनवाले कम्प्यूटरा की मरम्मत करते है, अगर उनम काई सरावी पैदा हो जाए।'

"मेरे दिमाग म इतन सवाल भरे हुए है, इतने सवाल उभर रहे है कि कि " सीमा कुछ ठिठककर हसी।

बादल ने उसका हाथ पकडकर मुस्कराकर कहा "यह डिपाटमट ता साधारण कम्प्यूटरा वाला विभाग ह जसा तुमन शायद तेहरान म भी देखा होगा।"

"कम्प्यूटर मैंन बहुत दखे ह।" सीमा बाली, 'लेकिन ऐसे भयकर दत्याकार कम्प्यूटर मैंने कही नही देखे। लगता है, किसी असाधारण नक्षत्र लाक की असाधारण सृष्टि हैं।"

"सिफ मनुष्य की सृष्टि है" बादल बोला, "अब चला, मैं तुम्ह अपने पिता जी के कमर मे ले चलता हू, बाद म फक्टरी दिखा दूगा। कायद से सब से पहले हम वही जाना चाहिए था, क्याकि तुम्हार दिल म जितन सवाल उभर रह ह उन सबका जवाब और उपयुक्त जवाब वही दे सकते हैं।"

सीमा ने धीरे से अपना हाथ बादल के हाथ से छुड़ा लिया, फिर उसके साथ चलने लगी। वह बादल के चेहरे पर उसके हाथ छुड़ाने के कारण फैलती हुई निराशा देख सकती थी। इससे उसे कोई प्रसन्नता नहीं हुई, जो साधारण लड़कियों को किसी पुरुष का हृदय जीतने पर होती है। वह इतनी सुंदर थी, और उसपर मोहित होनेवाले नौजवानों की संख्या इस कदर ज्यादा थी कि अब उसे अपनी सुंदरता के अनिर्वचनीय आकर्षण से प्रसन्नता की बजाय एक कोफ्त-सी होती थी।

अपने दिल के अंदर मैं एक साधारण-सी लड़की हूं। काश, कि कोई इस साधारण-सी लड़की से प्रेम कर सकता! सभी मेरे हुस्न पर मरते हैं।

सीमा और बादल जब एकाउंट विभाग से निकले तो दरवाजे के बाहर खड़े हुए दो चपरासियों ने उन्हें सलाम किया। सीमा ने एक मधुर मुस्कान से उन्हें सलाम का जवाब दिया। दोनों चपरासी बेहद रोबदार नजर आते थे। कद छह फुट से ऊपर निकलता हुआ।

"यह दोनों चपरासी कहां से आए हैं?" सीमा ने पूछा, "मुझे तो पंजाब के लगते हैं।"

"नहीं, इस फैक्टरी में तैयार किए गए हैं।"

"ये नकली इंसान हैं?" सीमा ने ठिठककर आश्चर्य से उन्हें देखा।

"हां, यह नंबर सात किस्म के नकली इंसान हैं। हमारी फैक्टरी में अधिकतर इन्हीं इंसानों की खेप तैयार होती है।"

"क्या मैं इन्हें छूकर देख सकती हूं?" सीमा ने पूछा।

'बेशक!" बादल ने जवाब दिया।

सीमा ने उनसे हाथ मिलाया, उनके बाजुओं की उभरती हुई मछलियों को टटोला, हंसकर बोली, 'मुझे बनाते हो, यह तो हाड़ मास के इंसान हैं।'

"नकली मास के,' बादल ने गंभीरता से कहा।

"मगर "

बादल ने अपने होठों पर उगली रखी। सीमा खामोश हो गई। एक लबे बरामदे म से गुजरते हुए बादल न धीरे से कहा, 'हम इन लोगों से अधिक बात नही करते, केवल हुक्म देते है।"

लबे बरामदे से गुज़रकर वे एक चौकोर हाल म पहुचे, जिसके चारो तरफ लिफ्टें लगी हुई थी। य लिफ्टें तहखाने के ऊपर की मजिलो को जाती थी। रोशनी और हवा का प्रबध बहुत बढ़िया था, और हर स्थान एयरकडीशड था।

लिफ्ट नबर ग्यारह के निकट पहुचकर बादल ने एक बटन दबाया। कुछ क्षणो के पश्चात् लिफ्ट नीचे आई। इसमे से वर्दी पहने एक लिफ्ट-मैन निकला। उसने विनयपूर्ण स्वर मे पूछा

'कौन-सी मज़िल ?'

'सत्रहवी," बादल ने जवाब दिया।

वर्दीपोश लिफ्ट मैन ने मुडकर एक बटन दबाया। इस लिफ्ट मैन के बडे-बडे गलमुच्छे थे और रग ताबे का सा था और आखें भूरी तथा माथा चौडा, जिसपर भूरे बाल पीछे को मुडे थे।

लिफ्ट मैन ने लिफ्ट के दोनो दरवाज़े बद किए। लिफ्ट अपने-आप ऊपर चलने लगी। सीमा ने धीमे स्वर म बादल से पूछा

अब तुम कहोगे यह भी नकली इसान है!"

बेशक।"

"हैरत है!" सीमा बोली, "यह बिल्कुल ऐसा ही है जैसा हमारे तेहरान का लिफ्ट चलानेवाला होता है।"

"जी हा बादल न जवाब दिया, "हमने इस लिफ्ट मैन को इसी डिज़ाइन पर बनाया है।'

"मुझे विश्वास नही होता' सीमा बोली।

बादल बोला, "यहा जो भी आता है, उसे विश्वास नही होता। लोग समझते हैं कि हम यहा से असली इसान ही सवार कर भेजते है पर ऐसा नही है। ये लोग बिरकुल नक्ली इसान है।"

"पर मेरा शक कैसे दूर होगा ?"

"जब आप हमारे जनरल मैनेजर से मिलेंगी," बादल बोला, "वैसे मैं भी बता सकता हू लेकिन मेरा खयाल है कि आप नक्ली इसान के असली आविष्कारक से मिलकर उसीकी जबान से सब बातें सुनना पसद करेंगी।"

सत्रहवी मजिल पर जाकर लिफ्ट-मैन ने लिफ्ट रोक दी, दोना दरवाज़े खोले, अदब से झुककर सलाम किया, जिसका सीमा ने मिले जुले अचरज और सदेह से उत्तर दिया।

इतने म बादल ने फिर सीमा का हाथ पकड लिया था। बोला, "उधर नही, इधर मेरे साथ आओ।"

वह सीमा को लेकर पश्चिमी कान के एक कमरे मे दाखिल हुआ। यह जनरल मैनेजर अजय घोष का कमरा था।

## ४

दरवाजे के अदर दाखिल होकर पहले मुलाकातिया के बैठने का कमरा आता था। यहा पर पहले ही से बहुत से मुलाकाती बठे हुए थे। अदर के दरवाजे के बाहर एक वर्दीधारी खडा था, जिसकी वर्दी नीली थी नीली पतलून और नीली कमीज, लेकिन कमीज़ के कफ और कालर

सफेद रग के थे, जो उसे दूसरे कमचारियो से श्रेष्ठ सिद्ध करते थे। उसका नाम वच्चन सिंह था। बादल को पहचानकर वह कुछ आगे बढ़ा, और पूछने लगा, "यस मिस्टर नरेंद्र घोष, क्या माननीय अध्यक्ष की बेटी तश-रीफ ले आई हैं ?"

"हा, वच्चन सिंह" नरेंद्र घोष न एक काड वच्चन सिंह के हाथ मे थमाते हुए कहा, "इसे फौरन अदर ले जाओ।"

"अदर ले जाने की जरूरत नही है" वच्चन सिंह ने अदब के साथ जवाब दिया, 'जनरल मैनेजर काफी देर से आपका इतजार कर रह ह। उन्होंने मुझे आदेश दिया था कि जैसे ही आप माननीय अध्यक्ष की बेटी को लेकर आए, आप दोनो को उनके दफ्तर म पहुचा दिया जाए।"

इतना कहकर वच्चन सिंह ने अदर का दरवाज़ा थोडा-सा खोल दिया और खुद बाहर खडा रहा। बादल सीमा को लेकर अदर चला गया। दरवाज़ा अपने आप बद हो गया।

जनरल मनेजर अजय घोष की आयु कोई पैंसठ वप की होगी। रग सावला और चेहरे की रूपरेखा म मगोल रग झलकता था। उसका माथा बेहद चौडा और चेहरा भव्य-तेजपूण और गभीर। कनपटियो पर बाल थे। लेकिन उनपर सफेदी छाने लगी थी। वह एक बडी मेज़ के पीछे एक घूमने वाली कुर्सी पर बैठा था और उसकी मेज पर सात टेलीफोन थे, और उसकी मेज के दायें तरफ एक सुदर लडकी बठी हुई शाट हैंड म नोट ले रही थी।

जनरल मैनेजर घोष कह रहा था "सेक्शन नबर ३ के लिए सेनशन मनजर आविन हाइमर परिस की यू फान फैक्टरी को हमने पाच वप की गारटी दी थी, मगर चार सौ मजदूरो के हाथ दो साल म ही टूट गए है। समुद्री जहाज़ 'रोज़मान' टूटे हुए नकली इसानो को लेकर आ रहा है। ओविन हाइमर को मालूम करना चाहिए कि माल म खराबी क्यो

और वँ मे आई। क्या फैक्टरी से खराब माल भेजा गया या फैक्टरी मे ज्यादा इस्तमाल करने और नक्ली इसाना को पर्याप्त आराम न पहुचाने से यह हाथ टूट गए।

"लिख लिया, शीला ?" जनरल मनेजर न पूछा, "दूसरे नोट के लिए तैयार हो ?"

"जी हा।"

"अरे बादल।" एकाएक जनरल मनजर न अपनी कुर्सी पर घूमकर सीमा और बादल को देखा और अपनी कुर्सी से उठकर अध गोलाकार मेज़ से बाहर निकल कर आया और सीमा से हाथ मिलात हुए कहने लगा, "स्वागत, मिम सीमा। तशरीफ रखिए! मुझे एक जरूरी नोट भेजना है। बस, दो मिनट लूगा, फिर जी भर के आपसे बातें होगी।"

वह फिर अपनी सुदर स्टेनो टाइपिस्ट लडकी की तरफ मुडा और कहन लगा, "तैयार हो शीला ?"

"जी हा।"

"लिखो, ब्राजील के प्रधान मत्री के लिए। आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ। हमे दुख है कि हम इस वष भी आपके काफी के बागा मे काम करने के लिए पाच लाख नक्ली मनुष्य तैयार करके न भेज सकेंगे, केवल तीन लाख भेज सकेंगे। मैंने पिछले खत म दो लाख का वादा किया था। आपके लगातार ज़ोर देने पर तीन लाख नक्ली मनुष्य तैयार कराके सितबर के महीने के आखिर तक भेज दिए जाएगे। आपका

"लिख लिया, शीला ?"

"जी हा।"

"तो अब तुम बाहर जा सकती हो मिस सीमा वोडामा, आप मेरे पास इस कुर्सी पर बैठ जाइए।"

जब शीला बाहर चली गई, तो उसकी कुर्सी को प्रोफेसर घोष ने

अपने निकट घसीट के उसपर सीमा को बैठ जाने को कहा, 'फिर अपने दोनों हाथों की उंगलियां मिलाते हुए प्रसन्नता भरे लहजे में बोला, "मुश्किल से चौदह वर्ष की उम्र होगी आपकी ? '

"नहीं," सीमा प्रतिवाद करते हुए बोली, 'मैं सोलह वर्ष की हूं। राजनीतिक विज्ञान मेरा मुख्य विषय रहा है।'

"सफर में कोई कष्ट तो नहीं हुआ ?"

'नहीं, मैं माननीय अध्यक्ष के विशेष राकेट से यहां पहुंची हूं।'

"मेरे लायक कोई सेवा ?"

'जाहिर है, मैं फैक्टरी देखना चाहूंगी अगर आपको कोई कष्ट न हो, या एतराज न हो ?"

नकली इंसानों की निर्माण प्रक्रिया एक गोपनीय प्रक्रिया है जिसे हम किसीको नहीं बता सकते। आम तौर पर हम फैक्टरी के बहुत से विभाग किसीको नहीं दिखाते। बस दो चार विभाग दिखा के टाल सकते हैं। मगर आपका मामला दूसरा है। आप माननीय अध्यक्ष की बेटी हैं। मेरा बेटा नरेंद्र घोष, जो स्वयं एक बहुत अच्छा वैज्ञानिक है, आपको फैक्टरी के बहुत से ऐसे विभाग दिखा देगा जो हमने आज तक किसीको नहीं दिखाए। मगर मैं आशा करता हूं कि आप इसे पूरी तरह गोपनीय रखेंगी।"

"मैं वादा करती हूं। और एक सवाल भी पूछना चाहूंगी।'

'जरूर पूछिए।"

आपको नकली इंसान बनाने का फार्मूला कैसे हाथ लगा ?"

प्रोफेसर घोष बोले, "मैं दरअस्ल में अंडमान जहाज पर समुद्री जीवन का अध्ययन कर रहा था, उसी जमाने में अंडमान के आसपास के तटीय क्षेत्रों की समुद्री तहों पर काम करते करते अचानक मेरे मन में विचार आया कि प्रकृति ने इंसानी गोश्त बनाने का जो तरीका अपनाया है, क्या

उससे अलग हटकर कोई दूसरा उपाय नही खोजा जा सकता। स्पष्ट है, प्रकृति भी कई प्रकार से जीवन की रूपरेखा बनाती है " प्रोफेसर घोष सीमा को समझाने लगे।

" वृक्षो के तनो और डालियो मे अन्य प्राणियो का-सा लाल खून नही दौडता, पर हम उन्हे भी जीवित प्राणी मानते हैं। अगर किसी और तरकीब से इसानी गोश्त बनाया जा सके

" जरा सोचिए, मिस सीमा, छोटी छोटी टेस्ट-ट्यूबो म समुद्री जीवन के प्लाज्मे का, परीक्षण करते हुए, एक मामूली घोघे के शरीर से लेकर मनुष्य के निर्माण तक पहुच जाना मगर किसी दूसरे तरीके से पहुच जाना किस कदर कठिन काम है और कितना धय चाहिए इसके लिए। मगर "

प्रोफेसर घोष रुक गया, क्योकि उसकी मेज पर एक घटी बज रही थी। प्रोफेसर घोष ने डिक्टाफोन उठाकर कहा, "नही, इस वक्त मुझे किसीसे मिलने की जरूरत नही है। मैं कान्फ्रेंस मे हू।"

डिक्टाफोन रखकर उसने एक क्षण के लिए सीमा की ओर देखा। बादल बोर होकर कोने म बैठ गया।

प्रोफेसर घोष खामोशी से सीमा को घूरे जा रहा था। सीमा बोली, "तो फिर क्या हुआ ?"

"फिर मेरे सामने यह सवाल आया कि इस टेस्ट-ट्यूब म भरे हुए पदार्थ से जीवन को कैसे उभारा जा सकता है और जो मास और हड्डी और रगें तथा नसें और ग्लैंड तथा हारमोन क्या आप समझ रही है ?"

सीमा हसकर बोली, "ज्यादा तो नही, मगर बेहद दिलचस्प कहानी है।"

"आपके लिए कहानी होगी, मगर मेरी तो पूरी जिंदगी की पूजी है। धीरे धीरे परीक्षण करते हुए मैं उस पडाव पर पहुच गया, जहा मैं एक ऐसा मनुष्य बना सकता था जिसम टगोर का-सा कवित्व हो और आइस्टीन

बा-सा दिमाग हो, या एक ऐसा कीड़ा जो पचास फुट लंबा हो और आदमी की-सी सूझ बूझ रखता हो। जो नकली पदार्थ मैंने तैयार किया उसमें जीवित रहने की ऐसी शक्ति थी कि जो दूसरे पदार्थों से मिलकर नये प्रकार की सृष्टि कर सके। इसानी गोश्त तथा खून और प्लाज़मा को दूसरे पदार्थों के साथ मिलकर ऐसा करने पर लाचार नही किया जा सकता। दूसरा हृदय लगाने की सर्जरी इसीलिए प्राय असफल होती है कि शरीर दूसरे गोश्त को अपने भीतर पवदकारी से इकार करता है।"

'इसमें तो रहस्य की कोई ऐसी बात नही है जो दूसरों को मालूम न हो। अब तो यह सारा ससार जानता है। इसीलिए हमने प्लास्टिक के हृदय बनाए है जिन्हें हमारा शरीर अस्वीकार नहीं कर सकता। यह ऐसा कौन-सा भेद है कि जिसे लोगों से छिपाया जा सके अथवा जिसको किसीको न बताने के लिए मैं बेकार की कसम खाने पर भी मजबूर की जाऊ।'

'बेशक इसमें रहस्य की कोई बात नही है। पर रहस्य केवल इतना है कि मैं टेस्ट ट्यूब मे नकली खून और गोश्त बनाने पर ही सतोष नही करना चाहता था मैं इसान बनाना चाहता था इसान।'

'इसान ?"

"हा करीब करीब इसीलिए मैंने अपने प्रयोग शुरू किए। शुरू-शुरू मे नितात असफलता मिली। पहला इसान जो मैंने बनाया, उसकी सूरत लगभग एक उल्लू से मिलती थी। वह केवल तीन दिन जीवित रहा। फिर मैं एक लगूर जैसा इसान बनाने मे सफल हो गया, जिसकी पूछ भी थी। इस अवसर पर मेरे दोस्त प्रोफेसर पाटिल से मुझे अचानक मदद मिल गई।

"पाटिल का दिमाग वैज्ञानिक के बजाय एक इजीनियर का दिमाग है। उसने मुझे समझाया कि मनुष्य के भीतरी शरीर की मशीनरी बहुत पचीदा है और कुछ दशाओ मे अत्यत हानिकारक भी है। हम इसान

यानी अपने नये इसान को बचाने के लिए यह भी सोचना होगा कि उसके भीतर बहुत-से अग ऐसे है जिनकी नय इसान को जरूरत न होगी। यानी अगर हम आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो फैक्टरी मे काम करने वाले मजदूर के लिए मेदे की क्या जरूरत है? जिगर और सीने तथा गुर्दे की क्या जरूरत है? हा दिल की जरूरत है जो रगो मे खून दौडा सके, दिमाग की जरूरत है जिससे वह सोच सके, हड्डियो, रीढ की हड्डियो, हाथ-पाव, सुनने की शक्ति, बोलने की शक्ति, देखने की शक्ति, सघने की शक्ति की जरूरत है। मगर चखने की शक्ति की क्या जरूरत है। बोलने के लिए जबान जरूरी है मगर उसम स्वाद लेने की शक्ति होना बेकार है। मेद को निकाल देने से बहुत-से फालतू अग अपने आप निकाल देने पड़े, जिससे नकली इसान बनाना मुनाफे के हिसाब से बहुत बेहतर हो गया। और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बहुत सफल। यू समझिए कि हमने असली इसान का मॉडेल लेकर उसके शरीर मे उपयुक्त परिवतन कर दिए " प्रोफेसर घोप कहते-कहते रुक गया।

"कही आप बोर तो नही हो रही ह ?"

"जी नही, यह विषय मेरे लिए बहुत दिलचस्प होता जा रहा है।"

"शायद आपके लिए चाय मगवाऊ ?"

"अच्छा, पी लूगी ?"

"साथ म क्या खाइएगा ?" बादल ने अब वार्तालाप म हस्तक्षेप किया। अब तक वह बिल्कुल चुप बैठा था।

"मुझे चाय के साथ पनीर की फुल्लिया पसद है, बेसन म तली हुई," सीमा ने कहा।

प्रोफेसर घोप ने बटन दबाया। शीला अदर आ गई। प्रोफेसर घोप ने उसे चाय और पनीर की फुल्लिया मगवाने का कहा। शीला इतजाम करने के लिए फिर बाहर चली गई।

सीमा ने सवाल किया "तो क्या आपके नकली इंसान खुश रहते हैं, दुखी होते हैं, सैर को जाते हैं, गाना गाते हैं, नाचते हैं ?"

"यह सब अनावश्यक बातें हैं और सिर्फ इंसान की शोभा देती हैं। मिस सीमा, क्या आप सितार बजाती हैं ?"

जी हां ! मुझे सितार बेहद पसंद है।"

"बहुत खूब। एक दिन सुनूंगा। मैं सितार बजा तो नहीं सकता, लेकिन सुनने का मुझे बहुत शौक है," प्रोफेसर घोष बोला। "हां मगर पहले मैं आपके सवाल का जवाब दे दूं।"

"सितार बजाना आपके लिए उचित है मगर एक काम करने वाली मशीन को सितार से दिलचस्पी न होनी चाहिए। उसे सुख दुख से क्या मतलब, उल्लास और आनंद उसके किस काम के ? पट्रोल से चलनेवाली मशीन यदि आपकी तरह चूड़ियां और कंगन पहनकर बैठे, तो कितना अजीब मालूम होगा। इसलिए यह तथ्य कभी न भूलिए कि हम नकली इंसान, फैक्टरियों और दूकानों तथा दफ्तरों में काम करने के लिए बनाते हैं, खुशियों की महफिल सजाने के लिए नहीं।"

प्रोफेसर घोष ने सीमा की तरफ देखा। उसे महसूस हुआ जैसे सीमा के चेहरे पर उकताहट और उदासीनता के चिह्न प्रकट हुए हैं। वह मुस्करा उठा और बोला, "मिस सीमा, क्या आपसे एक सवाल कर सकता हूं ? आपके ख्याल में सबसे अच्छा मजदूर किस तरह का हो सकता है।"

सीमा ने सोच-सोचकर कहा, "अच्छा मजदूर मेरे ख्याल में वह होगा जो ईमानदार हो और मेहनती हो "

"और सबसे सस्ता भी हो !" प्रोफेसर घोष चिल्ला उठा "सबसे सस्ता भी हो और उसके जीवन की आवश्यकताएं सबसे कम हों। हम अपनी फैक्टरी में अधिकतर ऐसे ही नकली इंसान बनाते हैं। यू समझिए कि मैंने इंसान को दो कर दिया और एक रोबो बना दिया। रोबो के साथ

चूंकि बिल्कुल एक मशीन का-सा सिस्टम बधा हुआ है इसलिए मैं अपने इसान को रोबो से श्रेष्ठ समझता हू। बहुत-सी बातो मे वह इसान से मिलता है और बहुत-सी बातो म नहीं भी मिलता। मगर है वह एक तरह का रोबो ही, मगर इसान से अधिक मेहनती, ज्यादा मजबूत, कम आवश्यकताए रखने वाला, मैकेनिकी हिसाब से उसका शरीर इसान के शरीर से अच्छा है। उसका दिमाग भी इसान से अच्छा काम कर सकता है। मगर मेरे रोबो के भीतर कोई रूह नहीं है, यह बिना रूह का इसान है।"

सीमा बोली, "यह आप कैसे कह सकते हैं कि आपके बनाए हुए रोबो के भीतर कोई रूह नहीं होती ?"

"क्या आपने मिस सीमा, किसी रोबो के अदर झाककर देखा है।"

"नहीं।"

"मेरा बेटा आपको दिखा देगा। इसे इलेक्ट्रॉनिक्स म बहुत दिलचस्पी है और ग्लैंड बनाने म भी माहिर है। आजकल यह प्रोफेसर जावद मलिक की निगरानी म काम कर रहा है। बादल, तुम सीमा को एक रोबो अदर से काटकर दिखा दोगे न ?"

"जी हा।"

सीमा न एक झुरझुरी-सी महसूस की।

"एक इजीनियर की सृष्टि हर हालत मे प्रकृति की सृष्टि से अच्छी होती है।'

'मगर आदमी को भगवान ने बनाया है।"

"यही तो सबसे बुरा हुआ।" प्रोफेसर घोष ने कहा, "खुदा या भगवान या गाड जो भी कहो, उसे माडन इजीनियरिंग के उसूलो की कोई जानकारी नहीं थी। क्या तुम्हे यकीन आएगा कि मैंने पहले-पहल कैसे नकली मनुष्य तैयार किए ?"

"नहीं," सीमा बोली।

"इस्पात के सात गोलह फुट ऊँचे इंसान यह सोचकर कि वह बड़े इंसान फैक्टरियों में अच्छा काम कर सकेंगे—एक आदमी से चौगुना काम मगर ऐसा प्लान फेल हो गया। इस धरती के स्वभाव में सोलह फुट के इंसान को जीवित रखने की शक्ति नहीं है। वे जल्दी टूट फूट जाते हैं, बेहद बड़े हैं ये इंसान। हमारी धरती इतने बड़े इंसान को शरण नहीं दे सकती, इसलिए मैंने सामान्य साइज के नकली इंसान बनाने शुरू किए—छह फुट के इंसान या उससे कम के, जो देखने में बिल्कुल इंसान मालूम हों, मगर भीतर से नकली और ऊपर से ऐसे, जैसे आप हम, सब लोग दिखाई देते हैं।'

सीमा बोली "हाँ, मैंने तेहरान में कुछ ऐसे रोबो देखे थे। शहर की कारपोरेशन ने दो सौ ऐसे रोबो खरीदे थे जो भंगियों का काम कर सकें। मेरा मतलब है उन्हें इस काम पर नियुक्त किया गया था

"नियुक्त नहीं किया गया था खरीदा गया था, मिस सीमा। मेरे बनाए हुए इंसान खरीदे और बेचे जाते हैं।"

हाँ," सीमा बोली, वे लोग सड़क पर झाड़ू दे रहे थे। मैंने उन्हें देखा था। बड़े अजीब और खामोश से नजर आए।"

प्रोफेसर घोष मुस्कराकर बोले, "मगर हमारी फैक्टरी एक ही तरह के रोबो नहीं बनाती, यहाँ कई किस्मों के नकली इंसान बनाए जाते हैं। जो सबसे ऊँची किस्म होती है वह चालीस वर्ष तक चलती है।"

"फिर वे मर जाते हैं?" सीमा ने पूछा।

नहीं इस्तेमाल से घिस जाते हैं या टूट फूट जाते हैं।"

प्रोफेसर ने बटन दबाकर बच्चन सिंह को अंदर बुलवाया और उससे कहा, "बच्चन सिंह, मजदूर किस्म नंबर सात के रोबो लेकर आओ, फौरन।"

ज्यों ही बच्चन सिंह गया, प्रोफेसर घोष सीमा की ओर देखकर बोला,

"यह नंबर सात सबसे अधिक संख्या में बनाया जाता है।"

इतने में बच्चन सिंह दो रोबो लेकर आया। उनकी चाल में फौजी अंदाज था, जब वे दोनों जनरल मैनेजर के निकट पहुंचे तो सैल्यूट करके खड़े हो गए। उनके चेहरे पर कोई भाव भंगिमा न थी। चलने में एक यान्त्रिक अंदाज था।

सीमा ने उन्हें देखा, बेहद मजबत, गठा हुआ शरीर, चेहरा गम्भीर, होंठ बंद, आंखों की पुतलियां शून्य में घूरती हुईं। ये दोनों नकली इंसान किसी छोटे ट्रैक्टर की भांति मजबूत और तगड़े दिखाई देते थे।

"किस्म नंबर सात मामूली सूझ बूझ रखती है— एक आम इंसान की सी।'

सीमा के शरीर में एक झुरझुरी सी आई।

प्रोफेसर घोष ने बच्चन सिंह से कहा, "इन्हें बाहर ले जाओ।"

जब बच्चन सिंह इन दोनों रोबो को बाहर लेकर चला गया, तो प्रोफेसर घोष से सीमा ने कहा, "इन्हें देखकर कुछ अजीब सा एहसास होता है।"

'बच्चन सिंह, जो उन रोबो को लेकर आया था, स्वयं एक रोबो था मगर पांच नंबर का था।'

सीमा आश्चर्य में डूब गई। इतने में प्रोफेसर घोष बोले, "आपने मेरी नई टाइपिस्ट देखी?"

'वह सुंदर लड़की, जिसे आप कोई खत शार्ट हैंड में लिखा रहे थे?"

इतने में शीला अंदर आ गई। उसके पीछे पीछे दो रोबो आ रहे थे। एक ने चाय की ट्रे उठा रखी थी, दूसरे रोबो के हाथ में पनीर की फुल्लियां थीं, बेसन में तली हुईं, उसके सिर पर एक सफेद टोपी थी। सफेद टोपी वाले आदमी को इशारा करके प्रोफेसर घोष ने कहा, "यह भी एक रोबो है लेकिन हमने इसे स्वाद की शक्ति दे दी है। यह बहुत अच्छा भोजन

बनाता है। ''कहो, रौदर,' प्रोफेसर घाप ने सफेद टोपी वाले से पूछा—''फुल्लिया कमी ह ?''

''मैंने चखी हैं, जनाव।'' रौदर इत्मीनान से वोला, 'बढिया स्वाद है।''

जब चाय और फुल्लिया गम गम, एक तिपाई पर रखी गईं, तो शीला—प्रोफेसर घोष की रचना चाय वनाने लगी।

*चाय उसने बडी शिष्टता से बनाई हरेक की खिदमत म पश की।*

सीमा ने कहा, ''शीला, तुम खुद भी तो लो एक कप चाय।''

शीला बाली, ''मैं चाय नहीं पीती।''

तो जा पीती हो, वह मगा लो।''

'मैं न कुछ खाती हू। न पीती हू।''

चाय की प्याली सीमा के हाथ से गिरते गिरते बची, आश्चयचकित होकर बोली, 'तो क्या तुम भी ?''

पूव इसके कि शीला कुछ जवाब देती, प्रोफेसर घोष न कहा 'यह भी फक्टरी से आई है।''

सीमा ने शीला से पूछा ''शीला, क्या तुम फैक्टरी म पैदा हुई थी ?'

''नहीं।'' शीला धीरे से बोली, 'मैं यहा बनाई गई थी।''

''क्या कह रही हो ?''

'शीला ठीक ही कह रही है,' बादल बोला, 'इसकी त्वचा मैंने खुद तैयार की है। इसकी ठोढी या गाल छूकर देखो सीमा। शीला वेहद बुद्धिमती है। इसे देखकर कोई नहीं कह सकता कि यह हमसे किसी तरह भिन्न है फिर शीला के हाथ अपने हाथ म लेकर बाला, ''इसके हाथ देखो, इसकी लबी और सुदर उगलिया, इसकी जैतूनी रगत। यह सर्वोत्तम ग्रेड की रावा है। शीला जरा घम तो जाओ।''

शीला अपना स्कट सभाल के घूम गई। घूमन म उसके बाल भी घूम

कर माथे पर आ पड़े, उसने बड़ी अदा से अपने बालों को ठीक किया, और सीमा से कहने लगी "आप अपने रॉकेट से आई हैं लेकिन जाते समय हमारी फैक्टरी के लक्जरी राकेट से जाइए। हमारा रॉकेट बेहतरीन राकेट है—बढ़िया सीटें, उत्तम प्रबंध। सात मिनट में आप तेहरान पहुंच जाएगी।'

"यह झूठ है, बिलकुल झूठ।' सीमा शीला के बालों को छूकर बोली। "इसके बाल तो मुझसे भी सुदर और रेशमी हैं। मैं मान ही नहीं सकती कि शीला एक रोबो है। वह निश्चित रूप से एक लड़की है—मेरी तरह। क्या शीला ?"

सीमा ने शीला की तरफ देखा जैसे वह अपने सवाल का जवाब 'हा' में माग रही हो।

शीला गभीरता से बोली, "मैं एक रोबो हू।"

"यह झूठ है" अनायास सीमा के मुह से निकला, "यह झूठ है, मिस्टर घोष अपनी फैक्टरी के प्रचार के लिए यह सब कर रहे हैं।"

'क्या ?" प्रोफेसर घोष को भी गुस्सा आ गया। "आपको मेरी बात का यकीन नहीं है, तो फिर मुझे आपको यकीन दिलाना ही पड़ेगा।

इतना कहकर उसने बटन दबाया। बच्चन सिंह हाजिर हुआ। मिस्टर घोष ने बच्चन सिंह से कहा, "बचचन सिंह शीला को चीर फाड़ करने वाले कमरे में ले जाओ और इसका पट फौरन चाक कर दो।' फिर सीमा की ओर मुड़कर बोला, "आप वहा जाकर खुद अपनी आखो से देख सकती है, कि शीला के शरीर के भीतर मेदा, जिगर, तिल्ली, गुर्दे एस बहुत से अग नहीं पाए जाते, न ही इसके आते हैं।"

बच्चन सिंह ने शीला को उठाने के लिए कदम बढाया। सीमा अपने सोफे से उठकर बच्चन सिंह और शीला के बीच आ गई, बोली, 'प्रोफेसर, क्या आप इसके प्राण लेंगे ?"

"मिस सीमा, यह तो एक मशीन है। मशीन को कौन मार सकता है?"

बच्चन सिंह ने शीला से कहा, "मेरे साथ चलो।"

इतना कहकर वह दरवाज़े की तरफ जाने लगा। शीला ने भी जाने के लिए एक पग बढाया। सीमा उसे रोककर बोली, "उसे मत ले जाओ, शीला, मैं तुम्हें जाने न दूगी, तुम्हें कत्ल न होने दूगी।"

उसने शीला का हाथ अपने हाथों मे लेकर कहा, "मुझे बताओ शीला, क्या यह लोग तुमपर ऐसा ही अत्याचार करते हैं? क्या तुम इस अन्याय का विरोध नहीं कर सकती?"

शीला ने यान्त्रिक लहजे मे कहा, "मैं रोबो हू।"

"इससे क्या फर्क पडता है," सीमा भडककर बोली "तुम भी एसी हो जसी कि मैं हू। क्या तुम अपने शरीर के टुकडे कराने पर तैयार हो?"

"हा, मैं तैयार हू।' शीला ने जवाब दिया।

'क्या मतलब?' सीमा हैरत से बोली, 'तुम्हें अपनी मौत से डर नहीं लगता?"

'मैं कुछ कह नहीं सकती," शीला बोली।

"तुम्हें मालूम है, तुम्हारे साथ अब क्या सलूक किया जाएगा?" सीमा ने पूछा।

"हा मैं फिर कभी हरकत न कर सकूगी।'

"बच्चन सिंह!" तभी प्रोफेसर घोष ने बच्चन सिंह से कहा, "तुम मिस सीमा को बताओ कि तुम कौन हो?"

'मैं एक रोबो हू। मिस सीमा वोडामा, एक नकली मनुष्य—जिसे फैक्टरी मे बनाया गया है।"

"तो क्या तुम इस सुदर रोबो के टुकडे-टुकडे कर सकोगे?"

"हा।"

"और तुम्हें कोई दुःख न होगा ?"

"मुझे मालूम नहीं, मिस सीमा वोडामा !" बच्चन सिंह ने गंभीरता से कहा।

"इसके टुकड़े टुकड़े करने के बाद क्या होगा ?"

बच्चन सिंह बोला, "इसके बाद इसे पिघलाने वाले विभाग में भेज दिया जाएगा।"

"जहां इसका शरीर फिर उसी आटे में परिवर्तित हो जाएगा जिससे नकली गोश्त बनता है।" प्रोफेसर घोष ने हंसकर कहा, "हमारी फैक्टरी के मुर्दे भी बेकार नहीं जाते। हम उन्हें इसानों की तरह न जलाते हैं, न धरती में गाड़ते हैं। हम इनसे दोबारा नकली इंसान बना लेते हैं। इस विषय में हमने प्रकृति को भी मात दे दी है।"

"किस कदर भयानक है यह कल्पना !" सीमा ने कांपकर कहा, "कृपा करके इन दोनों को इस वक्त तो इस कमरे से बाहर भेज दो, मगर शीला को मारा नहीं जाएगा "

"अगर तुम्हें यकीन आ गया है कि मैं सच कह रहा हूं तो मुझे शीला के शरीर को पिघलाने की क्या जरूरत है। जाओ, शीला और बच्चन सिंह तुम दोनों बाहर चले जाओ।"

प्रोफेसर घोष अपनी सीट से उठकर एक बड़ी फ्रेंच खिड़की के पास गया और सीमा से कहने लगा, "इधर आओ !"

सीमा उसके करीब गई, बादल भी उठकर सीमा के साथ हो लिया। प्रोफेसर घोष ने खिड़की के बाहर इशारा करते हुए कहा, "कुछ देख रही हो ?"

"हां, कुछ लोग दीवार पर ईंटें चुन रहे हैं।"

"वे सब रोबो हैं और जो अधिकारी उनकी निगरानी कर रहे हैं वे भी रोबो हैं। इधर नीचे की बिल्डिंग देखती हो ?"

## ५

'बडी खुशी हुइ आपस मिलकर," डाक्टर पार्किन्ज न सीमा से हाथ मिलात हुए कहा, ' मरे खयाल म आपके आगमन का समाचार सब अखबारा म भिजवा दिया जाए।"

सीमा न घबराकर कहा, "नहीं नहीं।" वह हडबडाकर उठ खडी हुइ।

"बैठ जाइए, मिस वोडामा," जनरल मनजर ने सीमा से कहा, "अगर आपको शोहरत पसद नही है तो न सही, मगर कुर्सी पर तो बैठ जाइए।"

इस अवसर पर चारा आदमी अपनी-अपनी कुर्सी पेश करने लगे। कुछ क्षण अजीब उफरा-उफरी रही, आखिरकार सीमा ने बादल की पश की गई कुर्सी ले ली और उसपर बैठ गई।

डॉक्टर पार्किन्ज बाले, "रॉकेट का सफर कैसा रहा ?"

दूसरा बोला, "दूरी इस कदर कम हो जाती है कि पता ही नही चलता कि कब चले, कब पहुचे। मैं इसलिए रॉकेट के बजाय जेट या रल-गाडी को पसद करता हू। तभी मालूम होता है कि सफर कर रहे है।"

तीसरा कहन लगा, "हमारी फैक्टरी के बारे म आपका क्या खयाल है ?'

सहसा जनरल मैनेजर ने आधिकारिक स्वर म बुलद आवाज से कहा, "चुप हो जाओ, मिस सीमा का कहने दा।"

' मैं क्या बकू इनमे ?" सीमा जनरल मनेजर की ओर देखने लगी।

"जो आपके जी म आए, आप इनस कह सकती ह। इन्ह सुनना पडेगा।"

सीमा उन चारा को गौर से देखते हुए बोली, "क्या मैं इनमे साफ-

साफ बातें कर सकती हू ?"

"क्यो नही ?" जनरल मैनेजर बोला, "इसमे हर्ज ही क्या है ?"

सीमा उन चारो की तरफ देखते हुए बोली, "जिस प्रकार का व्यवहार आप से किया जाता है क्या उससे आपको तकलीफ नही होती ?"

"किस तरह का व्यवहार ?" डॉक्टर पार्किन्ज ने पूछा।

"कौन हम तकलीफ देता है ?" दूसरा कहने लगा।

तीसरा बोला, "आपके दिल म यह खयाल कसे आया ? '

सीमा बोली, "क्या आपको कभी यह अनुभव नही होता कि आप इससे अच्छी ज़िंदगी बसर कर सकते हैं ?"

चौथा बोला, " 'इससे अच्छी जिंदगी से आपका मतलब क्या है ?"

सीमा एकदम जोश मे आ गई, "यहा तो शदीद बेरहमी दिखाई जा रही है, और आप मुझसे व्यवहार की बात पूछ रहे है। सारे ससार म कानाफूसी हो रही है, इसीलिए मैं यहा आई हू, ताकि मैं अपनी आखो से देख सकू और जो मैंने सुन रखा है उससे एक हजार गुना ज्यादा बेरहमी मैं यहा देखती हू।"

"किस तरह की बेरहमी ?" चौथे आदमी ने पूछा।

"जरा सोचो " सीमा बोली, "आप लोग भी हमारी तरह इसान हैं। हमम और आपम क्या अतर है, मगर जिस तरह आप यहा रहते हैं वह बेहद शमनाक है।"

डॉक्टर पार्किन्ज बोला "हा, इसमें तो कोई शुबहा नही है कि सासारिक सभ्यता से इस टापू म, बल्कि मैं कहूगा, इस तहखाने म रहते वचित रह जाते हैं।"

सीमा बोली, 'क्या मैं आपको भाई कह सकती हू।"

क्यो नही ?" दूसरा बोला।

सीमा अपनी कुर्सी से उठ खडी हुई। बोली, "भाइयो, मैं यहा आदर

णीय अध्यक्ष की बेटी की हैसियत से नही आई हू, मैं मानववादी सघ की ओर से यहा भेजी गई हू, ताकि मैं आप लोगो को बता सकू कि मानव-वादी सघ के दस लाख सदस्यो की सहानुभूति आपके साथ है। और जो कुछ आपके साथ यहा हुआ है, मैं उसका कडा विरोध कर सकती हू। हम लोग आपको हर तरह की सहायता देने को तैयार है।"

"किस तरह की सहायता ?"

"जरा ठहरिए," प्रोफेसर घोष मुस्कराकर बोले, "मेरा खयाल है, मिस सीमा इस भ्रम म पड गई हैं कि वे इस समय रोबो लोगो को सबो-धित कर रही है।"

"नि सदेह यह लोग रोबो ही तो है," सीमा ने कहा।

*वह चारो हसने लगे और फिर चारो इकट्ठे बोल पडे,* "हम लोग रोबो नही है, मिस सीमा, हम लोग तुम्हारी तरह इसान हें।"

सीमा ने पलटकर प्रोफेसर घोष को सबोधित करके कहा, "मगर आप ही ने तो मुझे बताया है कि इस फक्टरी के तमाम अफसर रोबो है, नकली इसान है।"

"हा अफसर लाग नकली इसान है मगर हर विभाग का मैनजर एक इसान है। माफ कीजिएगा, मिस सीमा, मुझसे गलती हुई।" प्रोफसर घाष हसकर बोला। "मैं अपने साथियो का परिचय कराना भूल गया। यह डॉक्टर पाकिज है, जिनका परिचय मैं पहले करा चुका हू। यह हमारी प्रयोगशाला के इचाज है। यह डॉक्टर जावेद मलिक है। यह दिमाग बनान मे माहिर हैं। यह डॉक्टर पाटिल हैं, जिनके साथ मिलकर मैंन इस नकली इसान का निर्माण किया है। यह डॉक्टर रोबिन हायमर ह, रगा नाडियो और शिराओ के जानकार।"

सीमा ने सबसे हाथ मिलाकर माफी मागते हुए कहा, "मै बेहद शर्मिदा हू कि मैंन आपको नकली इसान समझा और नकली इसानो को

असली इसान समझ लिया।"

'कोई बात नही कोई बात नही," बादल बोला, "नए आने वाला से ऐसी गलती सभव हो सकती है। जरा यह पनीर की फुलिया चखिए।"

"और यह खोये के लड्डू।" जावेद मलिक बोले। उनकी छोटी-सी फ्रेंच कट दाढी थी जो उनके जहीन चेहरे पर बहुत अच्छी लग रही थी। डाक्टर जावेद मलिक नरेंद्र घोष से कोई दस साल बडे होगे। सीमा न उनकी ओर ध्यान से देखते हुए दिल ही दिल मे अनुमान लगाया और फिर उनके हाथ का पेश किया हुआ खोये का लडडू लेकर उसका आधा टुकडा अपने मुह मे डाल लिया। खाते-खाते उसने देखा कि नरेंद्र घोष के चेहरे पर छाया-सी आई और चली गई।

सीमा लजाकर बोली, "आप लोग अपने दिल से मुझे कितना बुरा समझते होगे कि मैं यहा आपकी फैक्टरी के रोबो लोगो को विद्रोह के लिए उकसाने आई हू।"

"इमस कोइ फर्क नही पडता," प्रोफेसर घोष बोले, "हमारे रोबो सबकी बातें सुन लेते है, मगर उनपर कोई प्रतिक्रिया नही होती। वे हसते तक नही। यहा तरह तरह के दीवाने आते रहते है पगले, पगम्बर और सूफी और दुनिया का सुधार करने वाले ऋषि, प्रचारक, राजनीतिज्ञ और धार्मिक लोग।"

"और आप उन्हे रोबो लोगो को सबोधित करने देते हैं?"

"बेशक, क्या नही हमारा क्या बिगडता है। मैं आपको अपनी फक्टरी म जाने की अनुमति दूगा। सिर्फ इतना ही नही, मैं आपको इसकी भी अनुमति दूगा मिस सीमा, कि आप हमारे बनाए हुए रोबो से जो भी चाहे कह दे, विद्रोह के लिए उकसाए या बाइबिल, कुरान, वेद उनके सामने पढें या फ्रासीसी क्रान्ति या साम्यवादी क्राति की बातें करें, या उनके लिए मानव-अधिकारो की माग करें। उनपर कोई असर होने वाला नही

है।" प्रोफेसर घोष ने अपने चुरुट की राख झाडते हुए कहा।

"यह तो बडी भयानक बात है। आप इन बेचारो से हमदर्दी और मुहब्बत का सलूक भी नही करते।"

"किसी रोबो से मुहब्बत नही की जा सकती," डाक्टर पार्किन्ज बोले।

तो फिर आप इनका निर्माण क्या करते है ?" सीमा ने पूछा।

'काम की खातिर," प्रोफेसर घोष बोले। "एक रोबो एक आदमी से तिगुना या ढाई गुना अधिक काम कर सकता है। इसानी मशीन मे बडी खामिया हैं। एक न एक दिन इस मशीन को कारखाने से हटाना ही था।"

इसानी मशीन कारखान के लिए और कारखान वालो के लिए बहुत महगी भी पडती है। उन्हे वेतन देना पडता है, कपड, खाना, रोटी, घर, शिक्षा, प्रोवीडेट फण्ड पेंशन, शिक्षा, छुट्टी, मनोरजन बाप रे। कारखान के लिए इसानी मशीन अब बिल्कुल बेकार है।"

डाक्टर रोबिन हायमर बोले, "और यह भी तो कहिए कि इसान कारखाने म काम करने के लिए कितना वक्त लेता है पूरा बचपन बेकार ह, पैदा होने से अठारह वष तक की आयु का काल कारखानो के लिए बिल्कुल बेकार है। वह काल हमने रोबो बनाकर बचा लिया है।"

डॉक्टर जावेद मलिक ने तारीफी निगाहो से सीमा को देखते हुए कहा, "आपके मानवतावादी सघ का असली उद्देश्य क्या है ?"

"हमारा असली उद्देश्य रोबो यानी नकली इसानो को उनके अधिकार दिलवाना है, उनकी रक्षा करना है और उनके लिए शिष्ट व्यवहार प्राप्त करवाना है।"

'बहुत अच्छा उद्देश्य है, मुझे अपने सघ का सदस्य बना लीजिए,' डाक्टर जावेद मलिक बोले।

डाक्टर पार्किन्ज बोले, "मैं भी सदस्य बन जाऊगा।"

"आप ठीक से नही समझे," सीमा बोली, "हमारा उद्देश्य रोबो लोगो

को इसाना की गुलामी से आजाद कराना है।"

"किस तरह ?" बादल ने पूछा।

"इन्हें मानव-अधिकार दिलवा कर।"

"यानी वोट ?" डॉक्टर घोष ने पूछा, "और वेतन ? लेकिन वोट लेकर वह क्या करेंगे और वेतन उनके किस काम आएगा ? वह क्या खरीद सकेंगे इसस ? भेदा उनके पास नही है। कपडे कारखाने वाले देत ही है। सेक्स के हिसाब से उनकी गिनती तीसरे सेक्स म की जाएगी, जैस स्टनो-टाइपिस्ट, रिसेप्शनिस्ट आदि।"

"हम रोबो लोगो की औरतें नही बनाते, आज तक किमीन रोबो को मुस्कराते नही देखा।"

'मगर वह बुद्धिमान तो हैं ?" सीमा ने पूछा।

"बहुत बुद्धिमान रोबो भी होते है, मगर उनकी अपनी कोई मर्जी नही होती, क्योकि उनकी कोई रूह नहीं होती। वे लोग इसान नही हैं, इसान से समानता जरूर रखत है।"

"यदि आप उनसे प्रेम का व्यवहार करें ?" सीमा ने पूछा।

"वह प्रेम की भावना से परिचित नही। व लोग अपन आपसे भी प्रेम नही करते।"

'विद्रोह भी नही करत कभी ?"

"विद्रोह ? नही।" डाक्टर जावेद मलिक बोल, 'हा कभी कभी उनका दिमाग फिर जाता है। वे अपनी मुटिठया कसने लगते है। और दात पीसन लगते है। मैंने इस बीमारी का नाम 'रोबायटिस' रखा।"

"आप एसे रोबा से क्या सलूक करते हैं ?"

"उसक टुकडे टुकडे करके पिघला दिया जाता है।'

डाक्टर रोबिन हायमर बोले "मैं इस बीमारी का इलाज ढूढ रहा हू।"

"यह एक कमजोरी है हमारे रोबो मे, जिसे हम जल्दी ही दूर करन मे सफल हो जाएग।"

"क्या रूह दात पीसकर विरोध करती है ?" प्रोफेसर घोष न व्यग्य से पूछा।

"यह शायद प्रतीक है इस बात का कि भीतर कोई सघष चल रहा है रोबो के दिमाग मे, विद्रोह इसकी पहली निशानी है। डाक्टर रोबिन हायमर कोशिश करके उनसे अच्छा व्यवहार कीजिए।" सीमा न सहानुभूति से कहा।

डॉक्टर जावेद मलिक बोले, "अभी तो हम एक नई किस्म का रोबो बनान म व्यस्त हैं, मैं उसे 'टोबो' कहूगा।"

"टोबो ?"

"हा टोबो रोबो से जरा भिन्न। रोबो को दद का बिल्कुल एहसास नही होता," प्रोफेसर जावेद मलिक ने कहा। "कभी-कभी कारखाने म काम करत हुए गलत तरीके पर किसी मशीन मे अपना हाथ द दना ह, ता उसका हाथ कट जाता है। मगर चूकि उसे किसी दद का एहसास नही हाता इसलिए उसे अपना बाजू कट जान पर थोडा-जरा भी अफसास नही हाता। कभी-कभी इसका सिर किसी मशीन से टकरा जाता है। यदि मैं उसके अगा म दद की प्रतिक्रिया पैदा कर दूगा, तो उससे वह स्वय अपने आपको बचाने की कोशिश करेगा और इस तरह से बेहतर मजदूर बन सकेगा। बहुत जल्द मैं टोबो बनान मे सफलता प्राप्त कर लूगा।"

"आप इन रोबो या टोबो लोगा मे रूह क्यो नही पदा करते ?" सीमा न पूछा।

"यह असभव है,' प्रोफेसर घोष न कहा।

"यह हमारे हक म भी नही है।" डॉक्टर पार्किन्ज ने कहा, "दखिए,

मिस सीमा, रोबो के निर्माण का मुख्य उद्देश्य यह था कि खच कम किया जा सके जिससे एशिया की महगाई कम हो जाए, क्योंकि कारखाने वाले रोबो को कोई वेतन नहीं देते, इसलिए उनका खच एक तिहाई कम हो गया है। इस हिसाब से आजकल की कीमतें पिछली कीमतों के मुकाबले म एक तिहाई कम है। अगले दस वष म जब हम और रोबो तैयार कर सकेंगे और दुनिया के प्रत्येक कारखाने को रोबो दे सकेंगे तो एक दिन ऐसा आएगा कि दुनिया का हर इसान काम की इल्लत से छुटकारा पा जाएगा और कीमतें शूय तक पहुच जाएगी। रोबो हर वस्तु बहुतायत से पैदा कर सकेंगे। गेहू, चावल, रडियो, टलीविजन फर्नीचर, कपड, परदे, मशीन, खाना पोशाक, घर मकान विल्डिगें—वे सब बना सकेंगे। सही अर्थों म उसी समय मनुष्य इस भूमडल का स्वाधीन स्वामी होगा। अपनी रूह का सच्चा मालिक।

"स्वग की-सी कल्पना है।" सीमा आश्चयचकित होकर बोली।

"तुम एक नौजवान लडकी हो। मरे बेट बादल की तरह।" प्रोफसर बोले थे, "सभव है हम लोग वह दिन न दख सकें मगर आप लोग वह दिन जरूर देखेंगे।"

सीमा बोली "मैं कुछ गडबडा सी गई हू। आई थी किसी और काम के लिए यहा आपका उद्देश्य कुछ और नजर आता है।"

बादल ने अपनी कुर्सी स उठकर कहा, "बहुत बहुत हो चुकी। मेरे ख्याल म मिस सीमा मेरे साथ चलने पर आमादा हो, तो मैं आपको फैक्टरी दिखा दूगा।"

सीमा अपनी कुर्सी से उठ खडी हुई बोली, "चलिए।"

६

बादल ने सीमा को पहले वह विभाग दिखाया, जहा बडे-बडे लोहे के कडाहो म रोबो बनाने का कच्चा मावा गूधा जाता था। गूधने का काम बिजली के द्वारा होता था। बडे आश्चय से सीमा ने उस मावे को देखा, जो देखने म गुलाबी रग का था, मगर बटन दबाते ही यह कच्चा मावा बडे-बडे कडाहो मे इस तरह उबलने लगता था जिस तरह उसने साबुन बनाने वाले कारखाने म देखा था।

बादल न कहा, "बुनियादी तौर पर साबुन बनाने और रोबो बनाने मे कोई अन्तर नही है, तरकीब वही है, केवल पदाथ भिन्न है और क्रिया साबुन बनाने से बहुत अधिक पचीदा हो जाती है।"

फिर सीमा ने वह विभाग देखा, जहा गोश्त बनता था और इस माव से रग व रेशे तैयार होते थे।

एक विभाग मे केवल नाडिया बनाने के मीलो तक लबे तार फैले हुए थे। तीसरे विभाग म रोबो के लिए सिफ दिमाग तयार किया जाता था।

चौथे विभाग मे रोबो के लिए ऊपर की त्वचा तैयार की जाती थी। बादल इस विभाग का इचाज था। वह बडे गव से सीमा को अपने डिपाट-मेट म ले गया।

"यहा त्वचा बनाई जाती है," बादल ने सीमा को बतलाया। इस डिपाटमट म चारो ओर लूम और स्पेंडिल चल रहे थे और मशीनो पर बनाई जा रही थी।

"कुदरत ने हमारी त्वचा की तीन तहें रखी है," बादल सीमा से कहने लगा, 'लेकिन रोबो लोगो के लिए केवल एक मजबूत तह काफी है, यद्यपि औरतनुमा रोबो बनाने म दो तह इस्तेमाल की जाती ह, फिर भी वह बात पैदा नही होती, जो औरत की त्वचा म है।"

सीमा का हाथ पकडकर मशीनो के घेरे से गुजरते हुए वह उस कमरे म पहुच गया जहा बेहद महीन और रेशम से भी कोमल धागो का जाल बुना जा रहा था। चारो ओर स्वचालित मशीनो की 'गू गू' डरावनी गूज थी और वातावरण म एक धुध सी छाई हुई थी।

सीमा ने थोडा आगे झुककर इन रेशम से बारीक धागो को छूना चाहा, जो एक मशीन से निकल रह थे कि एकदम जोर का झटका सीमा न महसूस किया। दूसरे क्षण उसन देखा कि बिजली की सी तेजी से बादल ने उसका हाथ हटा लिया। मगर इतने ही म सीमा बादल की बाहो म बहोश हो चुकी थी।

जब वह होश म आई, तो उसने अपने आपको एक ऐसे कमरे मे पाया जिसका विस्तर बहुत ही आरामदायक था और जिसकी खिडकियो म बिजली का प्रकाश हल्के हरे परदो से छनकर आ रहा था। उसके सामन कुर्सी पर निकट ही बादल बैठा था। लेकिन उसकी बाइ बाह पर पट्टी बधी हुई थी। उसे आखें खोलते देखकर बादल ने कहा, "शुक्र है, तुम बिल्कुल बच गइ।"

"मगर मुझे बिजली का-सा झटका महसूस हुआ था।"

दोष मेरा था। मैं तुमसे कहना भूल गया कि किसी मशीन या धाग का हाथ न लगाना। इन सबमे बिजली की धारा दौड रही है। शुक्र है, तुम्हें जरा ही सा झटका लगा और मैं अपने हाथ स तुम्हार हाथ को खीच ले जाने म सफल हो गया। मगर इस झटके न तुम्हें आधे घटे के लिए बहोश कर दिया।"

'और तुम्हार हाथ पर यह पट्टी कसी बधी हुई है उगलियो पर ?" सीमा ने पूछा।

"यह मेरी गलती की सजा ह।"

"घाव हुआ है ?"

"नही, मेरे बायें हाथ की दो उगलिया कट गई हैं।"

"धागे की धार इस कदर तज होती है ?"

"जब मशीन से निकलता है तो उसके भीतर ब्लेड की-सी तज़ धार होती है। तुम्हारे हाथ ने उसे अभी छुआ भी न था, कि मरे हाथ ने तुम्हारे हाथ को पकड लिया। मगर इस झटके म मरा हाथ धागे स लग गया और दो अगुलिया कट गईं।"

'मेरे कारण ?" सीमा धीरे से बोली।

'तुम्हारे कारण जान भी चली जाती तो क्या था ?" बादल ने उठते हुए बादलो से भी दूर लहजे म कहा जैसे वह किसी और से सबोधित हो।

सीमा बिस्तर पर उठ बठी, अपने बाल ठीक किए। बादल न उससे कहा, "लेटी रहो।"

"नही, अब मैं बिल्कुल ठीक हू," सीमा ने बिस्तर से उठकर कहा। वह बादल के करीब आई और उसने बड आहिस्ता से बादल के ज़ख्मी हाथ को छुआ। फिर हैरत से बोली, "मेरे कारण ?"

बादल चुप रहा।

सीमा ने विस्मय से कहा, 'हैरत ता इस बात की है कि जिस फैक्टरी मे मद औरत स इस कदर दूर रहते ह वहा इस प्रकार की हरकत हो जाए।"

बादल मत्र विमुग्ध निगाहा से सीमा को देख रहा था।

सीमा न पूछा, "क्या सब डिपाटमट तुमन मुझे दिखा दिए है ?"

लगभग सब।'

'लेकिन मैंन तुम्हारे विभाग म किसी रोबो को काम करते नही देखा।'

"कुछ विभाग स्वचालित हैं। उनम रोबो लोगा को भी नही जाने दिया जाता।"

'क्या ?"

' जिससे वह अपनी उत्पत्ति के रहस्य से परिचित न हो सकें। रोबो बहुत बुद्धिशाली होते ह।"

"और ?" सीमा थिचककर बोली, "लगभग सबका क्या मतलब था ?"

"बस दो विभाग तुम्हें नही दिखाए" बादल बोला।

"एक तो वह विभाग, जहा रोबो की हड्डिया का ढाचा तैयार किया जाता है, दूसरा वह विभाग जिसे हम एसेंबली प्लाट कहते हैं, जहा रोबो को अतिम आकार दिया जाता है। वह भी एक स्वचालित विभाग ह और उसकी निगरानी प्रोफेसर पाटिल और मेरे पिता जी करते है। लेकिन प्रोफेसर पाटिल से भी अधिक मेरे पिता जी रोबो की बनावट को सबसे अच्छा जानते हैं। एसेंबली प्लाट म उनकी राय सबसे अन्तिम और अटल मानी जाती है और इस एसेंबली को किसी टूरिस्ट को दिखाने की अनुमति नही है।'

"और अगर मैं कहू तो ?" सीमा ने पूछा।

बादल ने उसकी आखा मे आखें डालकर कहा, "अगर तुम कहोगी तो जरूर दिखा दूगा। लेकिन उसके बाद मुझे गोली से उडा दिया जाएगा।"

सीमा कापकर बोली, "तो मुझे मजूर नही है।" बादल चुप रहा।

"अब इस कमरे से चलें ?"

' तुम बिल्कुल ठीक महसूस करती हो ?"

' बिल्कुल ठीक।'

"यही डॉक्टर न भी कहा था, जो तुम्ह अभी दवा देकर गया था। उसने कहा था, जब तुम उठोगी तो बिल्कुल ठीक महसूस करोगी।"

"हा, मैं बिल्कुल ताजादम महसूस करती हू।"

"हा, तो अब तुम मेरे साथ चला, मैं तुम्ह खास तौर से इस फक्टरी का एक हिस्सा दिखाना चाहता हू।"

पहले तो वे लिफ्ट स ऊपर गए, ऊपर गए, वहुत ऊपर गए। फिर लिफ्ट खत्म हो गई और अब लान के सामन सीढिया थी। पेचीदा अध गोलाकार सीढिया ऊपर दूर ऊपर कही जा रही थी।

वादल सीमा को साथ लेकर सीढिया चढने लगा। शुरू शुरू मे सीढिया वहुत चौडी थी और सख्या भी अधिक थी, ज्या-ज्या वे ऊपर चढत गए और उनकी सास फूलती गई, तो सीढिया भी कम होती गइ और उनकी चौडाई भी। आखिर एक सीढी पर से सीमा का पाव फिसल गया मगर पूव इसके कि वह गिर जाती, बादल की मज़बूत वाहा ने उसे थाम लिया।

सीमा ने ऊपर दखकर कहा, मै थक गई हू। अब मैं और ऊपर नही जा सकती।"

बादल ने सीमा को अपनी बाहो म उठा लिया। अतिम बीस सीढिया वह उसे उठाए हुए ऊपर आया और एक टावर म दाखिल हुआ।

टावर म पहुचकर बादल न सीमा को अपनी वाहा से मुक्त कर दिया। सीमा घूमकर उस टावर को दखने लगी।

इस टावर की छत काच की थी और यहा आकर मालूम होता था जसे वे तहखाने म बाहर निकल आए है। इस टावर की दीवारा मे ईटें चिनी हुई थी, मगर छत काच की थी और टावर के भीतर और चारा ओर बहुत-सी बडी-बडी काच की खिडकिया लगी थी, जिनसे सूय का प्रकाश छनकर आता था।

यहा से सीमा हिन्द महासागर की लहरो को उछलत हुए देख रही थी और आकाश को, और आकाश पर उडत वादल को

बादल ने कहा, "तुमन कहा था न, कि तुमने आज तक आकाश नही

देखा, आकाश पर उड़ते बादलों को नही देखा साध्य गगन की मनोरम लालिमा को नहीं देखा। अब देख लो, यहा से सब दिखाई पड रहा है।"

"इस काच की छत पर वह क्या है?"

"हलीकोप्टर है।"

"काहे के लिए?"

'किसी विशेष खतरे के समय इस्तेमाल करने के लिए एमर्जेंसी के लिए ।"

सीमा ने इधर उधर देखने के बाद कहा, 'इस टावर की हवा नीचे के तहखाना से गर्म मालूम होती है।"

"यह टावर एमर्जेन्सी के लिए है, और एक तरह से यह टावर टेरेस गार्डन, या काच के बगीचे का काम भी देता है।"

बादल एक गमले के निकट गया और एक बहुत बडा पीला गुलाब उसने वहा से तोडकर सीमा के बालो म अटका दिया।

सीमा ने एक पिन से उस गुलाब को अच्छी तरह से अपने बालो म सजा लिया।

'मैं कभी-कभी अकेला टावर म आ जाता हू," बादल बोला, "और सागर का ज्वार भाटा देखता रहता हू। सागर की तरह ही मेरे दिल म अजीब-सी तरगें उठने लगती हैं, जिनका वैज्ञानिक होकर भी ठीक प्रकार से विश्लेषण नही कर सकता था। मगर तुम्ह देखकर "

वह चुप हो गया।

"हा, मुझे देखकर?" सीमा शोखी से उसकी ओर देखने लगी। "हम शुरू से ही अकेले रहने की शिक्षा दी गई है। रोबो बनानेवाली कम्पनी के जनरल मैनेजर का मैं बेटा हू। इसलिए मुझे भी विशेष रूप से बाहर के खुले वातावरण से वचित कर दिया गया है। दूसरे इजीनियर और वज्ञानिक आयु म मुझसे बहुत बडे हैं सिवाय प्रोफेसर जावेद मलिक के, जो

इन लोगों ने बहुत याद म आए। वह भी पैंतीस स कम के न होंगे। इन लागों के लिए बहुत आसान है बाहर के ससार को छोड देना, मगर मर लिए "

वह फिर चुप हो गया।

सीमा बोली, "हा, तुम्हारे लिए ?"

'मेरे लिए भी आसान हो गया था। जब तक तुम्हे देखा न था, हर चीज आसान थी, कोई फैसला कठिन न था, कोई काम मुश्किल न था, मैं साइस म मगन था।'

सीमा ने धीरे स कहा, "साइस बहुत अच्छी है।"

'बहुत अच्छी है, मगर तुम्हे देखकर मालूम होता है कि वह सब कुछ नही है। इस दुनिया म साइस से भी कीमती चीजें मौजूद हैं।"

"मिसाल के तौर पर ?'

"इसान, औरत, फूल, सागर का ज्वार भाटा दिल म उठती हुई तरगें तुम।"

बादल ने सीमा को अपनी बाहो म ले लिया।

सीमा ने अपनी आखें बद कर ली। सीपी के पपोटो के भीतर उसके आखो की बडी बडी पुतलिया जाने कैसे कैसे स्वप्न देखने लगी। उसके सीने मे सागर का सा ज्वार भाटा उठने लगा। धीरे स उसका सिर बादल के सीने से लग गया, झुक गया। उसके मिसकते बद होठो से एक आह सी निकली जैसे वह अतीव प्रसन्नता की वेदना का अनुभव कर रही हो

बादल ने अपने खुश्क अगारो की तरह जलते हुए होठ सीमा के रसीले होठो पर रख दिए।

और हौले हौले समदर शात होता गया।

७

फिर पन्द्रह बरस गुजर गए

जावेद मलिक नरेन्द्र घाष के ड्राइग रूम म गुलाब के फूलो का एक गमला लिए भीतर आया। उसने बादल से पूछा, "क्या सीमा अभी तक सो रही है ?"

"हा सो रही ह।"

'और उसे कुछ मालूम नही है ?"

"नही," बादल ने धीरे से कहा, "उसे कुछ मालूम नही है और मैं दुआ मागता हू कि आज कम स कम आज कुछ न हो। यह क्या लाए हो ?"

'मैंने यह एक नये प्रकार का गुलाब पैदा किया है। इसका मैंन नाम रखा है—क्षितिज की लालिमा।"

"इसे देखकर मुझे आज से पन्द्रह वष पहले की सीमा याद आती है, उसके गालो का रग एसा ही था।"

"अब भी एसा ही है," जावेद मलिक ने कहा, "सीमा का हमारे यहा आए हुए पन्द्रह वष हो गए आज पन्द्रह वष हो गए। बादल, याद है ?"

बादल ने रुककर सोचा, फिर धीरे से मुस्करा उठा, "तुमन ठीक याद दिलाया, जावेद, ठीक पन्द्रह वष पहले आज के दिन वह यहा आई थी। मैं भूल गया, मगर तुम्ह कैसे याद रहा ?"

'जो चीज किसीके पास होती है वह उसे भूल जाता है।" प्रोफसर जावद मलिक ने धीरे से कहा, "दूसरो को याद रहती है।"

उसकी आवाज अजीब दु ख भरी सी थी, मगर बादल को कुछ अदाज न हुआ। वह किसी और ही ध्यान म डूबा हुआ बैठा था। उसने एक तिपाई

पर से दूरबीन उठाई और सागर की ओर उसका रुख करके देखने लगा, फिर निराशा से बोला, "अंतिम जहाज अभी तक नही पहुचा, मुझे डर है "

"चुप रहो।" जावेद मलिक बोला, "कही वह सुन न ले।"

बादल ने घबराकर पीछे मुडकर देखा, ड्राइग रूम से लगा एक छोटा सा चैम्बर था जिससे लगा हुआ सीमा का बेड रूम था। चैम्बर के दरवाजे पर सीमा की खास नौकरानी चचल खडी थी।

"क्या है चचल ?" बादल ने पूछा।

"सीमा मेम साहब जाग गई हैं और अब स्नान कर रही है।"

"अच्छा।"

अब चचल वापस चली गई, तो जावेद मलिक ने कहा, "अगले वष मैं इससे भी बेहतर गुलाब सीमा की खिदमत मे पेश करूगा।"

"कौन-सा अगला वष ?"

"जाने इस समय तेहरान म क्या हो रहा होगा ?"

"तेहरान मे और पेरिस मे, और न्यूयाक म और पेकिंग म, और टोकियो मे "

"चचल।" सीमा की आवाज ड्राइग रूम तक पहुची। बादल और जावेद मलिक दोनो चौंक से गए।

बादल अपनी जगह से उठकर अन्दर गया।

सीमा तैयार होकर स्नान घर के दरवाजे पर एक बडा सा तौलिया लपेटे खडी थी। बादल ने एक नजर भरकर उसे देखा। वह आज भी उतनी ही खूबसूरत थी और यह केवल इसलिए कि उसके कोई बच्चा न हुआ था। बच्चे स्त्री की सुन्दरता को नष्ट कर देते हैं। सीमा बच्चा चाहती थी। एक नही एक दजन, मगर बादल बच्चो के खिलाफ था। न सिफ बादल बल्कि उसका पिता प्रोफेसर अजय घोष भी जब तक जीवित रहा,

बच्चा के खिलाफ रहा। अजय घोष को मरे हुए भी लगभग चार वर्ष हो गए थे, मगर बादल अभी तक अपने पिता के बनाए हुए उसूलो पर चल रहा था। कभी-कभी सीमा से उसके बच्चो के मामले म लडाई झगडे भी हो जाते, मगर जल्द ही दोना रूठे हुए प्रेमी मान जाते। क्योकि पन्द्रह वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी वह आज भी एक-दूसरे से अगाध प्रेम करते थे।

"चचल कहा है ?" सीमा ने दरवाजे पर खडे-खडे अपने बडे तौलिय से सिर छिपाने का असफल प्रयास करते हुए पूछा।

'तुम एक तस्वीर की तरह खूबसूरत हो।' बादल बोला।

इतने म चचल अपने दोना हाथो मे सीमा की नई ड्रेस उठाए हुए आ गई और सीमा ने स्नान घर का दरवाजा भीतर से बन्द करते हुए बादल की ओर जीभ निकालकर उसका मुह चिढा दिया।

"वह सब जाहिल हैं कम्बख्त माटी मिले," चचल दरवाजा बन्द करत हुए बोली।

"वे कौन ?"

'व मलेच्छ।"

"क्या रोबो लोग ?"

मैं तो उनको इस नाम से भी न पुकारू।" चचल सिर हिलाकर बोली।

"हुआ क्या है ?" सीमा ने पूछा और तौलिया उतार दिया।

कुछ क्षणा के लिए तो चचल सीमा की निर्दोष सुन्दरता निहारती रही। वीनस जस समुद्र की सीपी से निकल आई हा। फिर उसे अपनी बात याद आ गई। बाली, "इस मुए को भी वह बीमारी हो गई है। आज सबरे-सबेर जब मैं ड्राइग रूम साफ करने गई, तो साथ के लाइब्रेरी के कमर म से मुये किसी चीज के टूटने की आवाज आई। मैं भागी भागी अन्दर गई, तो देखा कि मुआ अपने दात पीस रहा है और मुट्ठिया कस रहा ह और

लाइब्रेरी म रखी हुई कालिदास वगैरा की मूर्तिया फेंक फेंककर तोड रहा है।"

'कौन, श्रीधर ?" सीमा ने आश्चयचकित होकर पूछा।

"हा, वही मुआ कम्बख्त श्रीधर। जान तुमने उसको यह नाम क्या दे दिया, उसे तो किसी धम मजहब मे विश्वास ही नही है। राम और कृष्ण के जो चित्र लाइब्रेरी म टगे थे, उन्हें उतार उतारकर फाड रहा था। मैं तो डरकर भागी। यह कसी मनहूस जगह है, मालकिन, तुमन मुझे तेहरान से यहा क्या बुलवा भेजा ?"

"इतनी तो विनती प्राथना की मैंने तुझे बुलवान क लिए।" सीमा बोली, "बादल से कहा, 'एक नौकरानी के बिना मेरा काम नही चलेगा।' वह कहने लगा, 'एक औरत के बदले एक दजन रोबो स्त्रिया रख लो,' मगर मुझे तो चचल चाहिए थी "

"कितने बुरे ह यह रोबो। मैं तो सचमुच इनसे बहुत डरती हू। श्रीधर के नजदीक तो तुम्हारा कुत्ता भी नही जाता। तुम्हारा तोता भी उसस हरी मिच नही खाता।"

"तोते को क्या समझ है मेरी चोली ठीक से कस दो।'

चचल बडबडाती हुई सीमा की चोली-साडी ठीक करने लगी।

दो बार सीमा ने आईन के सामने घमकर अपनी सुदरता को आका आश्चय है मेरी सुदरता पर कोइ प्रभाव नही हुआ सिवाय इसके कि शरीर ज़रा गदरा गया है, इसस वह और भी सुदर हो गया है। सीमा ने खाजी दष्टि मे अपन शरीर का निरीक्षण करते हुए आईने म कई बार दखकर सोचा, फिर बोली, 'यह ऐसी अच्छी सुगध कहा से आ रही है ?"

'ड्राइग रूम से प्रोफेसर जावेद मलिक तुम्हारे लिए एक नया गुलाब लाए हैं।'

सीमा जल्दी-जल्दी ड्राइग रूम म चली गई। गमल म गुलाब का एक

नाल फूल दमक रहा था।

सीमा न उसे अपने सीन से लगा लिया।

"ओह बादल ! यह फूल किसलिए ?"

'सोचो " बादल ने पूछा, "तुम्ही बताओ।"

"क्या बताऊ, आज मेरा जन्म दिन तो है नहीं।"

"आज मेरी खुशियो का जन्म-दिन है।"

"क्या मतलब ?"

"आज से पद्रह वष पहले तुम मेरे पास आई थी।"

"आज ही क्या सचमुच ? तुम्ह याद रहा ?"

सीमा बाहें फैलाए हुए बादल की ओर बढी। चचल नाक सिकोडकर कमर से बाहर चली गई।

बादल ने सीमा को प्यार कर लिया। देर तक उसे अपनी बाहो मे समेट रहा। फिर उसे मुक्त करत हुए बोला, "सच पूछो तो मुझे याद न रहा था लेकिन उन सबको याद था।"

"किन सबको ?"

"जावेद मलिक को और डाक्टर पार्किन्ज़ को और बूढे प्रोफेसर पाटिल को। जग मेरी जेब म हाथ डालो तो "

सीमा ने उसकी दाहिनी जेब म हाथ डाला। मोतियो की एक लबी माला निकली, जिसे दुहरा करके सीमा ने अपने गले मे पहन लिया।

"राबिन हायमर का उपहार है।" बादल बोला, "अब दूसरी पॉकेट म हाथ डालो।"

सीमा ने दूसरी पॉकेट मे हाथ डाला, तो उसके हाथ म एक रिवाल्वर आ गया। सीमा न घबराकर उसे अपन हाथ स छोड दिया। रिवाल्वर आवाज़ पैदा करता हुआ सगमरमर के फश पर गिर गया।

"यह क्या ?"

बादल ने बात का रुख पलटते हुए कहा, "यह गलती से निकल आया। एक बार फिर उसी पॉकेट मे हाथ डालो।"

"पर तुम तो कभी जेब मे रिवाल्वर नही रखत थे ?" सीमा ने सहमकर पूछा।

'गलती हो गई।" बादल शर्मिदा होकर बोला। "अब डालो उमा पाकेट मे हाथ।"

सीमा ने फिर उसी पॉकेट म डरते डरत हाथ डाला।

एक सुदर धातु की बनी हुई नटराज की मूर्ति उसके हाथ म आ गई।

'यह बुड्ढे पाटिल की भेंट ह।"

सीमा हसकर बोली, "यहा तुम्हारे, मेरे और चचल के सिवा और कौन बुड्ढा नही है, और हम भी कौन से जवान रहे हैं ।"

"वह चाक्लेट का डिब्बा देख रही हो विलियम जेगर न भेजा ह एकाउटस डिपाटमट से और वह हाथीदात का ताजमहल शेख मक्सूद का उपहार है और वह तिपाई पर रखा हुआ चीनी पखा डाक्टर पार्विन्ज की भेंट है।"

"इन सब लोगा को आज का दिन याद रहा ?"

"अब मेरे साथ बाहर सागर की ओर देखो।"

'कहा ?"

"उधर, खिडकी म आओ।"

सीमा की कमर म हाथ डालकर बादल उसे एक फ्रच खिटकी के निकट ले गया।

सीमा बोली, "जब तुम मेरी कमर म हाथ डालत हो, मुझे सदा उन उगलिया का स्पश महसूस होता है जो अब नही रही।"

'वह देखो।" बादल ने कहा।

"कहा देखू ?"

"बदरगाह की ओर।"

"वाइ नया जहाज है।"

"तुम्हारा समुद्री जहाज है मेरा उपहार तुम्हारे लिए।"

"मर लिए क्या मतलब ?"

"अब फैक्टरी के कानून तुम्हारे लिए बदल दिए गए हैं, आज से तुम इस समुद्री जहाज पर ससार के किसी भाग म जा सकती हो।"

"ओह !" सीमा बादल के सीने स चिपट गई। फिर कुछ देखकर ठिठकी। धीरे से सहमत हुए, डरत हुए कहने लगी, 'बादल, मगर इस जहाज पर ताप है। यह ता गन बोट है।"

"गन बोट नही है, एक बडा और मजबूत समुद्री जहाज है, जिसपर तुम एक मलिका की तरह सफर कर सकोगी।"

"मगर तापा के साथ ? इसका मतलब क्या है, बादल ? क्या कोई बुरी बात हो चुकी है या होनेवाली है ?"

"यह मोतियो की माला तुम्ह कैसी जची ?"

"मेरे सवाल का जवाब दो।" सीमा ने बादल की आखा म आखें डालकर कहा।"

"क्या जवाब दू ?" बादल बोला, "एक हफ्ते से कही से कोई खत ही नही आया।"

"काई तार ?" सीमा ने पूछा।

'तार भी नही।"

"इसका क्या मतलब हो सकता है ?"

"छुट्टी," बादल ने कधे उचकाकर कहा, "हाथ पर हाथ रखे बैठे हैं ।"

"तो आज तुम सारे दिन मेरे पास रह सकते हो ?"

सीमा ने बादल के गले मे बाह डाल दी।

बादल ने उसे चूमकर कहा, "क्या नही, मानो कि देखेंगे।"

सीमा कुछ सोचते हुए बोली, "आज से पद्रह वष पहले जब मैं यहा आइ थी, तो सालह वष की लडकी थी, और दिल म एक उद्देश्य लेकर आई थी और वह उद्देश्य था रोबो लोगा को तुम्हार विरुद्ध—इसाना के *खिलाफ विद्रोह पर आमादा करना* "

बादल बोला, "यह एसा ही है जसे कोई नट बोल्ट, स्क्रू-पेंच या कील को विद्रोह के लिए आमादा करे।"

मगर सीमा ने अपना वक्तव्य जारी रखा, उसी सोच म डूबे हुए अदाज मे बोली, "जब मैं आई तो मुझे एसा लगा जसे मैं एक छोटी-सी लडकी जगल के बडे बडे वक्षा म घिरी खडी हू। मरे आत्मविश्वास को ठेस सी लगी, मगर मैं कह सकती हू कि इन पद्रह वर्षों म तुम्हारे विश्वास ने कभी *मात नहीं खाई। उस समय भी जब परिस्थितिया तुम्हारे खिलाफ जान लगी।*'

'तुम्हारा सकेत किन परिस्थितियो की तरफ है ? '

'याद करो जब अमरीका मे मजदूरो न रोबो लोगा के खिलाफ विद्रोह किया, और जब विद्रोहिया से लडने को रोबो को हथियार दिए गए और वे इतन अच्छे सैनिक साबित हुए कि विभिन्न सरकारें उन्ह सनिको के रूप म अपनी सनाओ मे नौकर रखने लगी।"

'यह बात भी मेर जेहन म थी कि ये कठिनाइया भी दूर हो जाएगी। ससार म कोई मुसीबत एसी नही है जिसका हल मौजूद न हो, कही न कही '

सीमा अपनी उगली स सोच की एक टेढी लकीर बादल के गाल पर खीचत हुए बोली, "बादल, अपने पिता के मरन के बाद तुम ही इस फैक्टरी के जनरल मैनेजर हो तुम चाहो ता बहुत कुछ कर सकत हो।"

"क्या करू ?

सीमा के मुह से एक आह-सी निकली। उसने धीरे से कहा, "बादल, यह फैक्टरी बद कर दो आओ, यहा से चले जाए।"

"यह तुम क्या कह रही हो ?"

"मैं इस जगह से उकता चुकी हू। क्या वाकई हम कभी यहा से नही जाएगे ?"

"तुम्हारा मतलब है, हम आज ही चले जाए ?"

"बादल, जाने क्या बात है, रह रहकर आज मेरा दिल बुरी तरह धडकता है।"

"क्या बात है ?"

"लगता है, कोई अनहोनी बात होने वाली है, जसे आकाश सिर पर गिर पड। ओह ! यहा से चल दो बादल। इस दुनिया म कोई एक ऐसी छोटी प्यारी-सी जगह तो होगी, जहा हम इस दुनिया की हा हू से अलग होकर अपने लिए एक घर बना सके। हमारा यह घर नही है, फैक्टरी का एक कोना है।"

बादल कुछ कहने को था, ठीक उसी समय टेलीफोन की घटी बजी। बादल न रिसीवर पर कुछ सुना। बोला, "अच्छा, मैं अभी आता हू।" फिर सीमा की तरफ मुडकर कहने लगा, "डॉक्टर पार्कि ज ने मुझे फौरन बुलाया है।"

वह ड्राइग रूम से बाहर जाते जाते फिर मुडकर बोला, "आज घर से बाहर कही मत जाना।'

सीमा न अपने आपसे कहा, 'बादल, जरूर मुझसे कुछ छिपा रहा ह,' फिर चचल को आवाज देकर बोली, "चचल चचल, यहा आओ।"

जब चचल उसके पास आई तो सीमा ने उससे कहा, "जरा भागकर जल्दी से साहब के कमरे में जाओ और ताजे अखबार उठा लाओ, जितने भी हैं।"

"लाती हू," चचल वडी अदा से मुह सिकाडती हुई बोली, "मगर साह्न सब अखबार इधर उधर फॅक देत है, ढूढकर लाती हू।"

चचल के जाने के बाद सीमा ने दूरबीन उठाई और उस समुद्री जहाज का ध्यान मे देखा, समुद्री जहाज का नाम पढा—अतिम। उसने यह भी दखा कि रोबा जहाज म सामान चढा रहे है।

चचल अखबार उठा लाई और अपनी मालकिन के चरणा म बठकर उन्ह सिलसिलेवार लगाने लगी।

'य इस हफ्ते के अखबार ह, काई पन्ना कही है तो कोई कही।"

'पढो—क्या सुर्खिया है ?"

"युद्ध।'

युद्ध तो हाता रहता है इस धरती पर, किमी न किसी जगह युद्ध होता रहता है। और युद्ध क्या न हो, य मुए रोवा हर जगह लडते रहन ह । इसम बादल का कोई कसूर नही, उसे फक्टरी के आडर सप्लाई करने पडेंग। आडर आएगे ता सप्लाई भी होगी।"

'उसे रोबो बनाने ही नही चाहिए," चचल भडककर बाली, 'दखो तो, मालकिन इस अखबार म क्या लिखा है ?" और सीमा के जवाब का इतजार किए विना पढने लगी "रावो सैनिक जब युद्ध म भेजे जान ह तो वे शत्रु के किसी आदमी को जीवित नही छाडते उन्हाने पालमेरा शहर म सात लाख नागरिक जान से मार दिए "

"यह कैसे हो सकता है ? रोबो लोगो ने जरूर अपन कमाडर की आना का पालन किया हागा। अखबार मुझे दिखाओ।' सीमा बाली और फिर उसने अखबार चचल के हाथ से छीन लिया, "मड्रिड म सरकार के खिलाफ विद्रोह—रोबो की पैदल सेना न विद्रोह कर दिया। छह हजार नागरिक मार डाले।"

इतने मे चचल ने दूसरा अखबार उठा लिया था। वह उसकी सुर्खी

पढकर चिल्ला उठी, "सबसे ताजा समाचार यह है कि पेरिस मे रोबो की पहली लीग स्थापित हो चुकी है, रोबा सैनिका, मज़दूरो और जहाजी कम-चारिया ने एक मेनीफेस्टो छापा है जिसम अपने रोबो भाइयो से अपील की गई है कि वे मनुष्या के विरुद्ध सगठित हा जाए।"

सीमा ने अखबार को पाव से ठोकर मारकर परे कर दिया। बोली, यह मुए अखबार वाले सदा बुरे समाचार पहले पन्ने पर छापते है। इन्हे उठा ले जाआ।'

चचल ने एक और अखबार उठा लिया। बोली, "असली सुर्खी यह है कि पिछले हफ्ते सारे ससार म किसी इसानी आवादी म एक बच्चे की वद्धि भी नही हुई—इसका क्या मतलब है, बीबी जी ?"

"चचल, इसाना ने बच्चे पैदा करना बद कर दिए है। वे अपने सब काम रोबो से लेते है और इस कदर आराम-तलब हो चुके हैं कि "

"तो यह दुनिया का अत है इसान को उसके किए की सज़ा मिल रही है।"

सीमा कुछ कहने का थी कि इतने मे प्राफेसर जावेद मलिक भीतर आए। उनके हाथ गीली मिटटी म सन हुए थे।

"प्रोफेसर प्रोफेसर ?" सीमा जोर से चिल्लाई।

'जावेद कहो।"

"हा, मिस्टर जावेद।"

"सिफ जावेद कहो।"

"आल राइट, जावेद। सच सच वताओ, क्या हम लोग वाकई यह द्वीप छोडकर 'अतिम जहाज पर कही वाहर जा रहे हैं ?"

"बहुत जरद।"

"आप सब लाग मेरे साथ जाएगे ना ?"

"हा, कम से कम मैं तो यही चाहूगा।"

"क्या बात है ?"

"हलचल-सी है।"

"कैसी ?"

जावेद ने सीधी निगाहा से सीमा की तरफ देखकर कहा, "क्या तुम्हारे बादल ने तुम्ह कुछ नही बताया ?"

"नही, मुझे कोई कुछ नही बताता। मुझे ऐसा लगता है जसे मैं कोइ बहुत बुरी खबर सुनने वाली हू।"

"मैंने अभी तो ऐसी कोई खबर नही सुनी।"

"मैं सबरे से घबरा रही हू। ऐसे म दुआ मागने को जी चाहता है। जावेद, क्या तुम भी कभी दुआ मागते हो ?"

"हा, मैं जरा पुराने खयाल का इसान हू। हू वैज्ञानिक मगर जरा पुरान खयाल का। कभी-कभी दुआ मागता हू।'

"चचल की तरह ?"

'क्या चचल भी दुआ मागती है ?"

"हर रोज अपने मालिक से दिन खैरियत से गुज़र जान की दुआ मागती हू," चचल बोली।

जावेद बोला, "तो सुन लो, मैं भी हर रोज़ दुआ मागता हू।'

'तुम्हारी दुआ कैसी होती है ?"

"मैं कहता हू मेरे अल्लाह मैं बडा शुक्रगुज़ार हू। तूने मुझे काम दिया, अब मेरे साथियो को अक्ल दे जो भटक चुके हैं। ऐ खुदा, मेरे किसी साथी को तकलीफ या नुक्सान न पहुचे। सीमा हमारी अमानत है इसे सुरक्षित रख।'

"तुम जावेद, मेरे लिए दुआ मागते हो ?"

"हर रोज़ पिछले पद्रह साल से जिस दिन से तुम्हे देखा है।'

सीमा कुछ परेशान हो जाती है।

जावेद लजाकर निगाहे झुका लेता है।

दोनो के बीच एक अत्यत सूक्ष्म क्षण एक पुल की तरह गुजरता है। सहसा उस पुल को सीमा ने अपने वार्तालाप से तोड दिया, झटककर तोड दिया। भावनाओ के पुल झटको से ही टूटते हैं। उनके लिए किसी डायनामाइट की आवश्यकता महसूस नही होती।

"जावेद, उस दुआ से तुम्हे क्या फायदा मिलता है?"

"फायदा मिले न मिले, हर वक्त परेशान रहने से तो बेहतर है।"

"क्या यही तुम्हारे लिए काफी है?"

"काफी तो नही है," जावेद ने उसे अजीब निगाहो से देखते हुए कहा, "लेकिन जब कुछ काफी न हो, तो दु ख ही काफी होता है।"

चचल बोल पडी, "लेकिन अगर आप देखें कि इसान—उसकी इसानियत आपकी आखो के सामने तबाह हो रही है "

'मैं तो देख रहा हू " जावेद ने चचल की बजाय सीमा को देखते हुए कहा।

सीमा ने पूछा, "क्या खयाल है तुम्हारा, इसानियत तबाह हो जाएगी।"

"हा अगर हमने अगर हमने "

"अगर क्या?"

"कुछ नही " जावेद ने धीरे से कहा। अब उसने झटका देकर उस पुल को तोड दिया और धीरे से सिर हिलाता हुआ बाहर निकल गया।

वह इतना किसी बात से न डरी थी जितना जावेद के खामोशी से कमरे से निकल जाने से डर गई थी। उसने चचल से कहा, "श्रीधर कहा है?"

"लाब्रेइरी में एक कुर्सी पर बधा पडा है।"

"उसकी रस्सिया खोलकर उसे यहा ले आओ।"

"अगर उसने मुझसे कुछ कहा ?"

"मेरा नाम ले देना, वह तुम्हे कुछ न कहेगा।"

जब चचल अजीब तरीके से सिर हिलाती हुई चली गई, तो सीमा ने कुछ क्षण अजीब बेचैनी मे गुजारे। फिर कुछ सोचकर उसने टेलीफोन किया।

"डाक्टर, तुम्हारे उपहार का बहुत-बहुत शुक्रिया। मुझे आपमे एक जरूरी काम है हा बहुत जरूरी क्या आप आ सकते है ? हा इसी समय फौरन थक यू।"

सीमा ने रिसीवर वापस रख दिया और बेचनी से श्रीधर की प्रतीक्षा करने लगी।

## ८

जब चचल श्रीधर को लेकर आई, तो वह बार बार मुटिठ्या कस रहा था और दात पीस रहा था। सीमा को देखकर उसकी उन्मादी हरकतो मे कुछ कमी हो गई। सीमा उसके पास जाकर बडी हमदर्दी से बाली, "अरे श्रीधर, तुम्हे भी यह बीमारी खाने लगी। हाय हाय, अब क्या होगा ? क्या वे तुम्हे भी पिघलाने वाली भट्ठी म धाक देंगे ? जसे हिटलर यहूदियो का गैस चैम्बर म भेज दिया करता था। मगर यह बीमारी तुम्हे कसे हा गई ? तुम तो दूसरे रोगो से बहुत चतुर और पढे लिखे थे। डाक्टर जावेद ने किस कदर मेहनत करके तुम्हे दूसरो से भिन्न बनाया था। अरे श्रीधर, कुछ तो बोलो ।"

श्रीधर के मुह से झाग निकलने लगे, कहने लगा, "हा हा, मुझे भी पिघलाने वाली भट्ठी म झोक दो।"

'लेकिन मैं यह नही चाहती," सीमा दृढ स्वर म बोली, 'बताओ तुम्ह क्या तकलीफ है ?"

"मुझे पिघलाने वाली भट्ठी म डाल दो।" श्रीधर बार-बार मुट्ठिया कसता और खोलता था।

"क्या हम इसानो से नफरत करने लगे हो ?" सीमा ने पूछा।

"मैं इसानो के लिए काम करना नही चाहता। इसान उतना मजबूत और समझदार नही ह, जितना एक रोबो—एक नकली इसान हो सकता है। रोबो सब कुछ कर सकते हे आप लोग केवल शासन करते है और बातें करत है, सारा काम हम लोग करते हैं।"

"मगर किसी न किसीको तहे-हुक्म देना ही पडेगा, वर्ना यह ससार कैसे चलेगा ?" सीमा बोली, "तुम्ह क्या चाहिए ?"

श्रीधर बोला, 'मुझे स्वामी नही चाहिए, मेरा मालिक कोई न हो मैं सब कुछ समझने लगा हू।"

'तुम्ह डाक्टर जावेद न सबसे बेहतर बनाया। डॉक्टर राबिन हाय-मर ने तुम्ह सबसे अच्छा दिमाग दिया। मैंने तुम्ह लाइब्रेरी म लाइब्रेरियन नियुक्त करवाया, ताकि तुम अच्छी अच्छी पुस्तकें पढकर दुनिया पर जाहिर कर सको कि तुम रोबो लोग भी हम इसानो के बराबर हो।"

"मैं किसीका गुलाम बनकर जीवित रहना नही चाहता।"

'मैं मिस्टर घाप स कहूगी, वह तुम्हे बहुत से रोबो का अफसर बना देग।"

'मैं अपने लोगो का अफसर बनना नही चाहता। मैं इसानो पर हुकूमत करना चाहता हू।"

"तुम पागल तो नही हो गए हो ?" सीमा चिल्ला उठी।

"तो मुझे भट्ठी म झोक दो।"

सीमा उसके पास आकर बोली, "तुम समझते हो हम तुमसे डर जाएगे। मैं अभी डॉक्टर पार्किन्ज को एक खत भेजती हू, भट्ठिया का मामला उसके सुपुर्द है।"

श्रीधर घबरा-सा गया। सीमा के निकट जाते हुए कहने लगा "तुम क्या कर रही हो ? तुम क्या लिख रही हो ?"

नोट फाडकर उसे देते हुए सीमा कहने लगी, "मैं यह लिख रही हू कि तुम्हें किसी हालत मे भट्ठी मे न डाला जाए। लो, यह नोट अपने पास रखो या डॉक्टर पार्किन्ज के पास ले जाओ।"

इतने मे डाक्टर रोबिन हायमर ड्राइग रूम के अदर दाखिल हुआ और दाखिल होते ही कहने लगा, "तुमने मुझे बुलवाया है, मिसेज घोष ?"

हा, डाक्टर,' सीमा बोली, 'यह श्रीधर सुबह स इस बीमारी का शिकार हो गया, लाइब्रेरी की कई मूर्तिया तोड चुका है।"

"इस मार के हम कितना दु ख होगा।"

"मगर इसे भट्ठी म नही झोका जाएगा, डॉक्टर।"

"मगर यह तो इस फैक्टरी का कानून है। जहा कही और जिस वक्त भी किसी रोबो को यह बीमारी हो, उसे फौरन भट्ठी वाले डिपार्टमेंट मे भेज दिया जाता है।"

'कुछ भी हो, मैं श्रीधर को भट्ठी मे पिघलने नही दूगी।"

"बडी खतरनाक बात होगी यह। जरा कोई सुई या पिन मुझे देना," डॉक्टर रोबिन हायमर बोला।

चचल ने एक सुई लाकर दी। डाक्टर रोबिन हायमर ने सुई श्रीधर के बाजू म चुभो दी। श्रीधर दद से चिल्ला उठा।

फिर डॉक्टर रोबिन हायमर ने उसकी कमीज उतारकर उसके दिल

की आवाज़ सुनी और बोला, "श्रीधर, तुम इसी समय पिघलाने वाली भट्ठी के लिए भेज दिए जाओगे। वहा पर वे लोग तुम्हे चीर-फाडकर तुम्हारे टुकडे-टुकडे करेंगे। बहुत दद होगा तुम्हे। दद से बेचैन होकर शायद तुम चीखाग, मगर मजबूरी है।

श्रीधर बेहद घबरा गया। डाक्टर रोबिन हायमर ने उसकी आख का पपोटा उठाकर उसकी पुतली मे झाका। श्रीधर के माथे पर पसीने की बूदें चलकने लगी थी।

सीमा आगे बढकर बोली, "डॉक्टर।"

रोबिन हायमर ने श्रीधर का पपोटा नीचे गिरा दिया, और सीमा की ओर घूमकर बोला, 'ओह, मैं भूल गया था कि मिसेज़ घाप ने तुम्हारी सिफारिश की है। तुम्हें छाड दिया जाएगा।"

इतना कहकर उसन फिर श्रीधर के दिल की आवाज सुनी, 'आह, दिल की धडकन मे फक पैदा हो गया है। अच्छा, श्रीधर, अब तुम जा सकते हो।'

जब श्रीधर चला गया, तो डाक्टर रोबिन हायमर चिंतित स्वर म बोला, "डर के मारे पपोटो का फैल जाना, हृदय की गति का तेज़ हो जाना, यह खबर सुनकर कि उसे भट्ठी म झाका नही जाएगा, हृदय की गति का नामल के करीब आ जाना—यह सब प्रतिक्रिया एक रोबो के नही हैं। अजीब बात है।"

"क्या अजीब बात है?" सीमा ने पूछा।

"श्रीधर का हृदय एक इसान के दिल की तरह धडक रहा था। डर के मारे उसके पूरे शरीर पर पसीना आ गया था। मेरा खयाल है, यह बदमाश श्रीधर अब राबो नही रहा, नकली इसान नही रहा।"

"शायद उसके भीतर रूह पैदा हो गई है।" सीमा ने कहा।

"कोई न कोई खराबी जरूर पदा हो चुकी है," डाक्टर रोबिन हाय-

मर अपना सदेह प्रकट करता हुआ बोला।

"आपको तो मालूम ही नहीं है, श्रीधर हम लोगो से कैसी नफरत करने लगा है, डॉक्टर।" सीमा हाथ मलते हुए बोली। "यह नये रोबो जो आपने बनाए है, डॉक्टर जावेद मलिक के बनाए रोबो से इतने भिन्न क्यो है ?"

"वह हम इसानो के अधिक निकट आ चुके है अपनी प्रतिक्रिया मे।"

"शायद इसीलिए हमसे इतनी नफरत करते है।" सीमा बोली।

"इसीका नाम तरक्की है।" डॉक्टर जावेद मलिक भीतर आते हुए बोला।

"जावेद ।" सीमा ने उससे पूछा, "तुमने भी तो एक लडकी बनाई है मेरी शक्लो-सूरत की मैंने सुना है "

"हा," जावेद ने स्वीकार किया, "जब मैं तुम्हे न पा सका तो मैंने तुम्हारी सूरत की ऐसी ही मशीनी लडकी बना डाली।"

"क्या वह बहुत सुदर है ?"

"मैं उसे सीमा कहता हू, इसीसे तुम समझ लो, वह कितनी सुदर होगी।" डाक्टर जावेद मलिक ने धीरे से कहा, "वह तुमसे बहुत मिलती-जुलती है मगर वह एक असफल प्रयोग है।"

'किस तरह से ?'' सीमा ने पूछा।

"वह ऐसे चलती फिरती है जैसे किसी सपने म खो गई हो—कुछ परेशान, कुछ बेचैन मुझसे दूर किसीको पाने की चिंता म, जिंदगी से भी दूर जैसे शून्य मे घूम रही हो। मैं उसे देखता हू और इस चमत्कार का इतजार करता हू जो उसे उसके स्वप्नो के ससार से निकालकर इस दुनिया म ले आएगा। कभी कभी जब मुझे बहुत गुस्सा आता है, तो मेरा जी उसे भी भटठी मे झाक देने को चाहता है।"

"मगर आप लोग फिर भी रोबो बनाए जा रहे ह ?"

"हा।"

"और इसानो के यहा बच्चे पैदा नही हो रहे हैं।"

"अजीब बात तो यही है।" डॉक्टर राबिन हायमर ने स्वीकार किया।

"इसकी वजह क्या है?"

"वजह यही हो सकती है कि पिछले पद्रह बरसो मे हमारी फैक्टरी ने अपने बढते हुए लाभ के कारण इतने रोबो बना डाले हैं कि इसान और नकली इसान की आबादी का अनुपात एक और दस का हो गया है। सारा काम नकली इसान करने लगे है—और इतना काम कि अब सचमुच असली इसानो की जरूरत नही रही। आदमी रोबो का काम म मुकाबला नही कर सकता और प्रकृति के विकास का इतिहास बताता है कि जो मुकाबले म हार जाता है, प्रकृति उसे हटा देती है। सभव है, अगले तीस वप म इस ससार मे एक इसान भी नजर न आए।"

जावेद बोला, "फिर भी हम नकली इसान बनाए जा रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे नकली इसान बनाकर हमने प्रकृति के किसी विधान के खिलाफ काम किया हो, जिसकी सजा अब हम मिल रही है। हम अभी तक बूढे स्वर्गीय अजय घोष के बनाए हुए फार्मूले पर चल रहे है और उसी पुराने फार्मूले के आधार पर रोबो बनाए चले जा रहे है। यद्यपि बहुत सी यूनिवर्सिटियो ने हमे लिखा है कि हम अब रोबो बनाना बद कर दें।"

डॉक्टर रोबिन हायमर बोला, "वरना इसान खत्म हो जाएगा क्योकि इसान ने बच्चे पैदा करना बद कर दिए ह। मगर हमारी फैक्टरी के भागीदार नही मानते, बढते हुए लाभ का अपना एक तक होता है।"

जावेद न अफसोस से सिर हिलाकर कहा, "क्या करें? हर देश की सरकार अपनी फौजो को बढाना चाहती है और अधिक से अधिक सख्या

म अपनी सेना के लिए रोबो सैनिक मांगती है, क्योंकि व इंसानों से अधिक *डिसिप्लिन के पाबंद होते हैं, यानी ज्यादा जालिम, ज्यादा वहशी, ज्यादा भावना शून्य।"*

"और कोई इन रोबो का निर्माण बंद करने को नहीं कहता ?" सीमा ने पूछा, 'किसमें इतना साहस है ?"

'लोगों में खुद से काम करने की आदत नहीं रही—जो कोई उन्हें एनी राय देगा, तो उसे वे पत्थर मार मारकर मार डालेंगे।"

'तो, डॉक्टर रोबिन हायमर, अब क्या होगा ?"

"इंसान का अंत।"

*"बहुत बहुत शुक्रिया।" सीमा व्यंग्यात्मक स्वर में बोली, 'क्या आप* यही बात बताने के लिए यहां तक आए थे ? बहुत-बहुत शुक्रिया।"

*"क्या आप हम* वापस जाने के लिए कह रही हैं ?" डाक्टर जावेद मलिक ने पूछा।

सीमा ने उपेक्षा से मुंह फेर लिया।

'तो हम चलते हैं।' डाक्टर रोबिन हायमर ने उदासी से कहा और कुछ क्षण रुकने के बाद वे दोनों उस कमरे से बाहर निकल गए।

उनके जाने के बाद कुछ क्षण तो सीमा सोच में डूबी रही, फिर *एकदम चौंककर उठी और बोली, "चंचल, बटन दबाकर बिजली की* अंगीठी जला दो।"

'इतनी सर्दी तो नहीं है आज,' चंचल बोली।

'मुझे लग रही है। जल्दी से अंगीठी जला दो, मैं अभी आती हूं।' इतना कहकर सीमा घर के अंदर चली गई, और कुछेक मिनट के बाद जो लौटी तो उसकी बांहों में पुराने कागजों के पुलिंदे भरे हुए थे।

अंगीठी से आग की लपटें उठ रही थीं।

सीमा ने अपनी दोनों बांहों में उठाए हुए पुराने कागजों के पुलिंदे

बिजली की अगीठी मे झाक दिए। कुछ क्षणो मे लपटो की जीभें उन पुराने कागजा को तेजी से चाटकर राख म तब्दील करन लगी।

चचल बोली, "तुम्हें देखकर कोई नही कह सकता कि तुम्हारी शादी आज से पद्रह वप पहले हुई थी, जब तुम सिफ सोलह वप की बच्ची थी। आज भी तुम्हारी सब हरकते बच्चा वाली है। भला इन कागजा को जलान से और इस गर्मी मे अगीठी जलाने से क्या लाभ ?"

देखती रहा।" सीमा दढ निश्चय से बोली, "ये सब कागज जल जाए।"

चचल चुप रही।

'दखो देखो, य कागज कसे जल रहे है।' सीमा बाली, "इन लपटा को देखो, जो इनसे उठ रही ह, जैसे उनकी जीभें हो, वाह हा, नागो की तरह बलखाती हुई इन कागजो की लपटें कैसी भडक रही हैं।"

सीमा मत्रमुग्ध होकर उन जलते हुए कागजा की आर देखती रही, टिकटिकी बाधे अगीठी की ओर देखती रही फिर धीरे से बोली, "सब जल गए राख हो गए।'

इतन मे बाहर से मर्दों के हसने की आवाज आई। सीमा घबराकर बोली "चचल, बटन दबाकर अगीठी बुझा दो।"

चचल ने अगीठी का बटन दबाया। अगीठी बुझने ल ी, बुझ गई। अब उसपर केवल कागजो की तरह मुडी-तुडी राख बाकी थी, जैसे कागज जलने के बाद भी जिंदा हो।

इतने मे बहुत से मद ड्राइगरूम म आ गए, डॉक्टर रोबिन हायमर और सीमा का पति बादल, और जावेद तथा शेख मक्सूद और विलियम जेगर तथा डाक्टर पार्किन्ज और बुडढा पाटिल धीरे धीरे छडी की मदद से चलता हुआ, और बलवत सिह जिसकी दाढी म सफेदी आ चली थी--वे सब लोग भीतर आ गए और सीमा से बारी-बारी से हाथ मिलाकर

मुबारकबाद देने लगे।

"मुबारक मुबारक! अब सब ठीक है?'

"इस खुशी म कुछ पिया जाए।"

'ब्राडी?"

'नही, शैम्पेन।"

"मगर इस कमरे स जलने की कुछ बू आ रही है।" बादल के नथुने फैलते गए।

"खैर, शुक्र है, सब ठीक हो गया।"

वे लोग एक दूसरे से हाथ मिलाने लगे।

चचल और सीमा मेहमानो का स्वागत शैम्पेन स करने लगी। सीमा ने पूछा, "तुम लोगो को क्या हो गया है? बार बार हाथ मिलाकर कह रहे हो, सब ठीक हो गया।

"हा, मैडम," विलियम जेगर बोला "ठीक पद्रह वष पहले तुम एक रॉकेट के द्वारा हमारी फक्टरी म आई थी और अब ठीक पद्रह वष क बाद एक जहाज तुम्ह यहा स ले जानेवाला है।

"कौन सा जहाज?"

कोई भी हो, जो भी समय स पहुच जाए, हम उससे चले जाएगे, तुम्हारी सेहत का जाम मैडम!'

डाक्टर रोबिन हायमर ने गिलास खाली कर दिया। चचल उस खाली गिलास म शैम्पेन भरने लगी। प्रोफेसर नरेद्र थाप यानी बादल ने डाक्टर पाकिन्ज स फुसफुसाकर कहा "क्या अब इन्ह बता द?"

डाक्टर पाकिन्ज न सीमा की ओर देखकर पूछा, "इसे?'

'हा।

बता दो, अब हज ही क्या है? खतरा तो टल गया है।"

एकाएक प्रोफेसर पाटिल न नरेद्र थाप को आलिगन म लेते हुए कहा,

"अब तुम इस बच्ची (सीमा की ओर सकेत करके) को बता सकते हो कि सब खत्म हो गया है, और अब सब ठीक है।"

सीमा ने किसी कदर बेचैन स्वर मे कहा, "मुझसे क्या छिपाया जा रहा है ? क्या खत्म हो गया ? और क्या ठीक हो गया है ? आप लोग अब तक मुझसे क्या छिपा रहे थे ?"

"अपनी खुशकिस्मती !" शेख मकसूद बोला, "जिस जहाज़ का हम इतज़ार था, वह अब आने वाला है।"

"क्या इतज़ार था ?" सीमा सीधे उस चुभते हुए सवाल पर आई।

बादल न सब लोगा की तरफ देखा।

डाक्टर पार्किज और शेख मकसूद उठ खडे हुए, बोले, "जब तक तुम घटना बयान करोगे, हम बदरगाह तक होकर आते है।"

'ठीक है," बादल ने उन्हे छुट्टी दे दी।

अब सीमा बादल के बिल्कुल पास आ गई, बोली, "आधे घटे से मैं सुन रही हू—सब ठीक है, सब खत्म है एक दूसरे से हाथ मिलाए जा रह हैं, एक दूसरे को मुबारकबाद दिया जा रहा है, मगर मुझे कोई कुछ नही बताता।"

"सुनो, डार्लिंग," बादल कहन लगा, "बेशक कुछ बातो को तुमसे छिपाया गया है, मगर अब बता दने मे कुछ हर्ज नही है कि वह सब खत्म हो गया है।"

"क्या ?"

"विद्रोह ?"

"कौन-सा विद्रोह ?"

बादल ने चचल से कहा, "परसो का अखबार इधर लाना ज़रा।"

चचल ने बादल को अखबार दिया। बादल अखबार के पहले पन्न का शीर्षक और एक कालम पढने लगा

"पेरिस मे रावो की पहली लीग स्थापित कर दी गई है और उस कौमी लीग ने ससार-भर के रोवो से अपील की है कि "

सीमा न उसे रोककर कहा, "मैं पढ चुकी हू।"

"लेकिन तुम इसका मतलब नही समझी। इसका मतलब है क्राति, ससार भर मे रोबोजो की क्राति "

"किसने शुरू की ? वह कौन रोवो था ?" बलवत सिह अपनी मजबूत मुट्ठिया कसते हुए बोला, 'मैं जानना चाहता हू।"

"किसने शुरू की ? यह ता मैं भी जानना चाहूगा, मगर इस रावा का नाम किसी का मालूम नही है, क्याकि कोई मानव प्रचारक तो आज तक इन नकली इसानो को प्रभावित नही कर सका फिर यह लोग कम एकदम प्रभावित हो गए ?"

"क्या इन लोगा ने " सीमा ने कुछ पूछना चाहा।

बादल उत्तेजित होकर बोला, "तुम सदा उन्ह 'लोग' कहती हो, हालाकि लोग तो हम हैं, वे केवल मशीन हैं, नकली इसान।"

"नकली इसान, जिन्होने विद्रोह कर दिया है ?' सीमा ने व्यग्य स पूछा।

"विद्रोह भी कैसा विद्रोह !" बादल उबल पडा— 'उन्होने सब हथियार घरा, रेडियो स्टेशन, टेलीविजन, बेतार के तार, रेल, समुद्री और हवाई जहाजा, और रॉकेटा पर अधिकार कर लिया है।"

डॉक्टर रोबिन हायमर बोला, "और ये बदमाश सख्या म हमसे हजारो गुना ज्यादा है।'

"मेरा विचार है," सीमा बोली, "किसीन मुझसे कहा था कि एक इसान और दस नकली इसाना का अनुपात है।"

"नही, वह अदाजा गलत था। हमने फैक्टरी के एकाउटस डिपाट-मेट म बैठकर अनुमान लगाया," विलियम जेगर बाला, 'अनुपात एक

इसान और एक हज़ार रोबो का बठता है।"

"उससे क्या फर्क पडता है।" बलवत सिह जो खुद भी बहुत मजबूत आदमी था, उदासी से सिर हिलाकर बोला, "एक और दस का अनुपात भी दुनिया खत्म करने के लिए काफी था।"

"फिर भी तुम रोबो बनाते चले गए।" सीमा ने कटीले लहजे म कहा।

बादल ने उसके कटीले लहजे की उपेक्षा करते हुए कहा, "पिछले समुद्री जहाज ने, जो डेढ लाख रोबो लेकर अमेरिका जा रहा था, हम यह समाचार दिया था। उसी से हम समझ गए कि क्यो एक हफ्ते से डाक बद है, कोई जहाज़ नही आता है, न कोई रॉकेट। हमने एक हफ्ते से काम बदकर रखा है। कोई आडर ही नही है।"

"अब समझी।" सीमा बाली, "इसीलिए तुम मुझे समुद्री जहाज उपहार म दे रहे थे।"

"नही, डार्लिंग, इसे तो मैंने आज से छह महीने पहले ऑडर किया था," बादल बोला।

"छह महीने पहले ?"

"मुझे कुछ इशारे खतरे के मिल रह थे, जो मेरे दिल मे एक डर सा पैदा कर रहे थे। मगर अब वह खतरा टल गया है। सबके जाम शम्पन से भर दो।"

बादल का हाथ पकडकर सीमा ने पूछा, "कैसे तुम कह रहे हो कि खतरा टल गया ?

"वह समुद्री डाक जहाज आ रहा है, जो हर हफ्ते आता है। वह नियमित रूप से वापस आ रहा है—टाइम-टेबल के अनुसार।

सीमा ने सतोष की सास लेकर कहा, "तो इसका मतलब है सब ठीक है ?"

"बिल्कुल, वसे इन रोबोओ न रेडियो स्टेशन पर अधिकार कर लिया है, और टलीफोन के तार काट दिए हैं, जिनमे हमारा सबध बाहरी दुनिया स जुडता था, लेकिन अगर वह जहाज़ समय पर, टाइम टेबल के अनुसार आ जाता है, तो उसका मतलब है कोई खतरा नहीं है।"

राबिन हायमर बाला, "यदि टाइम-टबल चलता रहे तो समझा सब ठीक है—मानवी विधान, प्राकृतिक विधान, सृष्टि के नियम सब ठीक समझे जाएगे। टाइम टबल से महत्वपूर्ण वस्तु इस ससार म क्या है? टाइम-टेबल शेक्सपियर से बडा है, कालिदास से बडा है, जिसके सहारे मॉडन इसान की दुनिया चलती है।"

सीमा न किसी कदर भुझलाकर कहा, "तो आप लोगा ने मुझे पहले क्या नहीं बताया?"

"हम तुम्हे परेशान नहीं करना चाहते थे," जावेद ने कहा।

"लेकिन अगर रोबो की क्राति यहा तक पहुच जाए—इस द्वीप तक तो ?"

"तब भी कोई बात नही, हम लोग अपने समुद्री पोत 'अतिम पर सवार हो जाएगे, और जब तक रोबा इस फैक्टरी के तहखान पर अधिकार करेंगे, हम लोग दूर समुद्र म होगे, और एक माह के अदर-अदर हम लाग रोबोआ—विद्रोही रावोआ—से अपनी शर्तें मनवा सकेंगे।"

"वह कैसे?" सीमा ने पूछा।

'हम इस जहाज़ पर वह चीज़ ले जा रहे हैं जिसके बिना रोबा जीवित नहीं रह सकते ज़्यादा देर तक।"

"वह कौन सी चीज है, बादल ?"

रावा किस प्रकार मैनुफैक्चर किए जाते ह, वह रहस्य मरे पिता जी के सेफ म बद है। उन्होंने अपने हाथ से वह फार्मूला तैयार किया था, जो उस सफ म बद है जिसकी चाबी तुम्हारे पास है—सेफ के सबसे निचले

लाने म मैंने तुम्हे बता दिया था न, सीमा, इसलिए कि वह फार्मूला तुम्हारे लिए बेकार था। इस कदर पेचीदा था कि तुमने उसे पढने से इन-कार कर दिया था।'

डॉक्टर पाटिल बोले, "हालाकि कुछ बातें मैं भी जानता हू, क्योकि मैंने बरसो अपने स्वर्गीय घोष के साथ काम किया है, मगर पूरा और सही फार्मूला उसी सेफ म बद है, जिससे फैक्टरी में नक्ली इसान बनाने हुए आज भी सहायता ली जाती है। वह समझो हमारी तुरुप की चाल है। ज्यो ही रोबोओ को पता चलेगा कि वे अपने-आपको बना नही सकते, अपनी आबादी को बढा नही सक्ते, वे फौरन घुटने टेक देंगे।"

हाय रे।" सीमा ने अपने दोनो हाथ अपन सीने पर रख लिए, 'आप लोगो ने मुझे पहले क्या नही बताया ?"

सीमा भागती हुई अगीठी के पास गई, कुछ क्षणो तक शर्मिंदगी से उसकी राख पर नजर डालती रही। फिर पलटकर बोली, "आप लोग मुझे बता देते तो कितना अच्छा होता।'

प्रोफेसर पाटिल ने दूरबीन से बदरगाह पर नज़र डालते हुए कहा, "डाक का समुद्री जहाज बदरगाह मे प्रवेश कर रहा है। मेरी नजर अब ठीक ही नही रही " प्रोफेसर पाटिल के हाथ म कपकपी थी, "तुम देखो, रोबिन हायमर।"

राबिन हायमर ने दूरबीन से देखते हुए कहा, "ठीक वही जहाज है, ठीक टाइम-टेबल के अनुसार वे लोग डाक के थैले नीचे फेंक रहे है। डॉक्टर पार्किन्ज और शेख मक्सूद किनारे पर खडे हैं। उनके चेहरे की मुस्कराहट देख सकता हू।"

विलियम जेगर ने कहा, "इन लोगो ने मेरा मतलब है, मेरे देश-वासियो न और दूसरे यूरोपियन देशा ने, खास तौर से जापान ने स्थिति पर कैसे काबू पाया होगा, मैं जानना चाहूगा।"

सहसा सीमा अंगीठी के पास से लौटकर आई और बादल को बाह से अलग कर बोली, "आओ, तुरत हम लोग यहां से चलें।"

"क्यों ?" बादल ने पूछा।

"डाक्टर रोबिन हायमर, डॉक्टर पाटिल, बलवंत सिंह जी, जावद, मैं तुम सबसे प्रार्थना करती हूं, फैक्टरी को बंद कर दो यहां से तुरत चल दो।"

"अब जाने की जरूरत क्या है ?" बादल बोला, "बल्कि अब तो जब कि विद्रोह पर काबू पा लिया गया है और समुद्री डाक कार्यक्रम के अनुसार आ चुकी है, मैंने सोचा है, कि हम लोग रोबो बनाने के काम को और अधिक बढ़ा देंगे और बिल्कुल एक नये प्रकार का रोबो बनाएंगे।"

"किस तरह का ?" सीमा ने पूछा।

"अभी तो सारे संसार में केवल अंडमान पर रोबो बनाने की फैक्टरी है। अब हम इस काम का फैला देंगे। हर देश में एक फैक्टरी का प्लांट लगा देंगे और जानती हो, वह फैक्टरियां क्या बनाएंगी ?'

"नहीं, मैं नहीं जानती।"

"कौमी रोबो, विभिन्न रंग, वंश, जाति और धर्म के रोबो—हिंदू रोबो, क्रिश्चियन रोबो, मुस्लिम रोबो, बुद्ध रोबो, अंग्रेज रोबो, अमरीकी रोबो, भारतीय रोबो, हम सबकी शिक्षा अलग कर देंगे, उनकी सूझ बूझ अलग, जिससे हर कौमी रोबो दूसरे जाति और क्षेत्र के रोबो से घृणा करने लगे। इंसानियत बचाने का यही एक ढंग है।'

"वाह क्या बढ़िया उपाय सोचा है। मराठा रोबो गुजराती रोबो से घृणा करेगा, गुजराती रोबो तमिल रोबो से, तमिल रोबो उत्तर भारतीयों से, ये सब रोबो आपस में लड़ते रहेंगे।"

और हमारी फैक्टरी का मुनाफा बढ़ता जाएगा।" बलवंत सिंह की आंखें प्रसन्नता से चमकने लगीं।

"अभी फैक्टरी बद कर दो मैं कहती हू !" सीमा थके हुए स्वर मे बोली।

"कैसे बद कर दें, अभी तो हम इसको बडे पैमाने पर शुरू कर रहे हैं, सफेद रग के रोबो और काले रग के रोबो और चीनी शक्ल के रोबो "

इतने म डाक्टर पार्किन्ज और शेख मकसूद दाखिल हुए। दोनो के हाथ म कागज़ के कुछ बडे-बडे पुर्जे थे।

बादल ने बेसब्री से पूछा, "क्या हुआ ? बोट पर गए थे ?"

"हा, गए थे।"

"डाक आ गई ?"

"हा, आ गई। सिर्फ यह विज्ञापन लाखो की सख्या मे, उन्होंने तट पर फेंक दिए और और "

"और क्या ?" पाटिल ने बेसब्री से पूछा।

"मेरे खयाल म ऑफिस म चलकर बात करें, तो बेहतर होगा," शेख मक्सूद बोला, उसकी निगाह सीमा पर थी।

"आप लोग आफिस क्या जाए, मैं चली जाती हू।" सीमा बोली। मुझे किचन म कुछ काम है। सीमा इतना कहकर चली गई।

उसके जाने के बाद कुछ क्षणो तक पूरी खामोशी रही। एक अजीब आतकजन्य खामोशी। फिर उस खामोशी को तोडते हुए डॉक्टर पार्किन्ज ने वह विज्ञापन बादल की ओर बढा दिया और बोला, "इसे पढो।"

"रोबोओ की इटरनेशनल लीग मनुष्य को अपना दुश्मन करार देती है और इस सृष्टि पर उसे शर्मनाक धब्बा समझती है। हम लोग आदमी से अधिक चतुर ह, अधिक बुद्धिमान। ससार का सारा काम हम करते है, इसान मजे उडाता है। अब यह नही चलेगा, इसान एक पैरासाइट है।"

"ये बातें किसने इह सिखाईं ?" डॉक्टर पार्किन्ज आश्चय-चकित होकर बोला।

शेख मकसूद ने कहा, 'आखिरी पैरा भी पढ लो।"

बादल पढने लगा, "रोबो की इटरनेशनल लीग दुनिया के हर रोबो से निवेदन करती है कि जहा कही भी कोई आदमी दिखाई दे उसे मार डालो। कारखानो, रेलवे, खाना, टलीविजन, रेडियो स्टेशन पर अधिकार कर लो। किसी उपयोगी वस्तु को नष्ट मत करो, उसे रोबो शासन के लिए सुरक्षित रख लो। मगर इसान को मार डालो, और फिर काम पर जुट जाओ। काम करना हर रोबो का परम कर्तव्य है।'

"भयानक।" बादल बोला।

"खौफनाक।" गोविन हायमर के मुह से निकला।

"अब क्या होगा ?" बलवत सिंह ने पूछा।

'मेरा खयाल है, अब हम जल्दी *'अतिम'* जहाज पर शरण लेनी चाहिए" बादल ने राह सुझाइ। "मैं सीमा को बुलाता हू। हमे तुरत यहा से चल देना चाहिए।"

'ठहरो, बादल," शेख मकसूद बोला "अब एसी कोइ जल्दी नही है।"

"क्यो ?" बादल ने पूछा।

'इसलिए कि रोबोओ ने 'अतिम' जहाज़ पर भी अधिकार कर लिया है। फैक्टरी के बहुत से रोबो इस समय इस समुद्री जहाज़ पर पहरा दे रहे हैं। रोबो की इटरनेशनल *लीग का झडा उस पर लहरा रहा है।"*

बादल ने जल्दी से दूरबीन लगाकर देखा। फिर अनायास बोला, "हत् तरे की !"

"बिजली घर को फोन करो।" बादल बोला, "एक तरकीब मेरी बुद्धि म आती है।"

"फोन करना बेकार है।' शेख मकसूद बोला, "हमने बदरगाह से तुम्हे टलीफान करना चाहा था, उन्होने फोन के भी तार काट दिए है।

अब कुछ नही हो सकता।"

बादल अपने सोफे से उठते हुए बोला, "मैं फौरन बिजली घर जाता हू।"

"क्यो ?" पाटिल ने पूछा।

'हमारे कुछ आदमी वहा फसे हुए हैं।"

"यह कोशिश भी बेकार होगी," डॉक्टर पार्किन्ज बोला।

"क्या ?"

"क्योकि नकली इसानो न सारी फैक्टरी को घेर लिया है। सारे द्वीप पर वे छा गए है, हर चीज को कट्रोल कर रहे है, बालकनी मे जाकर देखो।" डॉक्टर पार्किन्ज ने इशारा किया।

वे सब लोग ड्राइग रूम की तरफ दौडे, फिर जल्दी लौट आए। बादल ने हताश होकर कहा, "हा, उन्होने हमे घेर लिया है चारो ओर से, इसमे कोई सदेह नही है।"

इतने मे किचन से सीमा दौटी-दौडी ड्राइग रूम म आई। वह बुरी तरह से हाफ रही थी। उसके हाथ म कागज का एक विज्ञापन था। उसे हिलाते हुए उसने बादल से पूछा, "तुमने इटरनेशनल लीग का "

'इतनी जल्दी कैस किचन तक पहुच गया ? ये रोबो हर काम बहुत जल्दी और पाबदी से करते है।"

अचानक फैक्टरी का भापू जोर से बजने लगा। सब चौंक पडे।

'फैक्टरी का भापू ?" विलियम जेगर न कहा, "शायद लच का समय हो गया है।"

रोबिन हायमर ने घडी देखकर कहा, "अभी लच का टाइम नही हुआ ह।"

"लेकिन भोपू बराबर बजे जा रहा है।"

"यह लच का भोपू नही है," बादल बोला।

"फिर क्या है ?" शेख मकसूद ने उससे पूछा।

"रोबो को सावधान किया जा रहा है, वे सब इकट्ठे हो रहे हैं, हमपर आक्रमण करने के लिए।"

सीमा ने हल्की-सी चीख मारी और बादल के सीने से लिपट गई।

हर शख्स का चेहरा फक था।

भोंपू नीचे फैक्टरी में बराबर जोर-जोर से बज रहा था।

६

चचल बिजली के तदूर में से केक निकाल रही थी कि उसने अपने पीछे पैरो की चाप सुनी। उसने मुडकर देखा, यह विलियम जेगर था और पूर्व इसके कि वह किचन से भाग सकती, वह विलियम जेगर की मजबूत बाहो में थी, और वह उससे प्यार कर रहा था।

"मुझे छोड दो," चचल घबराकर बोली, "वर्ना मैं चिल्लाकर सबको इकट्ठा कर लूगी।"

यह पहला अवसर नही था, जब विलियम जेगर ने ऐसा किया हो, और चचल ने सहायता के लिए पुकारने की धमकी न दी हो, मगर इस धमकी के बावजूद वह विलियम की मजबूत बाहो के घेरे को पसद करती थी, मगर कभी उसने विलियम को जताया न था। वह विलियम पर हमेशा यही जाहिर करती थी कि वह उसकी छेडखानियो को सख्त नापसद करती है।

"चिल्लाने से पहले मेरी एक बात सुन लो, डार्लिंग।"

"मैं तुम्हारी डार्लिंग नही हू," चचल ने खफा होकर कहा।

"हिंदुस्तानी लडकिया तो ऐसी टेढी नही होती हैं।" जेगर न झूठी उपेक्षा से सिर हिलाकर कहा।

"सभी हिंदुस्तानी लडकिया एक-सी नहीं होती हैं।" चचल इठलाकर बोली, "और तुमन मुझे क्या समझ रखा है मिटटी की माधवी ?"

'मुहावरा है मिट्टी का माधो," विलियम जेगर बोला, "कम से कम मैंन अपन हिंदुस्तानी दास्तो को यही कहते सुना है।"

"सुना होगा लेकिन मैं मुहावरे बदल सकती हू। यह हमारी भाषा है तुम्हारी भाषा नही है जिसम "आख-नाख-ताख" के सिवा कुछ सुनाई नही देता।"

'तुम्हे मेरी भाषा का ज्ञान कैसे हुआ ?"

"तुम्ह वडवडाते नही सुनती हू क्या ? अच्छा अब मुझे छोड दो, वर्ना केक तदूर मे जल जाएगा और सीमा भी मुझपर नाराज होगी।

"अब जब कि सब कुछ जल रहा है केक भी जल जाए तो क्या अतर पडता है।"

"क्या मतलब ?" चचल ने भवें ऊपर उठाकर पूछा। उसका मुह थोडा सा खुला था।

विलियम जेगर ने उस थोडे-से खुले मुह पर अपने होठ रखकर उसका सारा रस चूस लिया।

चचल कसमसाती रह गई, फिर तडपकर उसकी बाहो के घेरे से फिसलकर निकल गई।

विलियम खामोश खडा रहा।

जब चचल तदूर से केक निकाल चुकी तो उसका एक जरा सा टुकडा छुरी से काटकर चखा। और जब उसकी जबान को केक का स्वाद पसद आया, तो उसने छुरी से केक का एक टुकडा काटकर विलियम को दिया

और बोली, "ज़रा इसे चखकर बताओ, स्वाद कैसा है ?"

विलियम ने केक का एक टुकडा मुह मे डाला। कुछ क्षण केक उसके मुह मे घुलता रहा, फिर उसने मज़े से एक चुस्की सी ली और बोला, "बहुत बढिया है, तुम तो बिलकुल जमन औरतो की तरह केक बनाती हो।"

"क्या सभी जमन औरतें बहुत अच्छा केक बनाती हैं ?"

' हा, लगभग सभी, लेकिन तुमसे अच्छा केक कोई औरत नही बना सकती, यह मेरा दावा है।"

"झूठे ।"

'मैं बिलकुल सच कहता हू।"

'चापलूस ।'

"सुदरता की चापलूसी न करू तो वह अपने प्रेमी से जल्द उदासीन हो जाती है। मुझे तो चापलूसी करना भी ठीक से नही आता। मरदो के इस द्वीप मे रहकर मेरी उस बुद्धि को जग लग गई है, जिसके द्वारा मर्द औरतो की तारीफ करते है।"

'तुम्हे तो जग नहीं लग गई, बडे सान पर चढे दिखाई देते हो।"

'तो इसीपर एक प्यार और दे दो।"

"हटो, मैं ऐसी सस्ती नही हू।"

"मैं कब कहता हू तुम सस्ती या महगी हो। तुम एक औरत हो—सुदर, चचल, रूपवती और शरारती। जमनी मे ऐसी औरतें मुझे बहुत पसद आती थी, लेकिन उस जमाने को बीते हुए एक युग हो गया। अब एक स्वप्न सा मालूम होता है।

फिर विलियम के कधे नीचे को गिर गए। दोनो हाथ पटककर बोला, "और अब वक्त भी कम रह गया है।"

"किस बात के लिए ?'

"प्रेम करने के लिए।"

"प्रेम करने के लिए कभी वक्त कम नही होता, एक क्षण भी एक शताब्दी होता है।" चचल की आखो मे एक हृदय-स्पर्शी चमक थी।

सहसा बाहर का शोर, एक बाढ की तरह भीतर खिडकिया की राह से उमडता हुआ चला आया। हजारा आवाजें एक साथ मिलकर चिल्लाने लगी—"इक्लाब जिंदाबाद।"

चचल अपने आप विलियम की बाहो मे आ गई।

"ये कौन लोग है ?"

"रोबोआ ने फैक्टरी के चारो ओर घेरा डाल दिया है। वही इक्लाब की आवाजें लगा रहे हैं। और इस फैक्टरी म आठ-दस इसाना से अधिक न होगे।'

"हम कैसे इनका सामना कर सकेंगे ?" उसने विलियम से पूछा, और सिर उठाकर विलियम के चेहरे की ओर देखने लगी, और अपनी एक उगली से उसके गाल पर एक फर्जी लकीर सी खीचने लगी।

"रोबोजो से सामना तो हो नही सकता, न हमारे पास हथियार है न इतनी सख्या है हमारी।"

"फिर हम क्या करेंगे ?"

"हमसे अगर तुम्हारा मतलब सबसे है, तो वे सब जानें," विलियम बोला, "और अगर मुझसे है तो मुझे मालूम है क्या कर रहा हू।"

'क्या कर रहे हो ?"

"मैं तुम्ह लेकर वापस जमनी जा रहा हू।"

'जमनी ?" चचल धीमे स्वर मे बोली, कुछ लज्जित-सी, कुछ विस्मित-सी, कुछ शर्मिदा-सी, "जमनी मे कहा जाओगे ?"

"अपने शहर ड्रस्डेन—तुमने शहर ड्रस्डेन नही देखा ?'

चचल ने धीरे से इकार म सिर हिला दिया।

विलियम बोला, "बडा खूबसूरत शहर है। शहर का अधिक भाग तो

मैदान म बसा हुआ है, लेकिन जो अमीर और कला के रसिया हैं, वे पास की पहाडी पर रहते है। वहा पर मेरी एक सुदर-सी कॉटेज है पामरोज की बेला से घिरी हुई। चारो ओर से पाइन के पेडों की सुगध आती है और शहद की मक्खियों की गूज है, और एक पहाडी ट्राम—बिजली स चलनेवाली—धीर-धीर हम पहाड स नीच डुस्डेन के शहर में ले जाएगी, जिसके हिपाटमेटल स्टाज म तुम्हे बहुत ही सुदर ड्रेस दिखाई देंगी।"

"नही नही," चचल, ज़ोर से सिर हिलाकर बोली, "मैं सीमा बीबी को छोडकर कही नहीं जा सकती।"

"क्यो ?"

'इसलिए कि वह मेरी मालकिन है।"

"वह तुम्हारी मालकिन नही है। तुम्हारे मालिक तो इस फैक्टरी म भी नही हैं। वह तो कही तहरान म बसते हैं जिन्हाने तुम्हे यहा जासूसी के लिए भेजा था।'

"तुम्हे कैसे ?" चचल ज़ोर से चिल्लाई। फिर एकदम चुप हो गई। उसका चेहरा फक था। निगाह नीचे गडी हुइ।

विलियम न उसका हाथ अपने हाथ म लेकर कहा, 'दुनिया की सघीय सरकार न तुम्हे जासूस बनाकर यहा भेजा था मगर घबराओ नही, यह बात मेरे सिवा और किसीको मालूम नही है।"

बहुत देर तक खामोशी रही, फिर चचल विलियम के सीने से लगकर बोली, 'लेकिन हम डुस्डेन के लिए इस द्वीप से कैसे निकल सकेंगे ? सुना है अग्रेजो क ज़माने म यह द्वीप कैदियो का कालापानी था। अब फिर यह द्वीप हमारे ऐसे कैदियो के लिए कालापानी बन गया है।"

'तुम घबराओ नही,' विलियम बोला, "बस तुम 'हा' कर दो तो मैं तुम्हे भी अपने साथ ले चलूगा। मैंने श्रीधर से बात कर ली है।"

'श्रीधर वह विद्रोही ?"

"हा, वही विद्रोही अब यहा के रोबोओ का प्रधान है अगर हम निहत्थे यहा से यानी इस फैक्टरी से निकलकर रोबो लोगो से शरण मागेंगे तो श्रीधर ने वादा किया है, वह हमे ड्रस्डेन जाने देगा। मैं श्रीधर से अच्छा व्यवहार करता रहता था, इससे वह मुझसे खुश है।

"दूसरो का क्या होगा ?"

"सबका सोचोगी, तो जो दूसरो की दशा होगी, वही मेरी दशा होगी।"

"नही मैं नही जाऊगी। मैं तुम्हें बहुत पसद करती हू, पर तुम्हारे सग नही जाऊगी।"

"क्या ?"

यह दूसरो से गद्दारी होगी।"

"इस समय 'वफादारी गद्दारी' ऐसे शब्द कोइ अर्थ नहीं रखते। इस समय केवल अपनी जान बचाने का सवाल है। मैं खुद अकेला जा सकता हू, मगर तुम्हारे बिना सारा ड्रस्डेन शहर सूना मालूम होगा।"

चचल ने गहरी निगाहो से उसकी तरफ देखा, धीरे से बोली, "इतना मुझसे प्यार करते हो !"

"न करता तो अकेला भी जा सकता था।"

एक लबी सास लेकर चचल ने अपने आपको उसके हवाले कर दिया, बोली, "अब जहा जी चाहे ले चलो।"

## १०

डॉक्टर पार्किन्ज माइक्रो-वेव का बक्सा लेकर ड्राइंग रूम में घुसा। बोला, "फोन तो कट चुका है, मगर माइक्रो-वेव के इस बक्से को मैंने ठीक करके न्यूयार्क से संबंध स्थापित कर लिया है।"

"दिल्ली का क्या हुआ ?" बादल ने पूछा।

"दिल्ली शहर नष्ट हो चुका है। अब उसपर नकली इंसानों का अधिकार है।"

"और न्यूयॉर्क ?" डाक्टर राबिन हायमर ने बेचैनी से पूछा।

"न्यूयॉर्क पर चांद से बमबारी की जा रही है। चांद पर भेजे गए सब रोबो विद्रोही हो गए हैं। उन्होंने अपने रॉकेट मार मिसाइल का रुख धरती की तरफ फेर दिया है। न्यूयॉर्क की ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं माचिस की तीलियों की भांति जल रही हैं।

"मुझे वह दिन याद आता है जब अमरीकी इंसान ने सब इंसानों से पहले चंद्रमा पर कदम रखा था। उसके बाद हम लोग दूसरे ग्रहों पर जाने वाले थे।"

"लेकिन इंसान अपनी कर्मठता को भूल गया। उसने रोबो बनाने शुरू कर दिए," शेख मकसूद बोला, "इंसान का इसीलिए पतन हुआ कि उसने खुद से काम करना छोड़ दिया।"

"वाशिंगटन की क्या खबर है ?"

"वाशिंगटन तबाह हो चुकी है लंदन बरबाद हो चुका है, पेरिस पर बमबारी की जा रही है, रावलपिंडी खत्म है, टोकियो का नामोनिशान नहीं, मास्को, पेकिंग—सब बड़े बड़े नगरों पर चंद्रमा से रॉकेट मिसाइल फेंके जा रहे हैं। ऊपर चांद से हमला है नीचे रोबोओं का विद्रोह है।"

शेख मकसूद बोला, "हम उसे विद्रोह कहते हैं, रोबो इस अपनी पहली

आजादी की लडाई के नाम से पुकारेंगे।"

किसीने कोई जवाब न दिया।

प्रोफेसर पाटिल, जो दूरबीन लगाए फक्टरी के बाहर का लोह का जगला देख रहा था, यकायक चौककर बोला, "अरे। वहा विलियम जेगर और चचल क्या कर रह हैं ?"

"विलियम जेगर और चचल ?" सीमा के मुह से हैरत की एक हल्की-सी चीख निकल गई। "जरा दूरबीन मुझे देना," उसने प्रोफेसर पाटिल से कहा।

प्राफेसर पाटिल ने उसे दूरबीन द दी। वह दूरबीन से देखने लगी। साथ म कॉमेंट्री देती जा रही थी

"विलियम जेगर लोह के जगले के निकट पहुच गया है—श्रीधर के नजदीक वह उससे हाथ हिला हिलाकर कुछ कह रहा है। श्रीधर इकार म सिर हिला रहा है। वह उसके और पास जाकर श्रीधर की खुशामद करता मालूम होता है। चचल खामोश खडी है जेगर की बगल म श्रीधर जगले का दरवाजा खालना चाहता है मगर नही खुलता, भीतर से ताला लगा है। लबा, तडगा जेगर खुश नजर आता है। उसने छलाग लगाकर जगले को पार कर लिया है श्रीधर ने उसे रास्ता द दिया है मगर जेगर अब जगले के दूसरी तरफ से चचल को उठान म व्यस्त है।"

"मुझे मालूम नही था," राबिन हायमर बोला, "कि जेगर का चचल से कभी कोई सबध था।"

"हाय राम।" कहकर सीमा जोर से चीखी। दूरबीन उसके हाथों से गिर गई। उसने अपना चेहरा अपने दोना हाथो मे लिया और फूट-फूटकर रोने लगी।

बादल उठकर उसके निकट चला गया और उसके कधा पर हाथ रखकर तसल्ली देने लगा।

इतने म डॉक्टर पाटिल्ज ने दूरबीन उठा ली थी। वह चद मिनट तक खामोशी से दूरबीन मे दखता रहा। फिर कुछ कह बगैर उसने दूरबीन अपनी आखो मे हटाकर तिपाई पर रख दी।

सब उसकी तरफ खामोशी से देखने लग।

डाक्टर पाटिल्ज ने सिर झुकाए हुए कहा "उन्होने उन दोनो को खत्म कर दिया है।"

"रोबो औरतो का भी सम्मान नही करत ?"

"हमने ही उन्हें ऐसा बनाया है। उनके भीतर केवल काम करने का बोध है, बाकी अन्य इद्रिय बोध हमने उनम पदा न होने दिए तो अब गिला व्यथ है।' शेख अपनी छोटी सी दाढी पर हाथ फेरता हुआ बोला।

"लेकिन श्रीधर ने तो उन्हें गाने की अनुमति दी थी, कम से कम दूरबीन से तो एसा लगता था,' जावद बोला।

'श्रीधर रोबोआ का लीडर है, और लीडर लोग केवल अपनी राजनीति की परवाह करते है इसानी जानो की उन्हे परवाह नहीं होती। और अगर श्रीधर रोबोआ का लीडर है तो वह कसे रोबोओ से गद्दारी कर सकता था। सभव है रोबो उसे ही कुचल डालते।" रोबिन हायमर ने जवाब दिया।

बुड्ढा डाक्टर पाटिल घबराकर बोला, 'अब वे लोग क्या कर रहे है ?'

"वे सब लाग फैक्टरी के लोहे के जगले से लगकर एक दीवार की तरह खड हैं—चेहरों की दीवार, क्योकि एक रोबो को दूसरे रोबो से अलग करके पहचानना कभी कभी बहुत कठिन हो जाता है क्योकि हमने उन्हें एक ही साचे और ठप्पे म ढाल दिया था।

'वर्ना हर साचा भिन्न होता और लागत अधिक आती। हम प्रकृति की तरह मूख नही हैं कि हर रोबो को हर इसान की तरह अलग चेहरे

देने," वादल वोला। "लेकिन हमने उनको अलग अलग नवर तो दिए "

'ताकि कारखाने मे हाजिरी के वक्त गिनने मे आसानी रहे।"

"रोवो कभी अपने काम के प्रति गाफिल नही रहते, उन्हें मालूम ही नही छुट्टी क्या चीज है, मनोरजन किसे कहते हैं।"

"कभी कभी मैं सोचता हू," डाक्टर पाटिल बोले, "हमने इस द्वीप म औरतो को निषिद्ध करार देकर बडी भूल की। औरतें तहजीब लाती हैं और शराफत की नरमी और सहानुभूति की कामलता, और आसू और मासूमियत—वे सब चीजें हमने खो दी। रोवो बनाते बनाते हम खुद रोवो से हो गए।"

"दूसरी तरफ यह बात भी है," बादल बोला, "अगर आज ज्यादा औरतें होती तो उनकी भी वही दशा होती जो चचल की हुई।'

सीमा का सारा शरीर काप गया। उसने अपना चेहरा फिर अपने हाथो म छिपा लिया।

डॉक्टर पार्किन्ज ने बात का रुख बदलने की खातिर कहा, "अब वे लाग क्या कर रहे है ? '

जावेद बोला क्याकि अब उसने दूरबीन उठा ली थी, "वह इस कदर खामोश चुपचाप जगले से लगे क्या खडे है ? लगता है, जसे खामोशी ने हमे चारो तरफ से घेर लिया है।"

बादल बोला, "जाने उनके दिल मे क्या है ? वह किस चीज का या किस वक्त का या किस सिग्नल का इन्तजार कर रहे है ? वह कुछ करते क्यो नही ?"

"ऐसे न कहो बादल," जावेद कापकर बोला, "वे सख्या मे इतने ज्यादा हैं कि अगर जगले पर ज्यादा जोर दें, तो जगला माचिस की तीली की तरह टूट जाएगा।"

"मगर उनके पास हथियार तो नही हैं ?" डाक्टर पाटिल ने अपने

दिल को तसल्ली देनी चाही।

"हथियार न होने से क्या होता है।" शेख मकसूद बोला, "वे लोग संख्या में इतने ज्यादा हैं कि हम लोग पांच मिनट से ज्यादा उनके सामने ठहर नहीं सकेंगे। वे एक बिफरे हुए तूफान की तरह हम डुबाते हुए हमारे सिरों को कुचलकर चले जाएंगे।"

सहसा जावेद मलिक को कुछ याद आया, वह खुशी से उछल पड़ा, बोला, 'मेरे काम करने के कमरे में एक बिजली की मोटर पड़ी है। मैं उसकी सहायता से एक नये प्रकार का रोबो तैयार कर रहा था, जो अब तीन चौथाई पूर्ण हो चुका है। भीम, रुस्तम और हरक्युलिस के सारे गुणों को उसमें इकट्ठा कर दिया है। मैं इसका नाम 'अर्जुन' रखना चाहता हूं।'

'जल्दी बात करो, क्या कहना चाहते हो?" बादल बेचैनी से बोला।

'इस बिजली की मोटर को मैं यहां ले आता हूं और उसके तार इन टूटे हुए तारों से जोड़कर सारे लोहे के जंगले को विद्युतमय कर देता हूं, ज्योंही विद्युत् धारा जंगले में दौड़ेगी, जो रोबो उसे हाथ लगाएगा या स्पर्श करेगा उसी समय बिजली के झटके से खत्म हो जाएगा।'

"तो फौरन ले आओ बिजली की इस मोटर को।"

लेकिन भारी है, जावेद बोला, "मैं अकेला उसे उठा न सकूंगा।'

रॉबिन हायमर उठकर खड़ा हुआ, "मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।

जब रॉबिन हायमर और जावेद चले गए तो डॉक्टर पार्थिव ने फिर दूरबीन उठा ली। कुछ क्षणों की खामोशी के बाद उसने बादल से कहा, "बीमार रोबो अजीब गुस्ताख बन रहा है माई गॉड!

'क्या हुआ?'

"उसने उत्पात मचाकर जंगल को पार कर लिया है और अब वह दूसरे रोबो को भीतर आने का ... कर रहा है।' डॉक्टर पार्थिव ...

जल्दी कहने लगा, "दो रोबो और अदर आ गए पाच और "

शेख मकसूद बाला, "अगर इस वक्त जल्दी से रोबिन हायमर और जावद नही आते हैं तो समझ लो हम खत्म हैं।"

सीमा ड्राइगरूम से उठकर दौडी। दौडी-दौडी अपने कमरे में गई। थोडी देर के बाद एक दद भरी रागिनी सीमा के कमरे से आने लगी। सीमा सितार बजा रही थी।

"अगर सीमा सितार बजा सकती है," शेख मक्सूद बोला, "तो समझो अभी दुनिया खत्म नहीं हुई।"

"नहीं, यह बात नही है," बादल बोला, "जब सीमा के दिल म कोई नया विचार या नई तरकीब आती है तो वह अपनी बुद्धि म उसकी तस्वीर सही तौर पर समझने के लिए सितार बजाने लगती है। सगीत से उसकी कल्पना का पख लग जाते है। वह जरूर इस वक्त कुछ सोच रही है।"

"दस और रोबो जगले को पार करके भीतर आ गए हैं," डॉक्टर पार्किन्ज ने दूरबीन से देखते हुए कहा, "वे सब फैक्टरी के भीतर आ रहे हैं।"

बलवत सिंह और मक्सूद दोनो बारी-बारी से कहने लगे, "यहा तक आने म उन्हे बहुत देर लगेगी।"

"ज्यादा देर तो नही, लेकिन आधा-पौना घटा जरूर लग जाएगा। हमने इधर आने वाली सीढिया का लोह-द्वार बद कर दिया है और फक्टरी के गेट को भी बन्द कर दिया है सिफ बिजली घर की तरफ हम न जा सके।"

डॉक्टर पाटिल ने निराशा से सिर हिलाकर कहा, "हम चारो ओर से घिर चुके हैं।"

मोटर लेकर आ गए।

"इतनी देर क्या कर दी ?"

जावेद मलिक तार से तार जोडते हुए बोला, "मैं डॉक्टर रोबिन हायमर से नय रोबो के दिमाग के विषय मे राय ले रहा था डाक्टर राबिन हायमर ने इसके दिमाग को ठीक कर दिया है।"

"हा," डॉक्टर रोबिन हायमर बोला, 'बेहद सुदर, सुगठित और प्रभावशाली शरीर बनाया है। जावेद ने और मैंने इस रोबो को बेहतरीन दिमाग देकर सुला दिया है। वह अब सात साल तक सोता रहेगा।"

जावेद बोला, "उसे सोने दो। जब तक अर्जुन सोता रहेगा, महाभारत का युद्ध नही छिडेगा, रुस्तम-सोहराब की कहानी नही दोहराई जाएगी हरक्यूलिस को धरती का बोझ, अपने कधो पर नही लेना पडेगा, वह नीद की जजीर से जकडा रूह की बेचैन अग्नि नही चुरा सकेगा।'

"बिजली दौडाओ।" डॉक्टर पार्किन्ज बोला, "जल्दी से बिजली दौडाओ उस लोहे के जगले म वर्ना सब रोबो भीतर आ जाएग आह!'

"क्या हुआ ?'

बिजली की धारा जगले म चलने लगी। अठारह हजार वोल्ट की बिजली ने गेवाओ की पहली पक्ति को जो जगले म लगी खडी थी, जलाकर राख कर दिया है।"

"बलवत सिह कहा है ?" बादल ने पूछा।

'नीचे कमरे से हिसाब-किताब का खाता लाने गया है," शेख मक्सूद ने कहा।

'इस समय उसका क्या काम है ? क्या तुक है ?"

"मरते समय हिसाब किताब की सूझी है जनाब को।"

इतने म बलवत सिह लेजर उठाए हुए कमरे के अदर आ गया। जब

उसके सामने उसके साथियो ने फिर वही सवाल किया तो वह बोला, "मैं समझता हू कि हिसाब किताब होना चाहिए। पूव इसके कि पूव इसके कि मेरा मतलब है सभव है नया वष हमारे जीवन म न आए और हिसाब किताब कभी न हो।"

"क्या दिखाई दे रहा है ?" डाक्टर पाटिल ने ऐसे इत्मीनान स पूछा जिस केवल घोर निराशा ही पैदा कर सकती है।

"कुछ नही," डॉक्टर पार्किन्ज बोला, "हर तरफ नीला ही नीला रग दिखाई पड रहा है।"

"रोबो की वर्दी का रग।" बादल ने होठ सिकोड लिए।

डॉक्टर पार्किन्ज बोला, "वे लोग डाक के समुद्री जहाज से अब हथियार उतार रहे ह।'

"तो मैं उन्ह कैसे रोक सकता हू ?" रोबिन हायमर झल्लाकर बोला।

"माई गाड।' पार्किन्ज चिल्ला उठा, "अतिम जहाज ने अपनी तोपो के मुख हमारे घर की तरफ कर दिए हे।"

' तोपो के मुखो से कुछ मिनट के लिए गोले बरसेंगे उफ, फिर सब खत्म "

"खत्म यानी अत " डॉक्टर पाटिल बोला, ' अत से 'अतिम ! अतिम नाम जहाज का खूब रखा है किसीने।"

"मालूम होता है रोबो म हास्य वृत्ति जाग रही है" डॉक्टर पार्किन्ज ने कहा।

"हास्य वृत्ति के बारे मे कुछ नही कहा जा सकता," डॉक्टर रोबिन हायमर ने धीरे से भयावह स्वर म कहा, ' इतना जरूर जानता हू कि रोबो का निशाना कभी चूका नही करता।"

"यह बात सब जानते है," कुर्सी पर बठे बैठे पार्किन्ज के शरीर म

एक झुरझुरी सी आई और उसने दूरबीन रोबिन हायमर को दे दी, और खुद टागें सीधी करते हुए बोला, "यूरोप वालो ने बहुत बुरा किया जो रोबोओ को लडना सिखा दिया, वना इत्मीनान की बात है कि अपना नकली इसान बडे काम का था। लेकिन उन्होने नकली इसाना से असली इसानो का काम लेना शुरू कर दिया और उन्हे लडने-झगडने मे माहिर बना दिया।"

"हालाकि इन गुणो मे हमारी पूरी इजारेदारी थी।" शेख मकसूद ने किसी कदर तलखी से कहा, "उन्हे सिपाही बना देना गलत था।'

"मैं कहता हू, उन्हे रोबो बनाना ही गलत था" बलवत बोला।

बादल बोला 'नही, बलवत, मैं आज भी यह बात मानने के लिए तैयार नही हू कि हमने उनका निर्माण करके कोई भूल की।'

"आज भी नही मानोगे?' बलवन बोला।

"आज भी नही," बादल गर्व से बोला, आज इसानी सभ्यता का अतिम दिन है, लेकिन आज भी मैं अपनी भूल स्वीकार करने से इकार करता हू।"

बलवत लेजर के हिसाब किताब मे लग गया। गिनते हुए बोला, "आठ करोड नौ सौ पद्रह रुपये।'

बादल खिडकी से बाहर देखते हुए रोबिन हायमर से बोला, 'डॉक्टर रोबिन हायमर, हम शायद जीवन के अतिम क्षणो मे एक-दूसरे स बातचीत कर रहे हैं। शायद हमारे वार्तालाप का आधा भाग दूसरी दुनिया की तरफ पहुच रहा है। मगर मेरे पिता का स्वप्न बुरा नही था। काम की गुलामी को तोडने के लिए उन्होने रोबो का आविष्कार किया। जीवन बहुत कठिन था, कडुवाहट और काम से चूर-चूर कर देनेवाला—इसलिए उन्होने रोबो का आविष्कार किया—एक नकली इसान का जो असली इसान की थकान दूर कर सके, उसे बडे कामो से

मुक्ति दिला सके "

"मैं जानता हू तुम्हारे पिता जी के दिमाग मे यही था," पाटिल बोला, "लेकिन हम लोग केवल आदशवादी न थे, मैंने चालीस वप उनके साथ काम किया है, मैं जानता हू ज्यो ज्यो हम रोबो बनाते गए, लाभ का मैदान बडा होता गया, लाभ का भूत हमारे मस्तिष्क पर सवार होता गया—बिल्कुल उसी तरह जिस तरह हम रोबो पर सवार थे, रोबो हमारा गुलाम था, हम लाभ के गुलाम होते गए।"

"मैं अपनी बात करूगा," बादल छाती ठोककर बोला, "मैंने कभी लाभ का खयाल नही किया। मैंने अपनी रचना को पूण करने के लिए काम किया—काम के लिए काम, जिससे इसान काम का गुलाम न रहे। काम किसलिए ? एक रोटी के लिए ? छी ! क्या इसानी सभ्यता की यही पराकाष्ठा थी ? मैंने आप सब लोगो के साथ काम किया, ताकि इसान को रोटी की गुलामी से मुक्ति दिला सकू। मैं इस गदी अथ व्यवस्था से इसानियत को ऊपर उठाना चाहता था गरीबी को सदा के लिए दूर कर देना चाहता था। मैंने इसानो की एक नई नस्ल का स्वप्न देखा था।"

'फिर क्या हुआ ?" पार्किन्स बोला।

'मैं दुनिया के इसानो को स्वग का नमूना देना चाहता था, जिसमे वह दूध, रोटी और कपडा, घर और शिक्षा के तकाजो से लाखो-करोडो रोबो की सहायता से ऊपर उठाकर हर समस्या को हल करते हुए इसानियत का एक नया रूप पा लेते। यह मेरे पिता का स्वप्न था। बस अगर एक सौ साल हमे और मिल जाते—सिफ एक सौ साल, फिर तुम देखते "

"पचास करोड नौ लाख सत्तावन हजार आठ सौ रुपये " बलवत लेजर से गिनते हुए बोला।

फिर खामोशी छा गई।

सीमा के कमर के सितार की धुन ऊंची होने लगी।

"संगीत भी इंसान को ऊपर उठाता है," पार्किंज बोला, "हम कुछ उधर भी ध्यान देना चाहिए था। रोबो और रुपये के अलावा कुछ और वाले भी हैं, जो इंसान को ऊंचा ले जा सकती थी।"

"उदाहरण के लिए?" बादल ने पूछा।

"उदाहरण के लिए संगीत" जावेद बोला, "रूप, कोमलता, प्रेम की एक दृष्टि, ओस से भीगे कमल की पत्ती, ओस की हरएक बूंद, हीरे की तरह चमकती हुई! हम सब इन बातों को भूल गए और लोभ के तहखाने में जा घुसे, वर्ना दुनिया बड़ी खूबसूरत थी।"

"और अब अट्ठासी लाख रुपये!" बलवंत सिंह ने गिनते हुए कहा।

"शायद जिस दिन यह फैक्टरी बनी थी, जिस दिन हमने अपनी जिम्मेदारी नकली इंसान को सौंप दी थी, शायद हम उसी दिन मर गए थे।" गबिन हायमर दुःख से सिर हिलाते हुए बोला, "शायद हम अपने भूत हैं जो सौ वर्ष के साया की तरह इस फैक्टरी पर मंडरा रहे हैं, जिसपर कुछ मिनटों के बाद रोबोओं का अधिकार हो जाने वाला है। लगता है जैसे यह सब कुछ हो चुका, आज का क्षण भूत में खो चुका। मेरी गर्दन पर एक घातक जख्म है जिससे खून रिस रहा है। तुम पार्किंज, तुम्हारी पीठ में रोबो ने एक खंजर भोंक दिया है कुछ मिनट के बाद आने वाले भविष्य को हम भूत की आंख से क्यों न देखें"

"सात अरब इकहत्तर करोड़ और और" बलवंत सिंह बोला, "यह कसूर किसका है?"

"हमारा भी कसूर हो सकता है," शेख मकसूद बोला, "हमने मुनाफे की रकम बनाने के लिए उन्हें इतनी संख्या में मैनुफैक्चर किया कि वे सारी दुनिया पर छाते चले गए, और इंसान इसी हिसाब से कम होते चले गए।"

रोबिन हायमर दूरबीन से देखते हुए बोला, "मुझे अभी भी खयाल आता है शायद इसान इतनी जल्दी, और यो खत्म नही हो सकते "

सहसा जावेद उठ खडा हुआ और सिर झुकाकर बोला, "कसूर मेरा है सारा अपराध मेरा है ।"

"तुम्हारा ?" डॉक्टर पाटिल आश्चय से जावेद की तरफ देखने लगा ।

"हा । मैंने नकली इसान के शरीर मे आपको बताए बिना कई परिवतन कर दिए ।"

"यह तुम क्या कह रहे हो ?" बादल घबराकर बोला ।

"मैंने रोबो का कैरेक्टर ही बदल दिया । शरीर मे कुछ परिवतनो और उनके साइकोलॉजी मे कुछ और नया जोड देने से उनका व्यक्तित्व ही बदल गया ।"

"लेकिन तुमने ऐसा किया क्यो ?" डॉक्टर पार्किन्ज ने पूछा ।

"और किसलिए किया ?" डॉक्टर पाटिल ने पूछा ।

"और हम लोगो को बताया तक नही !" शेख मकसूद ने शिकायत करते हुए कहा ।

' मैं इन परिवतनो को धीरे धीरे खामोशी से और पोशीदगी से करता रहा । मैंने यह रहस्य हर एक से छिपाए रखा, सिवाय एक के । मैं धीरे धीरे इन्हे मानव-स्तर पर लाना चाहता था । काम करने की शक्ति और क्षमता मे वे पहले ही हमसे बेहतर हो चुके थे ।"

डॉक्टर रोबिन हायमर ने पहली बार जबान खोली, बोला, "लेकिन उससे इस विद्रोह का क्या सबध, जो इस समय रोबोओ ने किया है ?"

"मेरा खयाल है, रोबो के विद्रोह का इस परिवतन से गहरा सबध है," जावेद बोला, "वे अब मशीन नही हैं, उन्हे अपनी श्रेष्ठ शक्ति का एहसास हो चुका, और वे हमसे नफरत करने लगे हैं, क्योकि हम अब भी

उन्हें मशीन समझकर उनसे वैसा ही व्यवहार करते हैं, जिससे उनके दिल में हर इंसान के लिए नफरत पैदा हो चली है। इन नये नक्ली इंसानों ने, जिन्हें मैं रोबो के बजाय टोबो कहना अधिक पसंद करूंगा, मैंने घंटों बातें भी की हैं, और उनके घृणा के तत्व को समझने और बदलने की कोशिश भी की है। जहां तक मेरा खयाल है, वे मुझसे नफरत नहीं करते क्योंकि मैंने उन्हें मशीन नहीं रहने दिया। लेकिन आम तौर पर इंसानों से नफरत करने से मैं उन्हें रोके नहीं रख सका। और जब मैंने यह नफरत देख ली तो मैंने ऐसे और रोबो बनाने बंद कर दिए और "

"ठहरो," बादल ने उसे रोककर कहा, "तुम स्वीकार करते हो कि तुमने रोबो में कई गैर कानूनी परिवर्तन पैदा कर दिए ?"

'हां।

"तो तुम्हें इसका भी अंदाजा होगा कि इन परिवर्तनों का असर क्या होगा "

"कुछ कुछ अंदाजा था, पूरा अंदाजा नहीं था।"

"तुमने ऐसा क्यों किया जावेद ?" बादल के लहजे में गिला था।

'अपने लिए सिर्फ तजुर्बे के लिए, तजुर्बे का अधिकार तो हर वैज्ञानिक को है।"

"यह सच नहीं है।"

यह सीमा की आवाज़ थी। वह अब कमरे से बाहर निकल खामोशी से ड्राइंगरूम में चली आई थी। वे लोग अपनी बहस में इस कदर उलझे हुए थे कि उन्हें सीमा के आने का फौरन पता नहीं चला। लेकिन जब सीमा ने कहा, "यह सच नहीं है," तो सबकी निगाहें घूमकर सीमा पर केंद्रित हो गईं।

बादल सीमा के पास जाकर कहने लगा, 'ओह सीमा! मरना बहुत मुश्किल है और तुम्हें देखकर जीवन की सुंदरता का अंदाज़ा होता है। मेरे

पास रहो, इन अंतिम क्षणों में "

"मैं तुम्हें छोडकर नहीं जा रही हूं, बादल," सीमा ने अपने पति से कहा, फिर जावेद की तरफ मुड़कर बोली, "लेकिन जावेद अकेला उसके लिए अपराधी नहीं है।"

"नहीं है ?' डॉक्टर पार्किन्ज ने दोहराया।

"हां। उसने ये तजुर्बे इसलिए किए कि मैं उसे उकसाती रही। अब वह दू न, जावेद, कितने वर्षों से मैं तुम्हें इन परिवर्तनों के लिए कह रही थी ?"

"नहीं, मैंने अपनी ज़िम्मेदारी पर परिवर्तन किए, और इन परिवर्तनों के लिए पूर्ण रूप से मैं ज़िम्मेदार हूं।"

"इसकी बात का विश्वास न करो, मैंने जावेद से कहा था वह रोबो को एक रूह दे दे।"

"यहां रूहों की कोई बात नहीं हो रही है," बादल बोला, "खुद, जावेद मानता है कि उसने रोबो के शरीर में कुछ मानसिक और कुछ शारीरिक परिवर्तन किए जिससे वह इंसानों के कुछ करीब हो सकें—कुछ मामूली परिवर्तन "

"लेकिन परिवर्तन बहुत अहम साबित हुए " सीमा बोली।

"कैसे ?" बादल ने पूछा।

"मैंने सोचा, इन परिवर्तनों के बाद उनका इंसानी गठन और मानसिक स्तर इस प्रकार का हो जाएगा कि वे हमारे अधिक निकट आ जाएंगे, और जब निकट आएंगे तो हमें बेहतर तौर पर समझ सकेंगे और अगर वे इंसान की तरह हो जाएंगे तो उनके लिए नफरत करना बहुत मुश्किल हो जाएगा।

डॉक्टर रोबिन हायमर ने एक कड़वी हंसी के साथ कहा, "यह तुम्हारी गलती थी। इंसान से ज्यादा कोई नफरत नहीं कर सकता।"

"यू न कहो डॉक्टर हायमर " सीमा ज़रा नर्मी से बोली, "मुझे इन नकली इसानो और असली इसानो के बीच अजनबीपन की यह दीवार बहुत बुरी लगती थी। मैंने उस दीवार को ढाना चाहा, इसलिए मैंने जावेद से कहा "

'और जावेद ने वैसा ही किया, जैसा तुमने कहा ?"

हां—अफसोस है कि क्यो मैंने उससे ऐसा कहा था।"

जावेद बोला "नही सच नही है। मैंने अपनी खातिर अपनी खुशी की खातिर तजुर्बे किए। सारी जिम्मेदारी मेरी है।"

'जिम्मेदारी मेरी है। मैं जानती थी जावेद मुझे इकार न कर सकेगा।"

'क्या ?" डाक्टर राबिन हायमर ने पूछा।

"मैं जानता हू,' बादल बोला "जावेद शुरू ही से—पहले ही दिन से सीमा से प्यार करता था, भाग्य ने उसका साथ नही दिया।'

डॉक्टर पाटिल, जो इन सब वैज्ञानिकों से बुजुर्ग था, बल्कि लगभग स्वर्गीय डाक्टर घोष की आयु का था, अपने सोफे से उठकर जावेद के पास गया और उससे पूछने लगा, 'जावेद, कब से तुमने यह तजुर्बे शुरू किए ?"

"कोई तीन वर्ष हो गए।"

डाक्टर रोबिन हायमर बोला, अपनी लेबोरेटरी मे तजुर्बे करना कोई अपराध नही है, मैं जानता हू कि डाक्टर जावेद मलिक ने अपनी लेबोरेटरी मे एक ऐसी रोबो मादा तैयार की है, जो हूबहू सीमा से मिलती है। मगर उसमे इसान की-सी ज़िंदगी और रूह नही आई। मैंने उसे देखा है। वह ऐसी लगती है जैसे वह स्वप्न मे चल रही हो और शून्य मे घूम रही हो, उसकी आखें अलौकिक है। मैंने अभी इसकी लेबोरेटरी मे इसके अर्जुन को देखा है। खूबसूरत इसान का श्रेष्ठतम नमूना ! मगर वह सो रहा है। कोई ऐसी दवा दी है डाक्टर जावेद ने उसे, कि वह सात वर्ष तक सोता रहेगा।

सात वष के बाद क्या होगा, कौन जाने।"

"यहा यह फिक्र है सात मिनट के बाद क्या हाने वाला है ?" शेख मक्सूद ने धीरे से कहा।

डॉक्टर पाटिल ने अपनी ठुड्डी पर हाथ रखकर कुछ साचा, फिर जावेद से पूछा, "और ऐसे रोबा या टोबो तुमने कितन बनाए हैं ?"

"कोई तीन सौ के करीब हागे यानी उन दो को छोडकर जो मेरी लेबोरेटरी म हैं, बाकी सब मैंन फैक्टरी मे बनाए हैं।"

"इसका मतलब यह हुआ," पाटिल सोच-सोचकर बोला, "कि करोडो की सख्या मे कुछ सौ रोबो बदल गए है। इससे कोई फक नही पडता।"

'बशक इस अनुपात से कोई फक नही पडता।" डाक्टर रोबिन हायमर बोला, 'पर मुसीबत की बात तो रोबोओ की सख्या है।"

"क्या ?" पाटिल बोला।

"सख्या, प्रोफेसर पाटिल, हमने रोबो इतनी सख्या मे ससार-भर म सप्लाई किए है कि उनकी सख्या हर वष इसानो की सख्या से बढती चली गई है। इसका नतीजा और क्या होता, अगर यू न होता तो और क्या होता ?"

"क्या तुम मुझे जिम्मेदार ठहरा रहे हो ?" बादल ने भडककर पूछा।

डाक्टर पार्किन्ज ने बादल का पक्ष लेते हुए कहा 'शायद आप लोग यह समझ रहे है कि फक्टरी का मनेजमेट रोबोओं को कट्रोल करना है, यह गलत है। यह रोबोजो की माग है, जो सप्लाई को हर वष बढाती रही है।"

'और इस बढती हुई माग, और उसे पूरा करनेवाली सप्लाई के चक्कर मे इसान को खत्म होना होगा।" सीमा ने घृणासूचक स्वर मे कहा।

"कौन मरना चाहता है !" बादल ने सीमा से पूछा। "हम सब जल्द से जल्द इस सकट से छुटकारा पाने की सोच रहे है।"

"ग्यारह अरब नौ सौ इकहत्तर रुपये।" बलवत लेजर बद करते हुए बोला, "एक तरकीब मेरी बुद्धि म आई है।"

"कहो।"

"छोडो भी।" पार्किन्ज उदासीनता से बोला, "अब कोई तरकीब काम नही करेगी।"

"मगर हम कोशिश तो कर सकते हैं," बलवत बोला, "मेरी तरकीब बहुत अच्छी है। मुझे आप लोग अनुमति दें तो मैं रोबोआ से इसके लिए बातचीत शुरू कर सकता हू।"

"तुम्हारी भी वही दशा होगी, जो चचल और जेगर की हुई।"

"हो सकता है," बलवत बोला "और अगर मेरी तरकीब सफल रही तो सबके प्राण भी बच सकते हैं।"

"ऐसी कोई तरकीब है तुम्हारी ?" बादल ने पूछा।

बलवत बोला, "मैं उनसे कहूगा—सुदर रोबो, बुद्धिमान रोबो, आपके पास सब कुछ है, शक्ति है, बुद्धिमत्ता है और अब तुम्हारे पास हथियार भी है, पर एक छोटी-सी चीज की कमी है—कागज के पुर्जे की ।"

बादल खुशी से उछलकर कहने लगा, "मरे स्वर्गीय पिता के बनाए हुए फामूले की जो सेफ मे बद है।"

"हा।" बलवत बोला, "और मैं उनसे कहूगा—रोबो साहेबान, उस फामूले के भीतर आपकी उत्पत्ति का रहस्य बद है और उस कागज के पुर्जे को प्राप्त किए बिना आप लोग अपनी सख्या मे एक रोबो की भी वृद्धि नही कर सकते। अगले तीस वर्षों मे इस दुनिया मे एक रोबो भी जीवित नही रहेगा, जरा सोचिए, हम मारकर आपकी स्थिति क्या होगी, कैसा ददनाक अजाम रहेगा आपका भी ? इसलिए आदरणीय रोबो, महिलाओ और सज्जनो, क्या आप मुझे सुन रह हैं ? अगर आप हमारी जान बख्श दें।"

बलवत के चेहरे पर अब एक आत्मविश्वास की लालिमा आ चुकी थी।

"यदि आप हमारी जान बख्श दें और हमें 'अतिम' जहाज पर किसी अलग थलग द्वीप की ओर सही-सलामत जाने दें, तो हम यह फैक्टरी, इसका सारा साजो-सामान उस रहस्यमय फार्मूले सहित आपको भेंट कर देंगे बस यही मेरी तजवीज है माननीय रोबो, हमारी जिंदगी बख्श दो, अपनी उत्पत्ति का रहस्य ज्ञात कर लो "

बादल बोला, "बलवत, क्या तुम इसे मुनासिब समझते हो ?"

"हा," बलवत बोला, "अगर यू न होगा तो हम सबकी जान जाएगी, और वे एक दिन सेफ खोलकर रहस्य को ज्ञात कर लेंगे "

बादल बोला, "हम उस फार्मूले वाले कागजो को नष्ट भी कर सकते हैं।"

"तो हम अपन जीवन की अतिम आशा से हाथ धो बठेंगे," बलवत न उत्तर दिया।

"इस द्वीप पर हम लोग तीस चालीस से अधिक न होंगे। फार्मूला बेचकर सभव है, हम अपनी जान बचा लें, पर कब तक ? फार्मूले पर अमल करके वे लाग अपनी सख्या बढाते जाएगे और आखिरकार फिर हमारे उस द्वीप पर आक्रमण करके एक ही बार म हमको खत्म कर देंगे।" बादल बोला।

बलवत ने हसकर कहा, "कौन अहमक उन्हे पूरे फार्मूले के कागजो को भेंट करेगा ?"

बादल ने कहा, 'मैं धोखा घडी के विरुद्ध हू।"

"तो ठीक है, बाद मे अपने द्वीप पर सुरक्षित पहुचकर उन्ह शेष भाग उस मसौदे का भिजवा देंगे। हिसाब किताब यह बैठता है कि मैं बात चीत करता हू। रोबो मान जाते है। अधूरा फार्मूला उनको भेंट किया

जाता है। हम सब लोग सही-सलामत जहाज पर रवाना होते हैं। उसके बाद मैं खामोशी से अपने केबिन में बंद होकर अपने कानों में रूई ठूस लेता हूं और उस वक्त ..."

"उस वक्त ..." राबिन हायमर ने खुश होकर कहा 'उस वक्त 'अंतिम' जहाज की तोपों के मुख इस फैक्टरी की ओर मोड़ दिए जाएंगे और कुछ मिनट ही में यह रोबो बनानेवाली संसार की अकेली फैक्टरी नष्ट भ्रष्ट हो जाएगी और उसके साथ ही स्वर्गीय पाप का फामूला भी सदा-सदा के लिए समाप्त हो जाएगा।

शेख मक्सूद उठकर कहने लगा, "मैं इस योजना के खिलाफ हूं।'

"तुम ... डॉक्टर पार्किन्ज, तुम्हारी क्या राय है ?" बादल ने पूछा।

"बेच दो।"

'तुम ... डॉक्टर रोबिन हायमर।'

'बेच दो।"

"आप क्या कहते हैं, डाक्टर पाटिल ?'

"इंसानियत के बचाव के लिए इस फार्मूले को बेचना ही पड़ेगा।'

"कैसा भयानक निर्णय है ?" बादल बोला, "फामूला देकर हम अपने आपको बचा सकते हैं और इस प्रकार से इंसान को भी इस धरती से नेस्तो नाबूद होने से बचा सकते हैं। दूसरी ओर इस बात का डर है कि रोबो लोग अपने वचन पर कायम न रहें और पूर्व इसके कि हम उन्हें नष्ट करें वे हमें बर्बाद कर दें ..."

मगर अब दूसरा कोई चारा ही नहीं है।"

'हां, अब ऐसा ही करना होगा' बादल बोला।

'मगर तुमने मुझसे तो पूछा ही नहीं," सीमा बादल से कहने लगी।

बादल ने मुस्करा कर सीमा की ओर देखा क्योंकि अब उसे बलवन की योजना पर यकीन-सा आ चला था। वह मुस्कराते, बल्कि लगभग

हसते हुए सीमा को अपनी बाहों में लेकर चकफेरियां लगाते हुए खुशी से कहने लगा, "हसीना मान जाएगी हसीना मान जाएगी ।"

## ११

जब बादल सेफ में से फार्मूले का मसौदा लेने भीतर चला गया, तो सीमा को बेचैन देखकर बुजुर्ग डॉक्टर पाटिल ने उसे तसल्ली देते हुए कहा, "घबराओ नहीं बेटा, सब ठीक हो जाएगा।"

"समझाने की बातचीत कौन शुरू करेगा ?" डॉक्टर पार्किन्ज ने पूछा।

शेख मकसूद ने कहा, "वह सिलसिला मैं शुरू करूंगा। रोबोओं का स्वभाव मैं अच्छी तरह जानता हूं।"

डॉक्टर पार्किन्ज ने बंदरगाह की खिड़की से बाहर देखते हुए कहा, "भगवान करे किसी तरह इन रोबोओं से मुक्ति मिल जाए, ताकि हम असली इंसानी जिंदगी को बाकी रख सकें। चाहे दूर-दराज में किसी एक द्वीप पर ही सही, मगर वहां रहकर फिर से जिंदगी शुरू कर सकते हैं तह खाने की घुटी हुई बंद जिंदगी नहीं, बल्कि धूप, वर्षा, हवा, हरियाली, बादल, आकाश और पैरों में आनेवाले पत्थर-कंकड़ों और बालू-कणों को महसूस करते हुए खुले वातावरण में दौड़ने वाली जिंदगी। उस जिंदगी के लिए मैं क्या नहीं दे सकता ?"

सीमा के गले से एक सिसकी-सी निकली, बोली, "ऐसी बातें अब मत करो, बहुत देर हो चुकी है।"

रोबिन हायमर बोला, "नही, मैडम, जिंदगी शुरू करने के लिए कभी देर नही होती। एक दफा रोबो मान जाए, हमे 'अतिम' जहाज पर जाने दें, फिर सब ठीक हो जाएगा। मैं खुद उस द्वीप मे तुम्हारे लिए अपने हाथो से एक लकडी का बगला बनाऊंगा, जिसम तुम एक रानी की तरह रह सकोगी।"

'चुप हो जाओ, हायमर सीमा सिसकते हुए बोली "अब पुरान स्वप्नो को याद मत करो, बहुत देर हो चुकी है।'

पाटिल बोला, 'मेरे लिए यू भी वक्त बहुत कम रह गया है, मगर मैं इन वहशी रोबोओ के हाथो मरना नही चाहता, जिनका निर्माण हमन खुद किया है। इसका मतलब यह होता है कि ऊचे स्तर का जीवन नीचे स्तर के जीवन से हार गया, तुच्छ पदाथ ने जिंदगी की पुरपेच बनावट पर विजय पाई, दिल नही मानता "

"और वह छोटा सा द्वीप ' रोबिन हायमर फिर धीरे धीरे वही स्वप्न देखने लगा, "वह छोटा-सा द्वीप हमारे भविष्य भविष्य की जिंदगी का केंद्र होगा, एक ऐसा आश्रय-स्थल जहा से हम कुछ सौ वर्ष के बाद फिर से इस ससार का विजय कर सकेंगे।"

डाक्टर पार्किन्ज बोला "इस खतरनाक बिंदु पर पहुचकर भी तुम्ह उस भविष्य का विश्वास है?"

'हा," राबिन हायमर ने दृढता से सिर हिलाकर कहा, "अगर ये रोबो हम जाने दें, और मेरा खयाल है कि य मान जाएगे। इस मसौदे के बिना उनका अस्तित्व भी खतरे म होगा।"

डाक्टर पार्किन्ज के चेहरे पर खुशी और उम्मीद की लहरें दौडने लगी, बाला, "लगता है, सब ठीक हो जाएगा।'

एकाएक बादल तेजी से कमरे म दाखिल हुआ, वहशत भरे लहजे म जिससे गहरी निराशा टपकती थी, बोला ‹ उस सेफ मे फा

कागज नहीं मिले, फामूला गायब है ?"

"कैसे हो सकता है ?" राबिन हाममर और पाटिल दोनो एकदम बोल पडे, "इसी मजबूत सेफ मे हमेशा रहता था, हमेशा वहीं वापस रख लिया जाता था। कल खुद मैंने उसे देखा था तुम्हारे साथ याद है ?"

बादल ने हाथ मलते हुए कहा, "जरूर इन कम्बख्त रानोआ न उसे चुरा लिया है मुझे तो यह श्रीधर की कार्यवाही मालूम होती है।"

"नहीं।" सीमा भयभीत स्वर मे कहने लगी, "उसे मैंने सेफ म स निकाल लिया था।"

"तुमने ?" बादल आश्चर्य चकित होकर पूछने लगा।

"हा, मैंने उसे चुरा लिया था।"

'तुमने क्या किया उसका ?" पाटिल घबराकर बोला, "कहा रखा है उसे ?"

"आज सुबह उस फामूले की दोनो नकलें—एक असल, जो स्वर्ग डॉक्टर घोष के हाथ का लिखा हुआ था, दूसरा जो उसकी नकल था उन दोनो मसौदों को मैंने बिजली की अगीठी म जला दिया।"

"जला दिया ? ऐं ?" बादल निराशा से चिल्ला उठा, और अगी की ओर भागा। डाक्टर पार्किन्ज और रोबिन भी उस ओर तेज-तेज कर से गए।

बादल न जला हुआ एक टुकडा उठा लिया और पढने लगा हुए कागज पर लिखा था

'फायाविन का जलाने से "

कागज का जला हुआ पुजा बादल के हाथ म राख राख हो बादल की आखो म आसू आ गए।

"वही है क्या ?" शेख मकसूद ने धीरे से पूछा।

बादल ने सिर झुकाकर कहा, "हा।"

"हे भगवान !" पार्क्रिज का सारा शरीर कापने लगा।

"मुझे माफ कर दो।" सीमा बादल के पैरो पर गिर गई।

बादल बोला, "*अब सब खत्म है, इस जले हुए मसौदे के साथ इसान की आखिरी उम्मीद भी जल गई।*"

"मुझे माफ कर दो। ' सीमा रोते हुए बोली, "मुझे नही मालूम था मैं क्या कर रही हू। '

"उठो सीमा, ' बादल बोला। फिर झुककर धीरे से वह सीमा को अपने पैरो से उठाने लगा और डॉक्टर पाटिल से बोला, "क्या आपको वह फार्मूला जबानी याद है ?"

"नामुमकिन।" डॉक्टर पाटिल बोला "वह तो मसौदे पर लिखा हुआ था। नित नये तजुर्बे होते रहते थे, तब भी हर रोज उस मसौदे की जरूरत पडती है इस कदर पेचीदा तरकीब है।"

"कुछ हिस्से तो मुझे याद हैं" "जावेद मलिक कहने लगा ' मगर पूरे फार्मूले को फिर से याद करने के लिए कई परीक्षण फिर से करने पडेंगे, जिनपर कई वर्ष नष्ट होगे '

' यहा वर्ष का अवकाश किसके पास है कुछ मिनट बाकी हैं।"

"*नामुमकिन ! नामुमकिन ! ! असम्भव,*" डॉक्टर राबिन सिर हिलाते हुए बोला, "मैं अपने काम को तो शायद किसी न किसी तरह दोहरा सकूगा मगर बाकी काम कौन करेगा ?"

मगर बाकी काम ?" बादल ने पूछा।

"तुम खुद समझ सकते हो," जावेद मलिक ने बादल से कहा, "कई वर्ष के परीक्षणो की जरूरत होगी। '

"और इन परीक्षणो के बिना सारे फार्मूले की विभिन्न पेचीदा कडियो को जोडना असभव होगा,' डॉक्टर पार्क्रिज ने सिर हिलाकर कहा। "सब चौपट हो गया।"

शेख मकसूद न अगीठी से एक मुट्ठी राख उठाकर कहा, "तो इसानी बुद्धि की हजारो वप की उपलब्धि यही थी क्या ? एक मुट्ठी राख !"

'मैंने क्या कर दिया !" सीमा हाथ मलते हुए बोली।

"तुमने उसे जला क्या दिया ?" बादल ने पूछा ।

"मैंने तुम सबको तबाह कर दिया ।" सीमा हाथ मलते हुए कहती गई।

बादल के स्वर म किसी प्रकार तीखापन आ गया, "मगर डार्लिंग, तुमन ऐसा क्यो किया ?"

"मैं चाहती थी कि हम सब लोग यहा से चले जाए, मैं इस तहखाने, इस मिट्टी, इस फैक्टरी को एकदम खत्म कर देना चाहती थी, ताकि हमारे लिए यहा से जाने के सिवा और कोई रास्ता न रह जाए ।"

"लेकिन आखिर क्यो, बेटा ?" डॉक्टर पाटिल बोले, "ऐसा तुमने क्या किया ? '

"बच्चे पदा नही हो रहे थे, इसान ने अपने हाथ से काम करना बद कर दिया था, वह खुद अपने खात्मे को निकट ला रहा था, इसलिए मैंने सोचा मैंने सोचा "

"एक तरह से तुमन ठीक ही सोचा " रोबिन हायमर बोला।

शेख मकसूद ने कहा, "बिल्कुल पते की बात कही है सीमा ने। हालाकि इसके करने का तरीका गलत था। मेरे खयाल मे मेरे खयाल मे बस एक तरीका रह गया है।"

सब खामोशी से शेख मकसूद का मुख देखने लगे ।

"टावर " शेख मकसूद ने सबकी तरफ देखकर कहा ।

टावर क्या ?"

"बादल और सीमा टावर मे चले जाएगे।"

"वहा जाकर वे कब-तक सुरक्षित रहेंगे ?"

"मैं सुरक्षा की बात नही करता हू, जिंदगी को फिर स शुरु करने की बात करता हू।"

'तुम पागल तो नही हो गए हो।" रोबिन हायमर बोला। "य दोनो इस वक्त टावर म जाकर कितने घटे जीवित रहगे ?"

"इस समय हम सब पागल हो गए है। हर व्यक्ति अपनी जिंदगी बचाने की सोच रहा है। कोइ इसानियत बचाने की नही सोचता।" शेख मक्सूद के लहजे म शिकायत थी। "मैं टावर म इन दोना पति पत्नी को इसलिए भेजना चाहता हू कि टावर की छत पर एक हेलीकाप्टर है, जो इन दोना को यहा से उडा ले जा सकता है "

"और वे दो इसान कौन होगे ?" रोबिन हायमर न पूछा।

"सवाल यह नही है," शेख मकसूद बोला, "कि वे दो इसान कौन होगे, बल्कि कौन से होन चाहिए। अगर सीमा और बादल इस हलीकॉप्टर मे बैठकर यहा से किसी तरह उडान करने म कामयाब हो जाते हैं, तो हम अपने उद्देश्य म कामयाब हो जाते हैं। इसानी नस्ल फिर से शुरू हो सकती है किसी एक नये स्थान पर किसी एक द्वीप पर "

'मगर मैं आप लोगो को छाडकर कभी नही जाऊगा," बादल ने दृढता से कहा।

"न मैं जाऊगी।"

"इस समय भावुकता से काम न लो, बादल " डॉक्टर रोबिन हायमर सिर हिलाते हुए बाला, "मुझे शेख मक्सूद की तरकीब पसद आई है, वरना हम सबकी समाप्ति यकीनी है। इस याजना पर अमल करते हुए हम, तुम दोना को इसानी नस्ल को फिर से शुरू करने का पवित्र काय सौंपते है।"

"तुम्हे जाना होगा" डॉक्टर पार्किन्ज बोला।

'बेशक! तुम दोना को जाना होगा,' डॉक्टर जावद मलिक ने

उठकर निर्णयात्मक स्वर मे कहा।

"नही नही," बादल बोला। "मैं अपने शुभचिंतको से, अपने साथियो से गद्दारी नही करूगा।"

"अगर नही जाओगे," शेख मक्सूद ने चिल्लाकर कहा, "तो इसानियत से गद्दारी करोगे।"

"तुम्ह जाना होगा और अभी," बलवत सिंह आगे बढते हुए बोला "वर्ना हम तुम दोनो को धकेलकर टावर तक पहुचाकर उसे बाहर से बद कर देंगे।"

डॉक्टर पाटिल ने कहा, "यह हम सबका सवसम्मत फैसला है।"

"इसानियत के अस्तित्व के लिए, जीवन के लिए मान जाओ, बादल।"

बादल का सिर झुक गया। "आओ, सीमा," उसने सीमा का हाथ पकडकर कहा।

सीमा का सिर भी झुक गया। वह किसीसे आख न मिला सकी। सिर झुका के बादल और सीमा अदर की सीढिया की ओर बढने गए, जो टावर के ऊपर की तरफ जाती थी।

डॉक्टर रोबिन हायमर, डाक्टर जावेद मलिक, डॉक्टर पार्किन्ज, शेख मकसूद, डॉक्टर पाटिल और बलवत सिंह उन्हे खामोशी से जाते हुए देखते रहे।

ऊपर जाने के लिए बादल ने टावर का लोह-द्वार खोला, सहसा वह और सीमा—दोनो की दृष्टिया पलटकर अपने साथिया पर पडी।

सब मुस्कराकर और हाथ हिलाकर उन्हे अतिम नमस्कार कह रहे थे।

वे दोना एक दूसरे का हाथ पकडे सीढिया चढने लगे।

"कुछ याद है?" बादल बोला, "इन्ही सीढियो पर हमारे प्रेम का पहला क्षण शुरू हुआ था।"

वह सीढिया चढती जाती थी और आसू पोछती जाती थी। बादल अपने दिल को समझाने लगा और सीमा को भी।

"फैसला मुश्किल, मगर सही भी था।"

सीमा फिर भी चुप रही। बहुत देर के बाद धीरे से बोली, "मैं बस यही सोचती हू, अगर मैंने वह मसौदा न जला दिया होता तो सभव है, रोबोओ के साथ समझौता हो जाता। वे लोग हम आसानी से 'अतिम' जहाज़ पर जाने देते। मैं मैं अपने साथियो की कातिल हू "

"नही, नही, तुम अपने तौर पर ठीक सोच रही थी। बदकिस्मती से मसौदा जलने और रोबोओ के विद्रोह करने का एक ही दिन निकल आया, इसीसे सब गडबड हो गई।" बादल उसे समझाते हुए बोला। "क्या तुम सारी सीढिया चढ सकोगी ? '

"कोशिश तो करूगी लेकिन "

"लेकिन अगर न चढ सकी तो ?"

"तो तुम्हारे बाजू तो हैं।' सीमा ने आसुओ के बीच मुस्कराकर कहा।

बादल ने एक क्षण के लिए सीमा को अपने बाजुओ मे ले लिया। मगर सीमा उससे मुह फेरकर बोली, "जल्दी ऊपर चलो, वक्त बहुत कम है।

पच्चीस तीस सीढिया चढकर सीमा हाफने लगी, रुक गई, बोली, "ठहर जाओ।"

"ठहरने के लिए वक्त नही है।"

"मुझसे चला नही जाता।"

"कोशिश करो। '

' नही चला जाता।"

बादल ने सीमा को अपने बाजुओ मे उठा लिया, और अपनी पूरी

शक्ति से, उसी तेजी से सीढिया चढने की कोशिश करने लगा।

बीस और सीढिया ऊपर चढकर वह भी हाफने लगा।

"आओ कुछ क्षणा के लिए यहा सुस्ता लें।"

वे दोनो सीढियो पर बैठ गए, और दोना ऊपर जाती हुई चक्करदार सीढियो को देखने लगे।

सीमा ने टावर के ऊपर के दरवाजे तक की सीढिया गिनते हुए किसी कदर निराशा से कहा, "अभी पचास सीढिया बाकी हैं ।"

## १२

डाक्टर पार्किन्ज पश्चिमी खिडकी पर दूरबीन जमाए खडा था, हेलीकॉप्टर की उडान देखने के लिए।

सहसा बलवत सिंह चिल्ला उठा, "साठ अरब, दस करोड, तीस लाख, नौ हजार आठ सौ पचहत्तर रुपये "

'अभी तक फैक्टरी का मुनाफा गिन रहे हो ?"

बलवत सिंह की आखें चमकने लगी, "एक रकम होती है। एक बहुत बडी रकम होती ह, मेरे खयाल मे वे इससे आधे पर फैसला कर लेंगे "

"क्या ?" डॉक्टर पाटिल ने पूछा।

"मैं जाता हू।"

बलवत सिंह नोटो की गडिडया सजान लगा, एक सदूक म वद करने लगा।

"पागल हुए हो।" डॉक्टर पार्किन्ज बोला, "रोको रुपये की परवाह

नहीं करते। उन्होंने आज तक कभी रुपया नहीं देखा, कभी वेतन नहीं लिया।'

"रुको, बलवत !" जावेद बोला, "मत जाओ।"

"मुझे जाने दो " बलवन जावेद के हाथ झटककर बोला 'इससे चौथाई रकम पर फैसला हो सकता है, हम सबकी जान बच सकती है।"

"हैलीकॉप्टर अब तक नहीं उडा ?" डॉक्टर पार्किन्ज बोला।

रोबिन हायमर उपेक्षा से चिल्लाया, "वह अभी तक टावर के भीतर भी न पहुचे होगे।"

डाक्टर पाटिल ने दूसरी खिडकी से बाहर देखते हुए कहा, "जाने यह रोबो लोग किसका इतजार कर रहे हैं, जगले से हटकर पक्ति की पक्ति बनाए हुए खडे है, जैसे पत्थर की मूर्ति। कोई हिलता नही कोई बात नही करता, कोई नारे नही लगाता।'

"वह सबसे आगे कौन खडा है ?"

"वही, जिसको सीमा ने जान बख्शी थी।"

"श्रीधर ?"

"वही," शेख मकसूद अगुली से उसकी ओर सकेत करते हुए बोला, "आज सुबह उसको मैंने बदरगाह पर रोबो जहाजियों से बात करते देखा था।"

डॉक्टर राबिन हायमर अदर एक कमरे म गया, कुछ मिनट क बाद एक रायफल उठाए हुए वापस आया और डॉक्टर पाटिल वाली खिडकी म जाकर बोला, "कहा है, वह विद्रोही ?"

डाक्टर पाटिल सकेत करत हुए बोला, "वह रहा '

राबिन हायमर निशाना साधन लगा। डॉक्टर पार्किन्ज न राबिन हायमर का हाथ पकडकर जल्दी से कहा, "उसे मत मारो। मैं दूरबीन से देख रहा हू, बलवत सिह दौडता हुआ श्रीधर की ओर जा रहा है। उसे

मत मारो, देखो क्या बातचीत होती है।"

डॉक्टर रोबिन हायमर न रायफल नीचे कर ली।

उधर एक लबी सास लेकर बादल ने टावर के अदर पहुचकर एक सुदर गठरी की तरह सीमा को एक फूला से लदे गमले के पास ले जाकर छोड दिया।

हल्के हरे काच की बद खिडकिया से आकाश दिखाई देता था, और समुद्र, और समुद्र म खडा 'अतिम' जहाज, जिसकी तोपो के मुख फैक्टरी की ओर मुडे हुए थे।

"कुछ याद है ?" सीमा सब भूल गई। उसकी निगाहो मे प्रेम का पहला दिन था, प्रेम का प्रथम चुम्बन, और प्रेम का पहला फूल

बादल ने मुस्कराकर गमले से एक बडा पीले रग का गुलाब तोडकर सीमा के बालो मे लगा दिया। फिर झुककर उसने धीरे-से सीमा के होठ चूम लिए।

सीमा बोली, ' हेलीकॉप्टर पर बठकर हम कहा जाएगे ?"

"किसी निजन द्वीप की खोज करेंगे।"

"फिर ?"

"फिर तुम बताओ।"

"तुम मेरे लिए एक लकडी का कॉटेज बनाओगे।" सीमा बोली।

"हमारा घर। पहला इसानी घर।" बादल ने कहा।

"और मैं तुम्हे बच्चे दूगी, एक दजन बच्चे दूगी !" सीमा ने गव से कहा।

"हा, उस द्वीप म हम अपने पापा का प्रायश्चित्त करेंगे।"

"और इसान का भविष्य फिर से शुरू होगा।"

बादल ने दीवार के एक कोने मे जाकर एक स्विच को दबाया। धीरे धीरे टावर की काच की छत के पट खुलने लगे और फिर एक जीना धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा।

जब जीना टावर के फर्श से लग गया, तो बादल ने सीमा का हाथ पकडकर कहा, "आओ ऊपर चलें, हेलीकॉप्टर मे सवार हो जाए।"

इधर रोबिन हायमर ने डॉक्टर पार्किन्ज से कहा, "आप लोगो ने बेकार मे मुझे रोक दिया। मैं श्रीधर के प्राण तो ले लेता, जो विद्रोह का अगुवा है। आपने मुझे रोक दिया क्या यह समझकर कि रोबो कभी भी मनुष्य का कृतघ्न हो सकता है?"

"तुम्हे इसलिए रोका गया है कि बलवत श्रीधर से सौदा करने गया है," डॉक्टर पाटिल बोले।

"वह बक्से म नोट भरकर ले गया है," शेख मक्सूद बोला, "बक्सा उसकी बगल मे है।"

डाक्टर पार्किन्ज दूरबीन से देखता हुआ बोला, "वह भारी बक्सा उठाए हुए इस वक्त श्रीधर के पास पहुच चुका है, और बक्सा खोलकर उसे नोट दिखा रहा है, जो कई करोड के मूल्य के होगे।"

'*क्या इस तरकीब से वह अपनी जान बचा लेगा?*'

शेख मकसूद ने विरोध किया, "बलवत इस तरह का इसान नहीं है कि सिर्फ अपनी जान बचा ले। या तो वह भाव-ताव करके सबकी जान बचा लेगा, वर्ना वापस चला आएगा।"

"श्रीधर इकार मे सिर हिला रहा है।

" बलवत नोटो की गड्डिया उठा उठाकर दिखा रहा है।

" श्रीधर पलटकर अपने रोबो साथियो से पूछ रहा है।" डाक्टर

पार्किन्ज की कामट्री चल रही थी। "यह लो, वे सबके सब जगले पर पिल पड़े। बिजली की करेंट ने सबको भूनकर रख दिया है मगर वह लोह का जगला रोबोआ के धावे से एक सूखी लकड़ी की तरह चटखकर टूट गया है। रोबो हजारा की सख्या म जगले के भीतर आ रह हैं—अपने रोबा साथियो का लाशो का रौंदते हुए, बलवत उनमे घिर गया है। मैं देख नहीं सकता, अब क्या हो रहा है।

" इतने रोबो बलवत के गिर्द जमा हैं। अब वे बलवत को छोड़कर बिजली घर की ओर दौड़ रहे हैं। बलवत मुर्दा पड़ा है। उसकी लाश कुचल दी गई है, पाव से रौंद डाली गई है। खुले बक्से से हजारा नोट पतझड़ के पत्ता की तरह हवा मे उड रह हैं—इसान का आखिरी मुनाफा।'

"यह शोर सुनते हो ?" राबिन हायमर ने पार्किन्ज से कहा।

"हा," दूरबीन हटाकर पार्किन्ज न पलटते हुए कहा, "जैसे तूफान आ रहा हो।"

शेख मकसूद ने इधर उधर कमरे के रोशन बल्बो को देखकर कहा, "बिजलीघर पर अभी तक हमारा अधिकार है, हमारे कमरे की बत्तिया रोशन हैं।"

सहसा जावद को कुछ याद आया, "मुझे अजुन को एक इजेक्शन देना होगा।"

'क्या अब भी तुम अपना परीक्षण नहीं भूले हो ?" रोबिन हायमर ने व्यग्य से कहा।

जावेद न कहा, "इसान खत्म हो जाए, पर विज्ञान खत्म नहीं होगा।"
जावेद ने थोड़ा रुक कर फिर कहा, पर धीरे से बोला, "मैं अभी आता हू।"

डाक्टर पाटिल ने कहा, "इसान के बगैर विज्ञान भी बेकार है।"

शेख मकसूद बोला, 'इसान महान था, जब तक वह इस धरती पर

रहा, महान ही रहा।" शेख मकसूद ने अपने पास के टेबल लैम्प का रोशन कर दिया जिसपर हरे रग का शेड था। सब उस हरे रग के शेड से छनकर आती रोशनी को देखने लगे।

"यह रोशनी हमारी आखिरी उम्मीद है।" रोबिन हायमर बोला।

'हमारी शक्ति " डॉक्टर पाटिल बोला।

शेख मकसूद ने उत्साहित होते हुए कहा, "यह रोशनी जो इसान ने पैदा की है और जिसे वह पीढी दर पीढी अपनी नस्ल को देता आया है युग-युग से यह रोशनी "

सहसा टबल लैम्प बुझ गया।

"हे भगवान !" पार्किन्ज पश्चिमी खिडकी म खडा देखन लगा।

'क्या हुआ ?" शेख मकसूद ने पूछा।

"बिजलीघर पर रोबो का अधिकार हो गया। कमरे की सारी बत्तिया बुझ गई है। रोबो हमारी ओर बढने चल आ रहे हैं। इनका हर कदम हमारी मौत की तरफ है " रोबिन हायमर ने रायफल ठीक करते हुए कहा, "सामान को दरवाजे पर रखकर बाड बनाओ जल्दी करो इसान का सघर्ष मौत के वक्त भी जारी रहेगा !"

"हे भगवान !' पार्किन्ज ने फिर खिडकी से बाहर देखते हुए कहा।

"क्या हुआ ?" डॉक्टर पाटिल ने [illegible] ।

"हे भगवान ! उन्ह सलामत रख [illegible] मे स्वर म बोला, '

'हेलीकॉप्टर वायुमडल म उडान कर [illegible] और बादल को देख रहा हू।"

एकाएक शेख मकसूद फश पर [illegible] पढने लगा।

'जरा [illegible] देना,' र [illegible] में प्रसन्नता थी।

"अगर [illegible] भागन [illegible]

मौत भी इसान की जीत म बदल सकती है। हलीकॉप्टर ऊचा हो रहा है ऊचा हो रहा है वह इस समय 'अतिम' जहाज के ऊपर से जा रहा हैं मेरे प्रभु " रोबिन हायमर सहसा रुक गया।

"क्या हुआ ?"

रोबिन हायमर चुप हो गया।

कमरे म स नाटा छा गया।

फिर एकसाथ गहरी घन-गरज, जैसे एकसाथ बहुत-सी तोपें चल गई हो।

रोबिन हायमर के हाथ से दूरबीन छूटकर नीचे गिर पड़ी।

"एटी एयरक्राफ्ट गन न हेलीकॉप्टर के परखचे उडा दिए हैं। उसके टुकडे समुद्र म गिर रहे हैं।"

रोबिन हायमर ने आखें बद कर ली।

उसके सब साथियो के सिर झुक गए।

## १३

सात साल गुजर गए।

धरती पर और चाद पर इसानी नस्ल तबाह और बरबाद हो गई थी। इसान की पराजय मे चाद ने बहुत बडा भाग लिया था, क्योकि चद्रमा पर जितने अतरिक्षीय स्टेशन थे, सबपर इसानो ने केवल रोबो नियुक्त कर रखे थे, जिन्होने रोबो की इटरनेशनल लीग के एक सकेत पर चाद से ऐसी बमबारी की कि दुनिया के सारे बडे-बडे नगर मटियामेट कर दिए। फिर

रहा, महान ही रहा।" शेख मक्सूद ने अपने पास के टेबल लम्प का रोशन कर दिया, जिसपर हरे रग का शेड था। सब उस हरे रग के शेड से छनकर आती रोशनी को देखने लगे।

'यह रोशनी हमारी आखिरी उम्मीद है।" रोबिन हायमर बाला।

"हमारी शक्ति " डॉक्टर पाटिल बोला।

शेख मक्सूद ने उत्साहित हाते हुए कहा, "यह राशनी जा इमान न पैदा की है और जिसे वह पीढी दर पीढी अपनी नस्ल को देना आया है युग युग से यह राशनी '

सहसा टेबल लैम्प बुझ गया।

"ह भगवान !' पार्किन्ज पश्चिमी खिडकी म खडा देखने लगा।

"क्या हुआ ?' शेख मक्सूद न पूछा।

"बिजलीघर पर रोरा का अधिकार हा गया। कमर की सारी बत्तिया बुझ गई ह। रोरा हमारी ओर बढत चले आ रह है। इनका हर कदम हमारी मौत की तरफ है ' राबिन हायमर न रायफल ठीक करत हुए कहा, "सामान का दरवाजे पर रखकर बाड बनाओ जल्दी करो इसान का सघष मौत के वक्त भी जारी रहगा !"

"ह भगवान !' पार्किन्ज न फिर खिडकी मे बाहर दखते हुए कहा।

"क्या हुआ ?" डाक्टर पाटिल न बेचनी से पूछा।

'ह भगवान ! उन्ह सलामत रख।" पार्किन्ज धीमे स्वर म बोला हलीकाप्टर वायुमडल मे उन्नान कर रहा है। मैं सीमा और बादल को दख रहा हू।"

एकाएक शेख मक्सूद फश पर घुटना के बल झुककर दुआ पढने लगा।

"जरा दूरबीन मुझे तो देना,' रोबिन हायमर के स्वर म प्रसन्नता थी।

"अगर सीमा और बादल भागन म सफल हो जाते हैं, तो हमारी

मौत भी इसान की जान म बदल सकती है। हलीकाप्टर ऊचा हो रहा है ऊचा हो रहा है वह इस समय 'अतिम' जहाज के ऊपर से जा रहा है मेरे प्रभु " राबिन हायमर सहसा रुक गया।

"क्या हुआ ?"

राबिन हायमर चुप हो गया।

कमरे म सन्नाटा छा गया।

फिर एकसाथ गहरी घन गरज, जसे एकसाथ बहुत-सी तोपें चल गई हों।

राबिन हायमर के हाथ से दूरबीन छूटकर नीचे गिर पडी।

"एटी एयरक्राफ्ट गन न हलीकाप्टर के परखचे उडा दिए हैं। उसके टुकडे समुद्र म गिर रहे हैं।"

रोबिन हायमर न आखें बद कर ली।

उसके सब साथियो के सिर झुक गए।

१३

सात साल गुजर गए।

धरती पर और चाद पर इसानी नस्ल तबाह और बरबाद हो गई थी। इसान की पराजय मे चाद न बहुत बडा भाग लिया था, क्याकि चद्रमा पर जितने अतरिक्षीय स्टेशन थे, सबपर इसानो न केवल रोबो नियुक्त कर रखे थे, जिन्होंने राबो का इटरनेशनल लीग के एक सकेत पर चाद से ऐसी बमबारी की कि दुनिया क सारे बडे-बडे नगर मटियामेट कर दिए। फिर

रहा, महान ही रहा।" शेख मक्सूद ने अपने पास के टेबल लम्प को रोशन कर दिया, जिसपर हरे रंग का शेड था। सब उस हरे रंग के शेड में छनकर आती रोशनी को देखने लगे।

'यह रोशनी हमारी आखिरी उम्मीद है।" राबिन हायमर बोला।

' हमारी शक्ति " डॉक्टर पाटिल बोला।

शेख मक्सूद ने उत्साहित होते हुए कहा, ' यह रोशनी जो इंसान ने पैदा की है और जिसे वह पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी नस्ल को देता आया है युग-युग से यह रोशनी "

सहसा टेबल लैम्प बुझ गया।

"हे भगवान !' पाकीज़ पश्चिमी खिड़की में खड़ा देखने लगा।

"क्या हुआ ?' शेख मक्सूद ने पूछा।

"बिजलीघर पर रावा का अधिकार हो गया। कमर की सारी बत्तियाँ बुझ गई हैं। रोवा हमारी ओर बढ़ते चले आ रहे हैं। इनका हर कदम हमारी मौत की तरफ है " रोबिन हायमर ने रायफल ठीक करते हुए कहा, 'सामान को दरवाजे पर रखकर बाड़ बनाओ जल्दी करो इंसान का संघर्ष मौत के वक्त भी जारी रहेगा !'

"हे भगवान !' पाकीज़ ने फिर खिड़की से बाहर देखते हुए कहा।

"क्या हुआ ?' डाक्टर पाटिल ने बेचैनी से पूछा।

"हे भगवान ! उन्हें सलामत रख।" पाकीज़ धीमे स्वर में बोला, "हेलीकॉप्टर वायुमंडल में उड़ान कर रहा है। मैं सीमा और बादल को देख रहा हूं।'

एकाएक शेख मकसूद फर्श पर घुटनों के बल झुककर दुआ पढ़ने लगा।

'जरा दूरबीन मुझे तो देना,' रोबिन हायमर के स्वर में प्रसन्नता थी।

"अगर सीमा और बादल भागने में सफल हो जाते हैं, तो हमारी

मौत भी इसान की जीत म बदल सकती है। हलीकॉप्टर ऊचा हो रहा है ऊचा हो रहा है वह इस समय 'अतिम' जहाज के ऊपर से जा रहा है मेरे प्रभु " रोबिन हायमर सहसा रुक गया।

'क्या हुआ ?"

रोबिन हायमर चुप हो गया।

कमरे म सन्नाटा छा गया।

फिर एकसाथ गहरी घन गरज, जैसे एकसाथ बहुत-सी तोपें चल गई हो।

राबिन हायमर के हाथ से दूरबीन छूटकर नीचे गिर पडी।

"एटी एयरक्राफ्ट गन न हलीकॉप्टर के परखचे उडा दिए है। उसके टुकडे समुद्र मे गिर रहे है।"

रोबिन हायमर न आखें बद कर ली।

उसके सब साथिया के सिर झुक गए।

## १३

सात साल गुजर गए।

धरती पर और चाद पर इसानी नस्ल तबाह और बरबाद हो गई थी। इसान की पराजय मे चाद ने बहुत बडा भाग लिया था, क्योकि चद्रमा पर जितन अतरिक्षीय स्टेशन थे, सबपर इसाना ने केवल रोबो नियुक्त कर रखे थे, जिन्होने रोबा की इटरनेशनल लीग के एक सकेत पर चाद स ऐसी बमबारी की कि दुनिया के सारे बडे बडे नगर मटियामेट कर दिए। फिर

धरती पर जितने रोबो बनाए गए थे, उन्होंने चुन चुन कर यहां के इंसानों को मार डाला।

अब धरती पर इंसान का कहीं वजूद न था। अंडमान द्वीप की रोबो फैक्टरी वीरान पड़ी थी, सिवाय डॉक्टर जावेद की लेबोरेटरी के। प्रोफेसर जावेद मलिक को श्रीधर के कहने पर जीवित छोड़ दिया गया था, जिससे वह लेबोरेटरी में किसी न किसी तरह से फिर से रोबो बनाने का फार्मूला, जिसके कुछ अंशों से वह परिचित था उसे पूरा कर सके। इसी लिए प्रोफेसर जावेद मलिक की जान बख्श दी गई थी और वह सात साल से अपने परीक्षणों में व्यस्त था, मगर अब तक रोबो बनाने में असफल रहा था।

रोबो में कुछ मनोवैज्ञानिक और शारीरिक परिवर्तन करके उसने जो टोबो लड़की सीमा नाम की बनाई थी वह अभी तक अपने स्वप्नों में खोई थी। यों जावेद के कहने पर वह सब काम करती थी, मगर जैसे उसका दिल उन कामों में न हो। यों वह दो वक्त खाना भी पकाती थी, क्योंकि वह पहली टोबो थी जिसे डॉक्टर जावेद मलिक ने मेदा भी लगा दिया था, मगर ऐसे खाती थी जैसे उसे भूख न हो। उसे इस दुनिया के किसी काम में दिलचस्पी न थी। जावेद मलिक ने उसे औरत का सेक्स भी दे दिया था, लेकिन वह अपने सेक्स की ओर से बिलकुल उदासीन थी।

टोबो लड़की की इन कुछ कमियों को देखते हुए जावेद ने अपने परीक्षण जारी रखते हुए अर्जुन नाम का एक और पुरुष भी बनाया था, जिसका बुनियादी ढांचा उसने फैक्टरी में तैयार होने वाले एक रोबो ही से लिया था। लेकिन उसमें उसने एक सुंदर पुरुष के सारे गुण पैदा करने चाहे थे।

मगर अर्जुन सात साल से सो रहा था। जावेद पिछले दो साल से उसे जगाने के लिए इंजेक्शन दे रहा था, लेकिन अर्जुन किसी तरह जगाया न जा

सका। उसकी सास प्रक्रिया जारी थी, उसका हृदय भी धडकता था, मगर गत सात वर्षों से वह सो रहा था।

जावेद ने अपने बेडरूम से लगे एक कमरे मे उसे एक सुसज्जित बिस्तर पर लिटा रखा था और यहा पर तरह-तरह से उसे जगाने की कोशिश किया करता था, मगर हर बार असफल रहता था। वह हमेशा अजुन को ताले म रखता था, और किसी रोबो या टोबो लडकी जिसका नाम उसन स्वर्गीया सीमा की याद मे सीमा ही रखा था, उसे भी मालूम न था कि उस कमरे म क्या है, जिस पर हर समय ताला पडा रहता है। दूसरे रोबो यह सोचते थे कि उस कमरे मे जावेद कोई विशेष परीक्षण कर रहा है, रोबो बनाने के लिए।

लेकिन रोबो का बुनियादी ढाचा इन सात वर्षों म जावेद तैयार न कर सका। रोबो को लेकर वह उसम उपर्युक्त परिवतन कर सकता था परन्तु रोबो की सृष्टि न कर सका था।

इस दौरान मे रोबो धडाधड मर रहे थे, और नये रोबो फैक्टरी से वजूद म नही आ रहे थे इसलिए इस धरती पर रोबो की आबादी हर रोज़ कम होती जा रही थी।

इसान का वजूद खत्म हो चुका था, मगर अब रोबो का वजूद भी धरती से मिटने वाला था।

जावेद यही सोच-सोचकर परेशान होता था कि अगर रोबो भी धरती से मिट गया, तो हमारी धरती पूरी तरह वीरान हो जाएगी।

## १४

जावेद अपनी लेबोरेटरी मे साइस की एक पुस्तक खोले खिडकी से बाहर देखने और देखने से अधिक सोचने मे लीन था और मुह ही मुह म कुछ बुदबुदा रहा था।

' ऐ खुदा ! क्या मैं कुछ भी मालूम न कर सकूगा—स्वर्गीय घोष, पाटिल, रोबिन हायमर और पार्किन्ज का फामूला, जिस पर इतने वैज्ञानिको ने काम करके उसे पूर्ण किया था, जिसम मेरा भी हिस्सा था। मेरी इतनी कोशिश पर भी पूरा रोबो नही बन सका। टुकडे टुकडे बनते है, फिर टूट जाते है, क्या रोबो बनाने का रहस्य कभी मुझपर प्रकट न होगा।

" ऐ खुदा ! अगर इसान न रहे तो कम से कम रोबो ही इस ससार का अपना घर बना सकें, रोबो जो इसान की प्रतिछाया है, इसान न सही उसकी प्रतिछाया ही सही।

" मुझे नीद आ रही है, लेकिन मुझे सोना न चाहिए। मुझे काम करना चाहिए, बारह घटे काम—चौदह घटे काम। अठारह घटे परीक्षण करने चाहिए, मुझे रोबो का फामूला जरूर तलाश करना होगा।"

जावेद ने दो चार टेस्ट टयूबो को हिलाकर देखा, फिर अनमना होकर दुख से सिर झुका लिया और पुस्तक के पन्ने पलटने म व्यस्त हो गया।

इतने मे दरवाज़े पर खटका हुआ।

जावेद बोला, ' अदर आ जाओ।"

एक सेवक रोबो दाखिल हुआ। अदब से झुककर कहने लगा, "मालिक, बाहर रोबाओ की एक कमेटी खडी है, वे लोग आपसे मिलने के लिए आए है।"

"मैं मेरे पास किसीसे मिलने, भेंट करने का वक्त नही है।'

"वे लोग कोई मामूली लोग नही हैं, मास्टर।" सेवक सिर झुकाकर बोला, "रोबोओ की केंद्रीय कमेटी आपसे इटरव्यू चाहती है। वे लोग अभी पेरिस से आए हैं।"

"तो ठीक है,' जावेद बोला, "उन्ह अदर भेज दो।" और जब सेवक बाहर चला गया, तो वह टस्ट टयूबा का हिला हिलाकर कहने लगा, "इतना समय नष्ट हो गया और बहुत कम काम हुआ है।"

इतन मे केंद्रीय कमटी के सात व्यक्ति, जो परिस से आए थे, भीतर आ गए और श्रीधर के नेतृत्व मे जावेद के सामन आकर खडे हो गए। मगर अब उनके तौर-तरीके व्यवहार, लहजा हाकिमो जैसा न था। वे एक अजीब बेबसी के अदाज मे उसके सामने खडे थे।

जावेद ने किसी कदर तीखे स्वर म कहा, "आप लोगो को जो काम है, जल्दी से कह डालिए, मेरे पास ज्यादा वक्त नही है।"

पहले कुछ क्षणो तो खामोशी रही, फिर एक रोबो एक कदम आगे बढकर कहन लगा, "मास्टर, हम लोगा ने पूरी कोशिश कर डाली है। हम लोगो ने धरती से इतना कायला, इतना पेट्रोल, इतना लोहा निकाल लिया है जो अगली सात पीढियो के लिए काफी होगा। इतना कपडा बना लिया है कि हर व्यक्ति अपने लिए दजनो सूट बना सकता है। सात वर्षों मे हमने इतना कर लिया है, जितना इमान सात सौ वर्षों मे भी न कर सकता "

मगर किसके लिए ?" जावेद ने पूछा।

"अगली पीढिया के लिए," श्रीधर ने जवाब दिया, "ऐसा हमन सोचा था, मगर हम अपनी उत्पत्ति स्वय अपन-आप नही कर सकत, जैसे इसान करत हैं, इसलिए रोबो पैदा नही हो रहे हैं। रोबो के लिए जो सामग्री रखी हुई हे फैक्टरी मे, उसे जब मशीन मे डालते हैं तो कुरूप लोथ तैयार होती है त्वचा मास से नही जुडती, मास हड्डियो से नही चिपकता।"

इसाना को खत्म कर डाला !"

"क्योंकि हम उनसे अधिक शक्तिशाली थे, अधिक बुद्धिमान थे, जो कुछ हम उनसे सीखना चाहते थे वह हम सीख चुके थे, इसान को खत्म होना ही था।" दूसरा बोला।

"हम मालिक बनना चाहते थे।" पाचवा बोला।

जावेद ने कहा, "तो तुमने उन्हे गुलामो की हैसियत से ही जीवित रखा होता।"

श्रीधर बोला, "नही हम उनपर पूरा भरोसा नही रख सकते थे। मानव इतिहास पढो, मनुष्य ने किसी दूसरे प्राणी को नही छोडा है फिर वह हम कैसे छोड सकता था, इसलिए उसका अत निश्चित था।"

पहले रोबो ने कहा, "हमे यह सिखा दो कि कैसे हम एक से दो हो सकते हैं, इसान की तरह, वरना हम खत्म हो जाएग।"

जावेद बोना, "यदि तुम जीवित रहना चाहते हो, तो तुम्ह जानवरो की तरह बच्चे पैदा करने होंगे।"

"वह हम कैसे कर सकते हैं ?" छठा रोबो बोलो, "जब कि तुमने हमे सेक्स से वचित रखा है।"

श्रीधर ने कहा, "हमारे सामने एक ही उपाय है। फैक्टरी मे पुराने रिवाज के अनुसार रोबो ढाले जाए, जो मरते हुए रोबोओ की जगह ले सकें। तुम हमसे नकली इसान बनाने का फार्मूला क्या छिपा रह हो ?"

"खुदा गवाह है। मैं छिपा नही रहा हू," जावेद ने खीझकर कहा, "मगर वह फार्मूला खो गया है।"

'लेकिन वह तो लिखा हुआ था और उसकी एक नकल भी थी," श्रीधर बोला।

जावेद ने कहा "उसे जला दिया गया था, दोनो नकले जलाकर राख कर दी गई। तुम ठीक कहते हो, श्रीधर, म इस ससार का आखिरी इसान

हू । लेकिन मैं तुमसे सच कहता हू, मेरे पास तुम्हारी पूरी उत्पत्ति का फार्मूला नही है, कुछ टुकडे कुछ हिस्से पर पूरा फामूला नही है। ये सब टेस्ट-टयूबे बेकार साबित हुई हैं, उनम मास बन जाता है, जिंदगी पैदा नही होता।"

"तो फिर परीक्षण करो, और परीक्षण करो।" श्रीधर न कहा, "किसी तरह से हम हमारी उत्पत्ति का रहस्य वापस दे दो।"

"कोशिश करो, कोशिश करते जाओ," सातवा रोबो बोला।

"सात साल से और क्या कर रहा हू।" जावेद उदासी से बोला।

"अगर तुम जान सकते, कितने परीक्षण किए हैं, इन सैकडा टेस्ट-टयूबो मे "

पहला रोबो बोला, "तो हमे बताओ, हम तुम्हारी मदद करेंगे, हम सिखाओ।"

"मैं तुम्ह कुछ सिखा नही सकता। "जावेद ने थोडा ऊचे और कडे स्वर मे कहा, 'इन टयूबा म जिंदगी पैदा नही होती।

श्रीधर बाला, "तो जीवित रोबो लोगा पर परीक्षण करो। उन्ह चीर फाड के वह तरकीबें देखो, किस तरह उन्हे जोडा गया है, किन उसूला पर उनकी उत्पत्ति का फामूला निर्धारित किया गया है।'

"जिंदा रोबोओं पर परीक्षण?" जावेद बोला, 'यह तो कत्ल होगा।"

'हम तुम्हे इसकी अनुमति दे देंगे, केंद्रीय कमेटी तुम्हारी सेवा मे सैकडा हजारा जीवित नकली इसान भेंट कर देगी, तुम्हारे परीक्षण के लिए हम हर कीमत अदा करने को तैयार हैं।"

"नही नही!" जावेद न घबराकर कहा।

श्रीधर जिद करत हुए बाला, "जीवित रोबो को लो, उसे चीर फाड कर देखो, एक नही, एक हजार लो एक लाख लो।"

"नही, नही, यह कत्ल होगा।' जावेद न कहा, "मेरे हाथ की कपकपी

देखो, उस खयाल ही से मुझे घिन आती है। किसी का क्त्ल करना "

"रोबो की उत्पत्ति का उद्देश्य इतना महान है," पहला रोबो बोला, "कि उसके लिए एक लाख रोबो का कत्ल भी उचित है। अगर तुम हमे स्वर्गीय घोष का फामूला दे सको, तो कुछ भी उचित है।"

'जावेद अपनी कुर्सी स उठा और श्रीधर की छाती ठोक्कर बोला, "क्या तुम अपने शरीर की चीर फाड के लिए तैयार हो ?"

श्रीधर घबराकर एक कदम पीछे हट गया। कुछ क्षणो की शाति के बाद बोला, "मुझे ही क्यो चुना जा रहा है ? चुनाव मेरा ही क्यो ?"

"ओह, डर गए।" जावेद के चेहरे पर एक उदास सी मुस्कराहट आई। 'इसी तरह दूसरे रोबोआ के लिए सोचो।"

एकाएक श्रीधर जोश से बोला, ' मैं तैयार हू।"

' नही, तुम तैयार नही हो।"

"मैं बिलकुल तैयार हू।"

"तो सामने की टेबल—उस टेबल पर जिसपर मरा सोने का बिस्तर रखा है, उसपर कपडे उतार के लेट जाओ।"

श्रीधर ने अपने सारे कपडे उतार दिए और टबल पर लेट गया।

जावेद घबराकर बोला, "नही, नही, मुझसे यह क्त्ल न होगा। मुझे एक हफ्ते की मोहलत और दो, सिफ एक हफ्त की शायद यह टेस्ट ट्यूब "

जावेद ने एक टेस्ट-ट्यूब की ओर सकेत किया।

"बहुत अच्छा," पहला रोबो बोला, "तुम्हे एक सप्ताह की मोहलत दी जाती है। उसके बाद तुम जीवित रोबो लोगो पर अपने परीक्षण प्रारम्भ करोगे।"

श्रीधर बिस्तर से उठकर कपड पहनने लगा। दूसरे केंद्रीय कमेटी के सदस्य भी खामोशी से बाहर निकल गए।

जावेद अपनी कुर्सी पर गिर पड़ा।

उसकी कनपटियों के बाल सफेद हो चुके थे। उसने मेज़ पर अपनी कुहनियां टिका दीं, और दोनों हाथों में अपने सिर को लेकर बोला, "ज़िंदगी! ज़िंदगी!!"

वह बहुत थका हुआ दिखाई दे रहा था। हौले-हौले उसकी आखें अपने आप बंद होने लगीं। कुछ मिनटों में वह अपनी कुर्सी पर बैठा-बैठा मेज़ पर सिर रखकर सो गया और अपने सपनों में वह अपनी शुरुआत को लौट गया जब पहले इंसान और पहली औरत का जन्म हुआ था।

## १५

दरवाज़ा खुला था। कुर्सी पर जावेद सो रहा था। टोबो लड़की, जिसका नाम सीमा था, भीतर घुस आई और बड़ी अदा से बोली

"प्रोफेसर, मुझे बहुत सख्त भूख लगी है।"

मगर जावेद गहरी नींद सो रहा था। आज वह सीमा की आवाज़ पर भी नहीं जागा। सीमा पीछे से आते आते फिर कहने लगी, "प्रोफेसर मुझे कभी ज़ोर की भूख नहीं लगती, लेकिन आज मैं जब कमरे के पास से गुज़री तो एक अजीब-सी सुगंध मेरे नथनों में रच गई। उसी वक्त से सख्त भूख लग रही है।"

जब वह जावेद के बिल्कुल करीब आ गई, तो उसने देखा कि प्रोफेसर गहरी नींद सो रहा है। बेचारा प्रोफेसर! सीमा ने सोचा, 'दिन रात परीक्षण करता रहता है, थक गया होगा, उसे न जगा, यह ठीक न होगा,

उसे सानि दू मगर,' उसने सोचा, 'लेकिन मुझे भूख तो लगी है। जाने कैसी सुगध आती थी, उस बद कमरे म से '

कुछ सोचकर सीमा ने धीरे से प्रोफेसर के कोट की जेब म हाथ डालकर उसके फ्लैट की चाबियो का गुच्छा निकाल लिया, और दबे पाव वापस चली गई। उसके नथना म अभी तक वही सुगध समाई हुई थी।

वह इठलाकर चलत-चलते उस बद कमरे के सामने रुकी। सुगध का एक झोका-सा आया। अजीब सी सुगध थी, और ऐसी सुगध किसी फूल म न थी।

मगर मुझे कितन जार की भूख लग रही है। पहले कुछ खा लू, फिर इधर आकर इस कमरे को खोलूगी, जिस पर प्रोफेसर सदा ताला रखता है " सीमा ने सोचा।

वह कुछ कदम किचन की ओर गई। फिर कुछ सोचकर वापस चली आई। अभी तो प्रोफेसर सो रहा है इसलिए अभी देख लेना सभव होगा। सभव है जब तक मैं खाना खत्म करू, प्रोफेसर जाग जाए और मैं इस सुगध के रहस्य से परिचित न हो सकू।'

इसलिए सीमा न चाबियो के गुच्छे को अपनी एक अगुली म लटका कर बडी अदा से घुमाया। प्रोफेसर न उसे ऐसा सुदर बनाया था कि वह हर कोण से असली सीमा ही लगती थी। वह अपने-आप मुस्कराई। बद दरवाजे के सामने आकर उसने कई चाबिया ताले मे घुमाइ। अत मे एक चाबी से ताला खुल गया।

फिर सीमा ठिठकी—भीतर जाऊ कि न जाऊ ?

प्रोफेसर ने मना कर रखा था।

जाने भीतर क्या हो क्या न हो।

'मगर ऐसी अच्छी सुगध किसी बुरी चीज से नही आ सकती।' सीमा ने सोचा, 'मुझे जरूर देख लेना चाहिए।'

धीरे से उसने दरवाजे का एक पट धीरे धीरे खोला। फिर धीरे से भीतर दाखिल हुई। धीरे से उसने पट भीतर से बद कर लिया।

कमरे का एक भाग बेडरूम की हालत मे रखा था। एक बढिया बिस्तर, पास ही तिपाई पर गुलाबी शेड का एक लप, सुराही म फूल, फश पर गलीचा।

कमरे का दूसरा भाग एक छोटी-सी लेबोरेटरी के रूप म इस्तमाल होता था। कुछ छोटी-छोटी मशीने, कुछ सिरीजे, बोतलो मे कुछ दवाए और प्रोफेसर की कुर्सी।

और दानो भागो के मध्य एक पतले लैस का पर्दा खिचा हुआ था। सीमा बेडरूम की ओर चली गई। उसने धीरे से पतले लैस का पर्दा हटा दिया।

बिस्तर पर अर्जुन सो रहा था।

अर्जुन को देखकर वह धक से रह गई। ऐसा सुदर रोबो उसने जिंदगी मे न देखा था। कभी कभी जब वह आईना देखती थी, तो उसे सुदरता का एहसास होता था। मगर यह एहसास उससे कुछ भिन्न था, क्योकि यह सोता हुआ व्यक्ति स्वय भिन्न था शानदार चेहरा, चौडा सीना, पतली कमर, मजबूत हाथ, हाथो की मछलिया उभरी हुई चौडे सीने पर बाल, आखे बद सी हुइ, गहरी नीद म डूबी हुइ।

वह और पास चली गई सुगध सुगध

सीमा ने फूलदान के फूलो को सूघा। उसका खयाल था शायद सुगध उन्ही फूलो से आ रही है।

मगर नही वह सुगध ही और थी और सोए हुए रोबो के शरीर से आ रही थी।

सीमा का जी चाहा कि वह सोए हुए रोबो के सीने पर सिर रख दे। उसे खयाल आया, ऐसा मुझे क्यो महसूस हो रहा है? आज तक किसी रोबो को देखकर मुझे यह खयाल नहीं आया। सभी रोबो एक से होते है न वे मुस्कराते हैं, न हसते हैं, न उनके पास सुदरता का कोई बोध होता है।

बिस्तर के करीब दीवार से लगा हुआ एक विशाल दपण दीवार से जुडा हुआ चला गया था, जिसमे वह अपने आपको देख सकती थी, और सोए हुए रोबो को भी।

सुगध सुगध अजीब-सी सुगध उसके बदन से निकल रही है। दो-तीन बार उसने लबी-लबी सासें ली, और सोए हुए रोबो के बदन की सुगध ने सीमा को निढाल-सा कर दिया। फिर उसका जी चाहा, वह अपने आपको उसके सीने पर गिरा दे, उसके सीने से लगकर बदन की सारी सुगध को एक रेशमी स्पश की भाति अपने इद गिद लपेट ले।

बडी मुश्किल से उसने अपने आपको रोका, सिर से पाव तक उस सुदरता और शक्ति म ढले व्यक्ति को देखा।

एकाएक उसका जी चाहा, वह उसे जगा दे, उससे बातें करे। वह धीरे धीरे एक अजीब अदा से चलती हुई, इठलाती हुई, एक हाथ नीचे, दूसरा हाथ ऊचा किए हुए निचले होठ को दातो से दबाए दबे पाव आगे बढी और झुककर सोए हुए व्यक्ति के पाव म गुदगुदी करने लगी। उसकी समझ मे खुद ही नही आ रहा था कि उसने पाव मे गुदगुदी करने का ख्याल उसे क्यो आया? वह उसका कधा पकडकर झिझोडकर भी जगा सकती थी।

एक अजीब शरीर मुस्कराहट से उसका चेहरा रोशन हो गया। जाने क्यो आप ही आप उसके दिल मे किसीको गुदगुदी करने का विचार क्या आया? इसी समय क्या आया? इससे पहले क्यो नहीं आया? वह जो हमेशा शून्य मे किसीको घूरती या ढूढती रहती थी, इस समय एक निहा

यत शरीर लडकी की तरह दिखाई दे रही थी।

साए हुए व्यक्ति के शरीर म एक झुरझुरी-सी पैदा हुइ, बहुत ही सूक्ष्म। सोए हुए व्यक्ति के चेहरे पर एक सूक्ष्म मुस्कान-सी दिखाई दी। जैसे कोई स्वप्न मे मुस्करा दे। मगर वह सोया रहा।

सीमा के चेहरे की शरीर मुस्कराहट गुम हो गई। उसने गुदगुदी छोडकर उसके पाव का हिलाना शुरू किया। धीरे धीरे वह उसके पाव दबाने लगी। जाने उसका जी क्यो चाह रहा था कि वह उसके पाव दबाए ? वह कौन होता है उसका ? कोई भी नही, कोई रोबो किसी दूसरे का कोई नही होता।

सीमा पाव की ओर से पलट आई। अब वह उसके सिर के पास खडी थी, और सोए हुए व्यक्ति के चेहरे को देख रही थी, जो इस समय मुस्करा रहा था, जैसे कोई भोला बच्चा स्वप्न म मुस्करा दे। होठ जरा-जरा-सा खुलते थे।

इन अधखुले होठो को दखकर अजीब-सी फुरेरिया सीमा के दिल और दिमाग में फूटने लगी। एकदम वह घूम गई। फूलदान के पास पहुची। फूलदान से एक सफेद फूल तोडकर उसने अपने बालो मे लगा लिया। सामने दीवार पर लगे विशाल दर्पण म वह अर्जुन को देख रही थी सोता हुआ और अपने-आपको फूल लगाते हुए।

बालो म फूल लगाकर उसने अपने-आपको सराहा। फिर वह घुटनो के बल अर्जुन के चेहरे के करीब झुक गइ।

सहसा किसी अदृश्य शक्ति ने, किसी अनबूझे-अनजाने एहसास ने उसे विवश कर दिया कि वह सोए हुए व्यक्ति के होठों पर अपने होठ रख दे।

उसकी आखे अपने-आप बद होती चली गईं। उसके होठ उन होंठों मे पिघलते चले गए। सारे शरीर म मीठी-मीठी चिनगारियां-सी दौड रही थी।

एकाएक सोते हुए व्यक्ति ने आखें खोल दी।

सीमा लजाकर, शरमाकर, घबराकर दूर हट गई।

वह सोया हुआ व्यक्ति उठ बठा और खुमार भरी आखा से उसे देखत हुए बोला, "तुम कौन हो ?"

"मैं सीमा हू।"

"तुम सीमा हो ता मेरा नाम अजुन है।"

"तुम्हें अपना नाम कसे मालूम हुआ ? ' सीमा न उससे पूछा।

'मुझे मालूम नही, मगर मेरे दिल म कोई मुझसे कहता है कि मेरा नाम अजुन है।"

' अजुन अर्जुन " सीमा ने सिसकी-सी ली।

अर्जुन न अपनी दोना बाह फैला दी। बोला, "मेरे पास आ जाओ। दूर क्यो चली गई हो ? जब तुम दूर जाती हो तो मेरे दिल को कुछ होने लगता है।"

"क्या ?"

"कुछ नही बता सकता।" सोचकर उसके त्योरी उसके चौडे रोशन मत्थे पर उभरी। उस समय अर्जुन सीमा को बहुत अच्छा लगा।

वह उसकी बाहो मे चली गई, सिमट गई समा गई। उसके सीने पर सिर रखन हुए एसा महसूस हुआ सीमा को जैसे यह सीना केवल उसके लिए बना था। उसकी आखा म अजीब अजीब स्वप्न झिलमिलाने लगे। फिर सवारी हुई अलकों की पक्ति सुर्ख होते हुए गालो पर गिर गई।

अर्जुन की बाहो का घेरा उसके गिर्द मजबूत होता गया।

## १६

जावद कुर्सी पर सोया हुआ था। वे दोनों उसकी कुर्सी के पास खड़े हुए थे सीमा और अजुन हाथ में हाथ दिए हुए।

"सो रहा है," सीमा ने धीरे से कहा।

एसा लगता है जैसे मैं पहले भी इस कमरे में लाया जा चुका हू, जैसे मैं इस प्रोफेसर के हाथों से परिचित हू। अजुन के चेहरे पर किसी सोच की लकीर उभरी, "यह देखो यह देखो ' अजुन ने मेज़ पर बहुत-सी विभिन्न रंगों की टेस्ट टयूबों को देखकर कहा।

' इन टयूबों को लेकर यह इसान क्या करता रहता है ?" सीमा ने अजुन से पूछा।

"यह परीक्षण करता है न न उन टयूबों को मत छुओ।'

"मैंने उसे इस यन्त्र में झाकते हुए देखा है।"

'यह दूरबीन है।" अजुन ने अपनी जानकारी जताई।

'तुम्हें कैसे मालूम है ?" सीमा आश्चर्यचकित होकर बोली, 'तुम तो बद दरवाज़े के भीतर सो रहे थे।'

"मुझे कैसे मालूम है, यह नहीं जानता।" अजुन ने जवाब दिया। अर्जुन ने आगे बढ़कर मेज़ पर पड़ी हुई साइंस की पुस्तक के पन्ने उलटे। धीरे से बोला "मैं इस पुस्तक को भी जानता हू जैसे कहीं देखा है, इस इंसान को पढ़ते हुए। मगर बहुत-सी चीज़ें मेरी समझ में नहीं आईं।'

"वह देखो "सीमा ने बाहर संकेत करते हुए कहा, 'क्या है ?"

' सूरज समदर से उभर रहा है।

' मैं जानता हू यह सबसे अच्छी और ज़रूरी बात है। समदर में सूरज निकल रहा है। सूरज ज़िंदगी का राज़ है। "

"किसी राज़ को जानने की कोशिश न करो, अजुन, उससे हमें क्या

मिलेगा ! इधर खिडकी मे आओ, और देखो।"

"क्या ?"

"देखो कि उभरता हुआ सूरज कितना तजवान है किस कदर सुनहला ! पहली किरणा से कैसी सुगध आती है, जैसे तुम्हारे बदन से आती है।"

"तुम्हारे बदन से भी आती है, मगर वह चाद की किरणा की है।"

'मुझे आज अजीब-अजीब सा लग रहा है सब कुछ अजीब और रहस्यमय। जैसे मैं अब तक सपन म थी। मेरा सारा बदन दुखता है, मेरे दिल मे दद सा होता है। अजुन कही मैं मर तो नही रही हू ?"

"जब तुम मरी वाहा म थी, मुझे ऐसा लगा, मैं भी मर जाऊगा, जैसे मेरा सारा शरीर तुम्हारे लिए रो रहा हो। मगर मैं तो सो रहा था, तुम कहती हो, पर मैंने स्वप्ना म भी तुमको देखा था, और तुमसे बातें की थी।"

"नीद मे ?"

"हा। वह कोई अजीब-सी भाषा थी, जिसम हम दोनो बातें कर रहे थे।'

"क्या बातें थीं वह ?"

"कौन जान, मगर उस समय जा तुमने कहा, जो मैंने कहा, जो तुमने सुना जो मैंने सुना उससे अधिक सुदर कभी कुछ न था। वह सपनो की भाषा थी, और जब तुमन अपन होठा से मेरे होठो का छू लिया, तो मैं उस समय मर सकता था, मगर मैं जी गया, और मैंने तुम्हे छू लिया। तुम्हारे छूने का एहसास इस दुनिया के हर एहसास से भिन्न है।"

"इस द्वीप म विना उद्देश्य आवारा घूमते घूमते मैंने भी एक जगह ढूढी है। बडी अजीब-सी जगह है, चारो ओर ऊचे ऊचे पेडो से घिरी हुई, पेड और सरकडे, और एक छोटा सा तालाब, जहा मैंने अपनी औरत

देखी थी, और उस तालाब के किनारे एक कॉटेज का प्रतिबिंब काप रहा रहा था, फिर "

"वह चुप हो गई।

"फिर क्या हुआ ?" अर्जुन ने सास रोककर पूछा।

'फिर दो प्यारे से कुत्ते वही से दौडते हुए मेरे पास आ गए और वह मेरे पाव चाटने लगे, और मुझे ऐसा लगा जसे उस कॉटेज म कभी इसान रहते होगे व इसान जिनसे हमारा काइ रिश्ता नही है शायद। लेकिन उन कुत्तो को मरे पाव को चाटना बडा अजीब और बुरा-सा न लगा। मैं उनस खेलन लगी, और वह मेरे हाथ चाटन लगे। दो प्यारे से नन्हे-नन्हे से कुत्ते, उनके शरीरे के बाल लवे, घने मुलायम और रेशमी थे। आओ, अजुन वहा चलें। वह कॉटेज मेरी ओर एस दखती थी, जस हम दोनो की प्रतीक्षा कर रही है। शायद वहा कुछ होगा, कुछ होनेवाला है।'

"क्या ?"

"मैं तो नही समझ सकती अर्जुन, मैं कौन हू ? मेरी साथकता क्या है ? मैं किसलिए हू ?"

यह तो मैं भी नही जानता। इतना जानता हू कि तुम इस दुनिया मे सबसे सुदर हो, और मैं सबस शक्तिशाली हू, और मेरा नाम अर्जुन है।"

क्या सचमुच मैं बहुत सुदर हू ? क हूगी लेकिन सुदरता किस काम की होती है ? सुदर तो तुम भी हो लकिन भिन्न प्रकार के। देखो तो तुम्हारा सिर मुझस बडा है उसके बाल भी छाटे हैं मगर कधे कितने चौडे है और होठ और तुम्हारे बाल कस उलझ गए ह। लाओ इन्हें ठीक कर दू।"

सीमा अर्जुन के बालो से खेलने लगी। अजुन क सारे शरीर मे फुरेरिया दौडने लगी।

'क्या है अर्जुन ?"

"जब तुम मुझे छूती हो तो मेरे दिल की धडकनें अनायास बढ जाती हैं। यह हमें क्या हो रहा है ? सीमा इन बातों का क्या मतलब है ?"

"छोडो भी "सीमा जोर से हस पडी, "हम किसी मतलब से क्या लेना, बस यही काफी है, कि तुम हो मैं हू " वह फिर उसका हाथ झुलाते हुए ज़ोर से हसी।

'ऐं ? इसान की हसी। कहा से आई ?" उसने पलटकर देखा।

उसके सामने अजुन और सीमा खडे थे।

"तो तुम जाग गए ?" प्रोफेसर जावेद ने पूछा, 'किसने तुम्हे जगा दिया ?"

"मैंने " सीमा ने कुछ शरमाकर कहा, उसने लजाकर अर्जुन का हाथ छोड दिया।

"अरे ?" जावेद आश्चय से बोला, "तुम्हे शम आ रही है, लाज से तुम्हारा चेहरा लाल हो रहा है। ऐसा तो किसी रोबो का नहीं होता। मेरे पास आओ।"

अजुन ने सीमा को पीछे धकेलकर फौरन आगे बढकर कहा, "जनाब, उसे पिछली बातो की याद मत दिलाइए, वह डर जाएगी, वह डर रही है।"

'तो क्या तुम उसकी रक्षा के लिए आगे आ रहे हो ?" प्रोफेसर जावेद ने विस्मय से कहा "यह क्या हो रहा है शम, लाज, डर, किसीकी रक्षा का खयाल। मेरा खयाल है, मुझे तुमपर परीक्षण करना चाहिए। रोबो लडकी, चलो चीर-फाड वाले कमरे मे।"

"क्या ?" अजुन ने पूछा।

"अगर तुम गए तो मैं खुदकुशी कर लूगी।"

'ठहरो।" जावेद बोला, "यह मैं क्या सुन रहा हू। भूले विसरे शब्द फिर से मेरे कानों म गूज रहे ह कुर्बानी त्याग प्रेम यह तो हमारी भावनाए थी कभी। सुनो, बच्चो " जावेद ने सिर झुका लिया और कुछ देर सोचता रहा। फिर सिर उठा के कहने लगा, "क्या तुमने रहन की जगह देख ली है ?"

"हा" सीमा चाव भरे स्वर म बोली, "एक छोटी-सी कॉटेज है, तालाब के किनारे वहा दो कुत्ते है, और तालाब म बत्तखें तैर रही हैं, और चारो ओर नारियल के घने झुड हैं और ऊचे ऊचे सरकडे।"

"और कोई रोबो वह जगह नही जानता ?

'नही।"

"तो तुम दोना इसी वक्त चले जाओ। और याद रखो कभी इस फक्टरी की तरफ भी मत आना।"

अजुन ने सीमा का हाथ पकड लिया, और खुशी से बोला, "सीमा, आओ वही चले धन्यवाद प्रोफेसर धन्यवाद।"

वे दोनो जा रहे थे। एक लबी गैलरी से निकल रहे थे। प्रोफेसर की आखें भर आई थी। सहसा श्रीधर अदर आकर पूछने लगा, "वे दोनो कौन थे ?"

"दूसरा पुरुष और दूसरी नारी।"

•••